**R. K. Advertising**
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

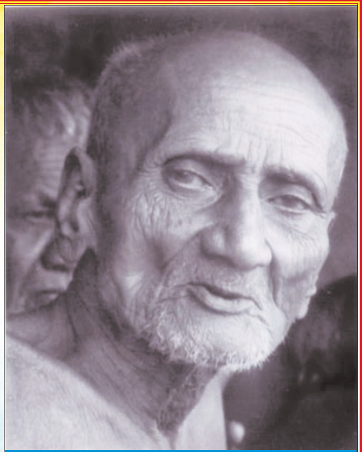
बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी विशेषांक
1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

# जैन गज़ट

www.Jaingazette.com
वर्ष 31 अंक 25 कुल पृष्ठ 20 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 21 अप्रैल 2025, वीर नि. संवत् 2551
Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha   jaingazette2@gmail.com

# तप, त्याग और तेजस्विता के प्रतीक आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

इस कलियुग में जब भोग, विलास और भौतिक आकर्षणों की चकाचौंध में मानवता की दिशा भटक रही हो, ऐसे समय में कुछ विरले संत ही होते हैं जो समाज को प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। इन संतों का जीवन न केवल तप और त्याग का प्रतीक होता है, बल्कि उनके विचार, वाणी और व्यवहार भी समाज को एक नई दिशा देने में सक्षम होते हैं। आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज दिगंबर जैन परंपरा के ऐसे ही एक दिव्य पुरुष हैं, जिनकी साधना, संयम और सेवा भावना ने उन्हें साधुओं की श्रृंखला में एक अत्यंत विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। उनका जीवन आत्म कल्याण के साथ-साथ लोकमंगल के लिए भी प्रेरणास्त्रोत बन गया है। उनके प्रवचनों में जहाँ एक ओर आध्यात्मिक गहराई होती है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक चेतना का स्पर्श भी देखने को मिलता है। वे न केवल धर्म के मर्म को समझते हैं, बल्कि उसे आधुनिक युग के संदर्भ में प्रस्तुत करने की अद्वितीय क्षमता भी रखते हैं। आचार्य श्री का जीवन, विचार और कार्य आज के समाज के लिए एक जीवंत उदाहरण है कि कैसे त्याग, तपस्या और अहिंसा से युक्त जीवन जीकर भी विश्व को प्रभावित किया जा सकता है।

**1. प्रारंभिक जीवन एवं दीक्षा:** आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का जन्म भारत के मध्य प्रदेश राज्य के एक संस्कारित और धार्मिक वातावरण वाले परिवार में हुआ।

जन्म से ही वे तेजस्वी, संयमी और धर्म के प्रति गहरी आस्था रखने वाले थे। उनके बचपन की प्रवृत्तियाँ सामान्य बच्चों से भिन्न थीं - वे एकांतप्रिय, शांत स्वभाव के और धार्मिक विषयों में अत्यधिक रुचि रखने वाले थे। उनके मन में प्रारंभ से ही वैराग्य की भावना थी।

सांसारिक जीवन की क्षणिकता और आत्मा की शुद्धि की चाह ने उन्हें ज्ञान और मोक्ष के मार्ग की ओर प्रेरित किया। उन्होंने बहुत ही कम आयु में संसार के बंधनों से विरक्त होकर दीक्षा का मार्ग चुना।

आचार्य श्री की दीक्षा एक विशेष मोड़ थी वह न केवल उनका व्यक्तिगत निर्णय था, बल्कि उस समय समाज के लिए एक दिव्य संकेत भी था कि आज भी आत्मज्ञान के पथ पर चलने वाले तपस्वी जन्म ले रहे हैं। दीक्षा के बाद उन्होंने मुनि धर्म का सम्पूर्ण पालन करते हुए एक आदर्श तपस्वी का जीवन जिया।

उन्होंने अनेक वर्षों तक कठोर साधना, उपवास, विहार और आत्मचिंतन किया। गुरु परंपरा का सम्मान करते हुए उन्होंने अपने गुरुओं से ज्ञान, विनय और संयम के गुण आत्मसात किए और शीघ्र ही वे संघ के एक तेजस्वी और सम्मानित साधु के रूप में प्रतिष्ठित हो गए।

शेष पृष्ठ 15 पर............

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
वर्ष 2025 मे 7 देशो की सैर
20 April, 18 May, 1 June, 15 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT
WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

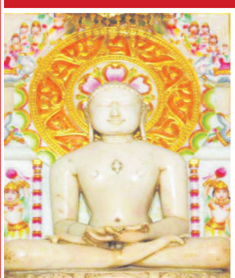
875 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
शांतिधारा : 7:30 AM
संध्या आरती - 7:00 PM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9784857991
इस अतिशय क्षेत्र में किसी भी तरह की बोली, चंदा, डाक या राशि का आग्रह वर्जित है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
अन्य जानकारी हेतु स्थानीय संपर्क सूत्र
मनीष गंगवाल-सह अध्यक्ष
मोबाइल नंबर 95880 20330

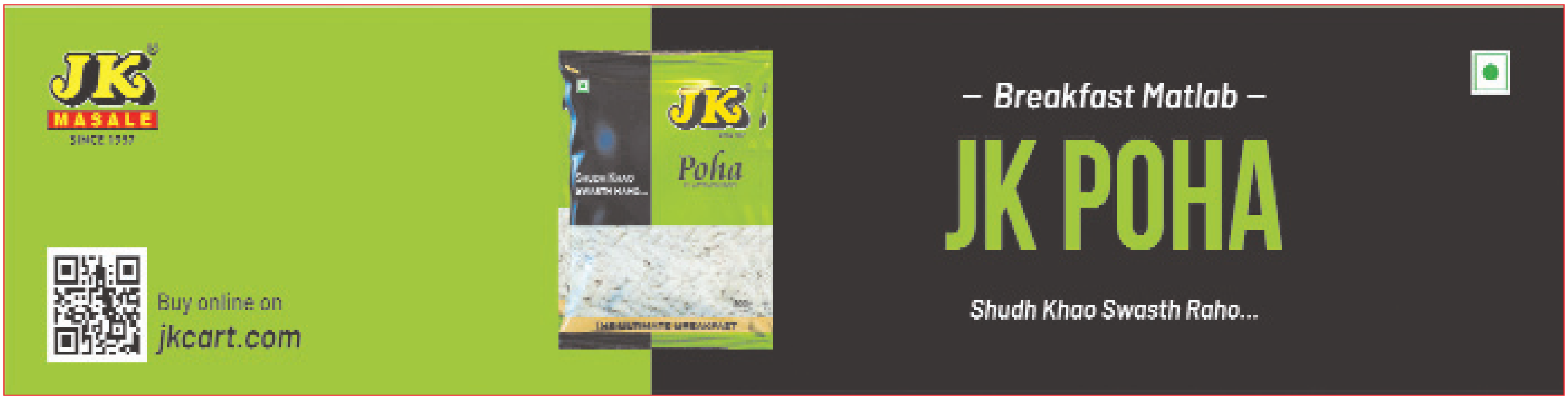

# चर्या शिरोमणी आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

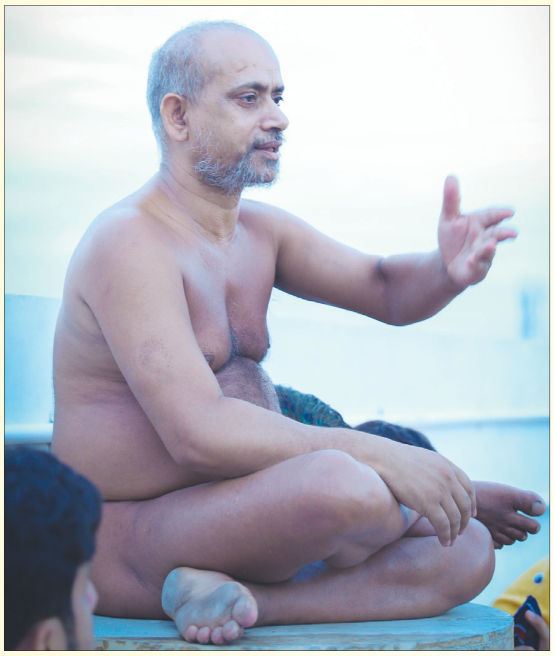

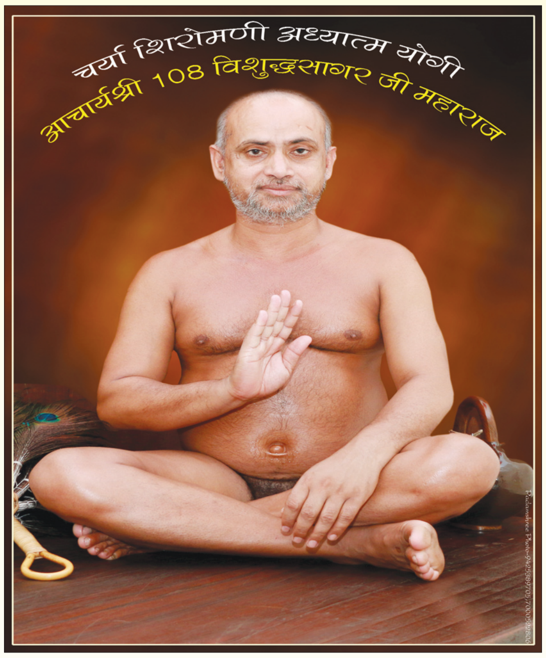

प. पू. आचार्य श्री विशुद्ध सागरजी महाराज से मेरा परिचय 2008-09 में हुआ जब डी. एन. जैन बोर्डिंग मंदिर जबलपुर में उनकी ग्रीष्मकालीन वाचना एवं चातुर्मास दोनों हुए। श्री प्रमोद जी बाहुबली के साथ संध्या के समय आचार्य श्री के कक्ष में मिला - प्रमोद जी ने मेरा परिचय कराया (मैं वहाँ सहायक आयुक्त, वाणिज्य कर म. प्र. शासन के पद पर पदस्थ था) आचार्य श्री ने अत्यंत स्नेह पूर्वक मेरे सर पर हाथ रखा एवं उंगलियों से सहलाया - बस यही वह क्षण था मुझे रोमांचित करने वाला व मैं एक ही क्षण में उनके प्रति समर्पित हो गया, कोई जादू सा हुआ एवं मेरे जीवन व्यवहार का कायाकल्प हो गया उसके बाद तो प्रतिदिन मैं उनके दोनो प्रवचनों एवं क्लास का नियमित श्रोता हो गया।

जब भी किसी के जीवन परिचय या व्यक्ति के संबंध में लिखने की बात होती है तो हम सामान्यतः उनके परिवार की जानकारी - विहार - ग्रंथ प्रकाशन की जानकारी देते हैं सभी आलेखों में यही बात रिपीट (पुनरावृत्ति) होती है। नई बातें आती ही नहीं हैं।

मैं आचार्य श्री के उस पक्ष को उजागर कर रहा हूँ जो उनकी चारित्र व कर्म की वास्तविकता है।

अभी तक हमने श्रमणों के जो प्रवचन सुने हैं या सुनते हैं उसमें से अधिकांश सास बहु की कहानियाँ या परिवार पर आधारित होते हैं। इन सब विषयों पर बोलना आसान व प्रभावी होता है या प्रथमानुयोग के हजारों उदाहरण जो शास्त्रों में भरे पड़े हैं, ही विषय होता रहा है।

यह प्रथम अवसर है जब परमागम या सिद्धान्त ग्रंथों पर आधारित प्रवचन हों।

आचार्य श्री का प्रत्येक प्रवचन सिद्धांत ग्रंथों पर आधारित होता है एवं आत्मा के कल्याण के लिये होता है एवं प्रयास यह भी होता है कि ग्रंथ वह हो जो अभी प्रकाशित प्रचारित प्रचलन में नहीं है जैसे ''ज्ञानांकुश स्त्रोतम'' इस पर 'सद्ज्ञान देशना' के नाम से 2 ग्रंथ प्रकाशित हुए। आचार्य श्री के श्रीमुख से निश्रुत प्रत्येक शब्द ग्रंथ का हिस्सा बनता है जो एक नवीन प्रयोग है।

आचार्य श्री बोली - प्रोजेक्ट स्थायी निर्माण आदि के लिये कभी प्रोत्साहित नहीं करते हैं। आचार्य श्री का स्वयं का कोई प्रोजेक्ट तीर्थ, मड़िया नहीं है। यहां तक कि चार्तुमास कलश या अन्य शुभ कार्यों की बोलियों का प्रसंग होता है तब भी आचार्य श्री मंच पर ही आंखें मून्द कर अपने स्वाध्याय या योग में लीन हो जाते हैं ऐसे निस्पृह संत पंचम काल में दुर्लभ हैं। आचार्य श्री की निस्पृही वृत्ति को प्रणाम किये बिना मन नहीं मानता है।

चातुर्मास की राशि का बंटवारा नहीं होता है। आजकल जो चातुर्मास हो रहे हैं एवं होते हैं उसमें आयोजकों को व श्रमणों का पूर्व ही तय हो जाता है कि चातुर्मास के दौरान प्राप्त राशि का उपयोग व बंटवारा किस प्रकार होगा। आचार्य श्री के प्रकरण में वे चातुर्मास कमेटी से न तो हिसाब लेते हैं ना जानकारी चाहते हैं। चातुर्मास कमेटी का सदस्य होने के नाते मैं दावे से यह कह सकता हूँ कि आचार्य श्री पिच्छी कमण्डल लेकर आये व लेकर चले गये कमेटी घाटे में रही या मुनाफे में यह तक नहीं पूछा।

स्वयं का कोई वाहन कर्मचारी, फोटो ग्राफर, विडियो ग्राफर नहीं - आचार्य श्री के संघ में कोई वाहन स्वयं का या संघ के नाम का नहीं चलता है। पूरे विहार की व्यवस्था संघपति ही करता है। संघ का कोई कर्मचारी, वाहन आदि नहीं होता है यहां तक कि प्रवचनों की विडियोग्राफी में स्वतंत्र लोग अपने स्वयं का व्यय या नफा नुकसान के आधार पर करते हैं। इसका भुगतान संघ या कमेटी भी नहीं करती है। इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रिन्ट मिडिया में प्रवचनों समाचारों के लिये कोई आग्रह या खर्च नहीं करना पड़ता है। मांगलिक क्रियायें चित्र अनावरण, द्वीप प्रज्वलन, शास्त्र भेंट, पाद प्रक्षालन के लिये कोई बोली नहीं, सामान्यतः बाहर से आये श्रावकों को यह पुण्य लाभ मिलता है। ग्रन्थ प्रकाशन आचार्य श्री के प्रवचनों पर आधारित 150 से अधिक ग्रंथ देशना के नाम पर प्रकाशित हैं परन्तु यह आश्चर्य है कि आचार्य श्री स्वयं या संघस्थ साधु किसी को इस हेतु आग्रह नहीं करते हैं एवं मेरा स्वयं का अनुभव है कि अनेकों निवेदन पर कभी कभी पुण्य का उदय हो तो आचार्य श्री ग्रंथ प्रकाशित करवाने का आशीर्वाद देते हैं। सभी ग्रंथ स्वाध्याय प्रेमियों के लिये निःशुल्क उपलब्ध हैं।

श्रमण संस्कृति सेवा समिति इन्दौर पूरे वर्ष सभी श्रावकों को व मंदिरों को आवश्यकता पर ग्रंथ उपलब्ध कराती रहती है।

सामान्यतः श्रावकगण चौका लगाने पर उत्सुक्तावश बोल देते हैं चौका लगाया है आचार्य श्री ऐसे चौके में 3 दिन जाते ही नहीं जिसने बोलकर चौका लगाया। चौका में चन्दौवा व कुएं का पानी आज भी अनिवार्य है एवं आहार के पश्चात कोई कमेटी राशि उगाने या मांगने नहीं जा सकती है। शिथिलाचार न तो स्वयं करते हैं न ही संघ में होता है। यदि किसी जगह जरा भी शिथिलता दिखती है तो आचार्य श्री प्रवचन में ही मंच से ही श्रावक व श्रमण दोनों को आगाह कर देते हैं।

आचार्य श्री के श्रीमुख से श्रावकों को अपना नाम सुनना बहुत अच्छा लगता है यह सौभाग्य सभी को मिलता है।

चतुर्थकालीन चर्या के धारी ऐसे गुरूवर को सादर नमोस्तु। आप हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहें यही कामना।

**- टी. के. वेद**
**केन्द्रीय राष्ट्रीय उपाध्यक्ष**
**एवं ट्रस्टी- महासभा**
**वरिष्ठ केन्द्रीय**
**उपाध्यक्ष- तीर्थ संरक्षिणी महासभा**
**इन्दौर**
**मो. नं. 9425154777**

## नमनकर्ता/पुण्यार्जक

टी. के. वेद-मंजु वेद

प्रियंका, भव, हितेश जैन

विशेष, अदिति, आरव, आयरा वेद

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला
RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com
SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

# परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का पट्टाचार्य महोत्सव कार्यक्रम 27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक

**टी. के. वेद, इंदौर**

प. पू. श्री 108 आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर) की परम्परा में आचार्य 108 महावीरकीर्ति जी महाराज, प.पू. आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज, प.पू. सन्मति सागर जी महाराज एवं प.पू. आचार्य 108 श्री विराग सागर जी महाराज हुए। 3 जून 2024 को जालना महाराष्ट्र में पूर्ण चेतन्यता की अवस्था में प. पू. आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज ने अपने प्रिय शिष्य प. पू. चर्या शिरोमणी आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के लिये यह कह गये कि ''हम चाहते हैं कि विशद्ध सागरजी महाराज अपनी निःस्वार्थ भावना से, साधुओं में बिना राग द्वेष के प्रेम, वात्सल्य के साथ सभी का यथोचित ध्यान रखें, चर्या सभी की श्रेष्ठ हो।''

बिना किसी जल्दबाजी के यह कार्यक्रम लगभग एक वर्ष बाद आयोजित हो रहा है। इंदौर एवं जैन समाज में एक वात्सल्य व सेवा का कीर्तिमान बनाने वाले श्रेष्ठ श्रावक दम्पत्ति ने स्वयं प्रेरणा से यह कार्यक्रम करने की भावना व्यक्त की जो आचार्य श्री ने सहज स्वीकार कर यह दायित्व श्री मनीष सपना जी गोधा गांधीनगर इंदौर को स्वीकृति प्रदान की एवं तब से ही लगातार तैयारी चल रही है तथा सर्वप्रथम श्री मनीष सपना गोधा दम्पत्ति ने पूरे भारतवर्ष के सभी प्रमुख आचार्यों एवं श्रमणों को लगभग 2 माह भ्रमण कर व्यक्तिगत रूप से निवेदन किया एवं इस निवेदन में भारत भर के सभी संघों को बिना किसी भेदभाव के आमंत्रित किया गया। इसकी जो आमंत्रण पत्रिका बनी वह भी अविस्मरणीय एवं संग्रहणीय हो गई। यह तय है कि भारतवर्ष के इतिहास में इतने श्रमण एवं साध्वियाँ इसके पूर्व कभी एकत्रित नहीं हुए। लगभग 450 पिच्छी की उपस्थिति संभावित है।

इस कार्यक्रम हेतु जो मुख्य पाण्डाल बना है जिसे देशना मण्डपम नाम दिया गया है पूर्णतः वातानुकूलित होगा एवं एक साथ 25,000 व्यक्तियों की बैठने की व्यवस्था होगी।

श्रावकों के लिये 4 वातानुकूलित भोजनशालाऐं होंगी जिसमें वी.आई.पी./सामान्य श्रावक/त्यागी वृत्ति, सोले के भोजन की प्रथम-प्रथक व्यवस्था होगी। श्रमणों एवं साध्वियों के लिये लगभग 400 चौके की व्यवस्था की गई है एवं इच्छुक श्रावकों को ये चौके दिये गये हैं। अशुद्धि में जो माताजी रहेंगी उनके लिये प्रथक व्यवस्था की गई है। लगभग 40 एकड़ का विशाल पार्किंग होगा एवं 200 एकड़ भूमि में यह पूर्ण कार्यक्रम होगा। महोत्सव स्थल पर भारत की सभी प्रमुख संस्थाओं (सामाजिक संस्थाओं) के वरिष्ठों को आमंत्रित किया गया है तथा उनके लिये पूर्ण व्यवस्था की गई है।

प. पू. आचार्यों को सौभाग्य सदन में, मुनिसंघ आचार्य विमल सागर भवन में, आर्यिका माताजी आचार्य विराग सागर भवन में व्यवस्था ठहरने की गई है। इसके अतिरिक्त आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के प्रकाशित ग्रंथों की एक भव्य प्रदर्शनी भी लगाई जा रही है। साथ ही बाल संस्कार शिविर, प्लेझोन, इमर्सिव झान, समवशरण की रचना आदि की भी व्यवस्था की गई है। प्रोजेक्शन मेपिंग के जरिये जैन आगम की सुन्दर कहानियाँ, आदिनाथ गाथा, महावीर गाथा, सम्राट खारवेल गाथा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आधुनिक लेजर शो, ड्रोन शो भी दिखाया जावेगा।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वस्ति मेहूल जैन की भजन संध्या का आयोजन किया गया है। इन कलाकारों की ख्याति इसलिये भी है कि भारत के विश्वस्तरीय कार्यक्रम में यह अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन जो विशिष्ट कार्यक्रम होंगे उनकी जानकारी इस प्रकार हैं:-

27.04.2025 -

- प्रातः 6 बजे महावीरबाग से सुमतिधाम मंगल प्रवेश
- प्रवचन प्रातः 9 बजे देशना मंडपम
- आहार चर्या प्रातः 10:30 बजे
- स्वाध्याय दोपहर 2:30 वात्सल्य मंडपम
- आचार्य भक्ति शाम 6:00 बजे आरती मंडपम
- आरती शाम 7:30 बजे आरती मंडपम
- प्रोजेक्सन मेपिंग 8 बजे आरती मण्डपम
- लेजर शो 8:30 बजे आरती मण्डपम
- सांस्कृतिक कार्यक्रम 9:00 बजे देशना मण्डपम
- प्रोजेक्शन मेपिंग - रात्रि 11:00 बजे आरती मण्डपम

प्रतिदिन यह कार्यक्रम होंगे।

विशेष कार्यक्रमः-

27.04.2025- पत्रकार सम्मेलन 28.04.202- प्रातः पूज्य गणाचार्य जी की पूजन 29.04.2025- पूज्य आचार्यों को शास्त्र, सिंहासन कमण्डल भेंट 30.04.2025- पट्टाचार्य महोत्सव मुख्य कार्यक्रम 01.05.2025- राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी 02.05.2025- पूज्य गणाचार्य जी की जन्म जयंति समारोह कार्यक्रम

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन दोपहर में एक - एक सामाजिक प्रमुख संस्थाओं का गुरूदेव के समक्ष चर्चा व प्रतिनिधियों की सभा कार्यक्रम के अन्तर्गत समस्त व्यवस्था चाय, नाश्ता, दोनों समय का भोजन निःशुल्क रहेगा। आमंत्रित व सीमित प्रमुख लोगों के लिये आवास व्यवस्था भी की गई है। प्रवेश रजिस्ट्रेशन के आधार पर ही होगा एवं अभी तक लगभग 80 हजार लोग अपने पंजीयन करवा चुके हैं। मोटे रूप से इस पांच दिवसीय कार्यक्रम में लगभग 15 लाख लोग सम्मिलित होंगे। केन्द्रिय स्तर पर माननीय प्रधानमंत्री जी, माननीय गृहमंत्री जी एवं अन्य विशिष्ठों को आमंत्रित किया गया है। राज्यस्तर पर सभी प्रमुख राजनेताओं को आमंत्रित किया गया है।

रजिस्ट्रेशन के लिए लिंक - https://sumatidham.com
Help Line No-: 8719995010, 11, 12 धर्म आधारित इस प्रकार का कार्यक्रम पिछले 1000 वर्षों में हुआ हो ऐसा इतिहास नहीं है तथा आगामी 1000 वर्षों में इतना बड़ा धार्मिक सम्मेलन इस स्तर का हो इसकी संभावना भी क्षीण प्रायः ही है। समस्त धार्मिकजनों को इस कार्यक्रम में उपस्थिति दर्ज कराना चाहिए एवं श्रावक श्रेष्ठी मनीष सपना जी गोधा का आतिथ्य स्वीकार करना चाहिये।

## जैन गजट को मिला आचार्य श्री वसुनंदी जी का मंगल आशीर्वाद

### आचार्य श्री को सह संपादक डॉ. सुनील जैन संचय ने जैन गजट के नवीन अंक की प्रति भेंट की

**अजमेर, राजस्थान।** राजस्थान के अजमेर शहर के जिनशासन तीर्थक्षेत्र में विराज परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज को रविवार 13 अप्रैल 2025 को साप्ताहिक 'जैन गजट' लखनऊ के नवीन अंक को पत्र के मानद सह संपादक डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर ने भेंट कर आशीर्वाद ग्रहण किया। इस मौके पर पूज्य मुनिश्री ने जैन गजट के लिए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। सुझाव और मार्गदर्शन दिए। उन्होंने कहा कि जैन गजट शताधिक वर्षों से प्रभावना का अच्छा कार्य कर रहा है। जैन गजट अच्छी खबरों और अच्छे लेखों के लिए जाना जाता है।

**सह संपादक ने जैन गजट के नए कलेवर के बारे में जानकारी दी।**

प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन् वंदन

सन्मतिसुनीलम
जिसे शीघ्र चिता पर जलना है वह चिंता करे और जिसे सुखी जीवन जीना है वह चिंतन करे
-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-
- श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति किशनगढ़ सम्भाग
- राजकुमार बड़जात्या (मरवा वाले)
- मानकचंद गंगवाल (कडेल वाले)
- महावीर महिला मण्डल, किशनगढ़
- श्रीमती सरिता पाटनी, किशनगढ़
- हेमन्द्र कुमार एडवोकेट, बांसवाड़ा
- महावीर प्रसाद अजमेरा जैन गजट वरिष्ठ संवाददाता, जोधपुर
- विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़ (मरवा वाले)
- कमल कुमार वैद (ज्वैलर्स)
- श्रीमती जया पाटनी पुराना हाउसिंग बोर्ड, किशनगढ़
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- श्रीमती ममता सोगानी, जयपुर

विज्ञापन प्रेषकः R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी किशनगढ़ केसरी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

## भगवान महावीर के सिद्धांतों पर आधारित जीवन मूल्य आज भी प्रासंगिक है: दिया कुमारी उप मुख्यमंत्री राजस्थान

## राजस्थान सरकार की यशस्वी उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने जैन ध्वज दिखाकर रथयात्रा को किया रवाना

# श्री महावीरजी की रथयात्रा में उमड़ा जन सैलाब

### दिखी साम्प्रदायिक सौहार्द की मिसाल

**राजाबाबू गोधा, संवाददाता**

**श्री महावीरजी/फागी संवाददाता, 13 अप्रैल।** करौली जिले में स्थित प्रसिद्ध दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के वार्षिक मेले के तहत रविवार 13 अप्रैल को हर वर्ष की भांति भगवान महावीर की भव्य रथयात्रा निकाली गई, रथयात्रा में श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा। रथयात्रा को प्रदेश की यशस्वी उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने जैन ध्वज दिखाकर जयकारों के बीच रवाना किया, जैन गजट संवाददाता राजाबाबू गोधा ने कार्यक्रम में शिरकत करते हुए बताया कि रथयात्रा में शामिल होने के लिए परिक्षेत्र के ग्रामीण जन कार्यक्रम पूर्व शनिवार रात को ही श्री महावीर जी परिसर में आकर डटे हुए थे, विभिन्न समूहों में यह ग्रामीण जन रात भर लोकगीतों पर नृत्य कर प्रभु की रथयात्रा के अलौकिक क्षण का इंतजार कर रहे थे। कार्यक्रम में राजस्थान सरकार की यशस्वी उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी राज्य सरकार की प्रतिनिधि के रूप में मुख्य अतिथि थीं जो श्रेत्र पर पहली बार भगवान महावीर के दर्शन करने श्री महावीर जी पहुंची।

कार्यक्रम में मंदिर के मुख्य स्वागत द्वार पर श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र के यशस्वी अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल की अगुवाई में कमेटी की ओर से उपमुख्यमंत्री महोदया को पुष्पगुच्छ भेंटकर भावभीना स्वागत किया गया, माननीय उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने मंदिर दर्शन के बाद मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की भक्तिमय आरती कर पुण्यार्जन किया, तत्पश्चात क्षेत्र कमेटी की ओर से तिलक, माल्यार्पण, शाल ओढ़ाकर एवं भगवान महावीर का छाया चित्र स्मृति चिन्ह के रुप में कमेटी द्वारा भेंट किया गया।

इस मौके पर एक चांदी का सिक्का तथा काफी टेबल बुक महामस्तकाभिषेक की बुक भी भेंट की गई। तत्पश्चात माननीया उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने महावीर जी के विकास के लिए पीडीकोर संस्था द्वारा तैयार डीपीआर बुक का अवलोकन किया। उप मुख्यमंत्री ने एल ई डी के माध्यम से पूरा महावीर जी क्षेत्र देखा, कार्यक्रम में प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल ने माननीया उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी को बताया कि भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम - 2023 का पुरस्कार नौरंगाबाद (श्री महावीर जी) राजस्थान को कास्य श्रेणी में दिया गया था। कासलीवाल ने बताया कि भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा दिल्ली के विज्ञान भवन में 23 सितम्बर 2023 को आयोजित समारोह में बेस्ट टेम्पल विलेज इन इण्डिया अवार्ड से नवाजा गया, प्रशासनिक समन्वयक भारतभूषण जैन व कमेटी पदाधिकारियों ने प्राप्त अवार्ड का अवलोकन उप मुख्यमंत्री को करवाया, पुरस्कार के रूप में प्राप्त अवार्ड का अवलोकन कर उपमुख्यमंत्री महोदया ने ने प्रसन्नता जाहिर की। अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल ने शब्दों के द्वारा उप मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए अपने स्वागत उदबोधन में कहा कि आठ दिवसीय लक्खी मेले के पावन अवसर पर महावीर जी की इस पावन धरा पर पधारना हमारे लिए अत्यंत गौरवपूर्ण और हर्ष का विषय है, उन्होंने महावीर जी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए प्रतिमा के उदभव की जानकारी दी। उन्होंने क्षेत्र कमेटी द्वारा महावीर जी क्षेत्र एवं ग्राम वासियों के लिये किये गये विकास कार्यों की जानकारी दी। इस मौके पर उप मुख्यमंत्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवान महावीर ने अपने विचारों से समाज को मानवता, सत्य, अहिंसा, और भाईचारे का मार्ग दिखाया जो हमारे लिए अनुकरणीय है। उनके उपदेश जीवन स्पर्शी है। जिनमे जीवन की समस्याओं का समाधान सम्माहित है। जैन समाज के द्वारा समाज के उत्थान के लिए समय-समय पर की जा रही सामाजिक सेवा की गतिविधियां प्रशंसनीय हैं। आस्था का यह केन्द्र श्री महावीर जी आपसी सौहार्द व समरसता का परिचायक है। लक्खी मेले का आयोजन हमारी परम्पराओं का परिचायक है। उन्होंने नौरंगाबाद (श्री महावीर जी ) का नाम श्रेष्ठ पर्यटन ग्राम के रुप में आने तथा भारत सरकार द्वारा इस हेतु अवार्ड देने पर पूरी क्षेत्र कमेटी की प्रशंसा की एवं आभार व्यक्त किया।

## भ. महावीर जन्म कल्याणक पर निकाली शोभायात्रा

**राजाबाबू गोधा, संवाददाता**

जयपुर शहर की पाशकॉलोनी बापू नगर में हरवर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान महावीर के जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। बापू नगर स्थित पंडित टोडरमल स्मारक भवन पर प्रसिद्ध समाजसेवी श्रेष्ठी राजीव जैन एवं सीमा जैन गाजियाबाद, दिगम्बर जैन समाज बापूनगर सम्भाग के परम संरक्षक डा. राजेन्द्र कुमार जैन, राजेश बड़जात्या, निर्मल संघी ने ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम में पं. टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने ध्वज गीत गाया। स्मारक भवन के मुख्य प्रबंधक पंडित पीयूष शास्त्री ने सभी विशिष्टजनों का तिलक व माला से स्वागत किया। इससे पूर्व पंचतीर्थ जिनालय पर हीरा चन्द बैद के निर्देशन में मुकेश जैन, पवन बज, मयंक बैद ने अभिषेक पाठ का वाचन करते हुए भगवान महावीर स्वामी की भव्य 9 फिट ऊंची खड्गासन प्रतिमा के रजत कलशों से अभिषेक किए। मंदिर समिति के डॉक्टर राजेंद्र कुमार जैन ने बताया कि बैण्ड-बाजों के साथ में उक्त शोभायात्रा यहां से रवाना होकर नन्दकिशोर पारीक मार्ग पर बी-175 पहुंचने पर हीरा चन्द बैद परिवार द्वारा भव्य स्वागत किया गया। उक्त शोभा यात्रा विभिन्न मार्गों से नगर भ्रमण करते हुए लाल कोठी की एवरेस्ट कालोनी में शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर पहुंची, जहां पर मन्दिर की प्रबंध कार्यकारिणी समिति ने शोभायात्रा का स्वागत किया।

## मुम्बई में 30 वर्ष पुराने जैन मंदिर जी को तोड़े जाने पर

### महासभा महामंत्री जी का मुख्यमंत्री जी को पत्र

सेवा में, माननीय श्री देवेंद्र फड़णवीस जी मुख्यमंत्री-महाराष्ट्र सरकार मुम्बई

विषयः विले पार्ले पूर्व में स्थित 'जैन मंदिर' ध्वस्त करने वाले अधिकारियों को तत्काल निलंबित कर मंदिर पुर्ननिर्माण करने के संबंध में।

मान्यवर, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा प्राचीन जैन मंदिरों का जीर्णोद्धार एवं मूर्तियों की सुरक्षा का कार्य 26 वर्षों से कर रही है। मुंबई महाराष्ट्र में विले पार्ले (पूर्व) स्थित दिगंबर जैन मंदिर को मुंबई महानगरपालिका द्वारा 16 अप्रैल 2025 को ध्वस्त किए जाने की खबर पूरे देश में फैल गई है।

जैन श्रद्धालु 30 वर्षों से अधिक समय से इस मंदिर में पूजा अर्चना, भक्ति करते थे। इस मंदिर को जिस तरीके से ध्वस्त किया है, यह अत्यंत निंदनीय है इससे जैन समाज में रोष व्याप्त है। देशभर के जैन समाज में तीव्र रोष व्याप्त है।

कृपया इस बात को गंभीरता से संज्ञान में लेते हुए आवश्यक कार्यवाही का निर्देश देने का विनम्र अनुरोध है।

महानगरपालिका के अधिकारी इस जैन मंदिर को कानूनी प्रावधानों का उल्लंघन करने वाला निर्माण बताने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन हर जगह हजारों निर्माण हमें सर्वत्र देखने को मिलते हैं। लेकिन मंदिर जैसे आस्था के केंद्र को जिस तरह से जमीनदोज किया गया है, यह बात किसी भी तरह से समर्थनीय नहीं हो सकती।

कृपया संबंधित अधिकारियों पर खिलाफ तत्काल कार्यवाही करें और उन्हें मंदिर पुनर्निर्माण के लिये अधिकारिक व्यवस्था करने का निर्देश देने का विनम्र अनुरोध है।

**- सादर, आपका**
**प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या**
**राष्ट्रीय महामंत्री - श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा**

### गुवाहाटी में णमोकार महामंडल की अप्रत्याशित प्रभावना

**गुवाहाटी।** ज्ञात रहे कि महावीर जयन्ति से पूर्व 9 अप्रैल को डेढ़ घन्टे महावीर स्थल में गुवाहाटी का सम्पूर्ण जैन समाज ने णमोकार मंत्र की जो अप्रत्याशित प्रभावना की वह देखते ही बनती है। समाज के यशस्वी व लोकप्रिय अध्यक्ष महावीर जी गंगवाल ने बहुत अच्छी व माकूल व्यवस्था करवायी। यहां तक कि आसाम सरकार की एक महिला मंत्री भी इस प्रभावना में शामिल हुयीं। गुवाहाटी समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रमुदित मुद्रा में था। विश्व-शान्ति के लिए की गयी यह प्रभावना अपना रंग जरूर दिखायेगी। महामंत्र की प्रभावना से तो बड़े-बड़े कार्य सिद्ध हो जाते हैं। विश्व में भी अवश्य शान्ति स्थापित होगी। मंच संचालन गुवाहाटी के जाने माने पहचाने वीरेन्द्र जी सरावगी ने किया।

**-शेखरचंद पाटनी मदनगंज-किशनगढ़**


हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
VIJAY KUMAR GANGWAL
CROWN Enterprises Pvt. Ltd.
GUWAHATI-781001
Phone : 2517274, Mobile : 98640-20611
e-mail : distribution@crownenterprisesprivatelimited.com

With best comliments from
Ashok Anuradha Pahariya
Assam knitwear, Guwahati (Assam)
(Manufacturer of Sweater, T Shirts, Track Suit etc and deals in all kinds of school uniform)]
Mobile No. 8761015224
Sohani Imphal (Manipur)
(A store of salwar suit, night wears, saris, bed sheets, blankets etc)
Mob. 8732804313

# वसुंधरा जैन समाज ने महावीर जयंती बड़े हर्षोल्लास से मनाई

**शैलेन्द्र जैन**

वसुंधरा एन्क्लेव (दिल्ली)। महावीर जन्म कल्याणक जैन धर्म के सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक त्योहारों में से एक है। यह वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर (सर्वोच्च उपदेशक) भगवान महावीर के जन्मकल्याणक का उत्सव मनाता है। यह अहिंसा, करुणा, सत्य और आध्यात्मिक ज्ञान पर जोर देते हुए मनाया जाता है। यह शांति, सद्भाव को बढ़ावा देता है और महावीर की शिक्षाओं का प्रसार करता है। वसुंधरा जैन समाज ने 10 अप्रैल को महावीर जयंती बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाई। समारोह की शुरुआत सुबह 6:30 बजे सम्राट अपार्टमेंट से ''प्रभात फेरी'' के साथ हुई और भगवान महावीर मार्ग पर श्रीमती नीतू जैन ठ-25, मानवस्थली अपार्टमेंट में इसका समापन हुआ और पूरे परिवार ने श्रीजी की आरती और प्रभातफेरी का जोरदार स्वागत किया। जैन समाज के महिलाएं, पुरुष, वरिष्ठ नागरिक और बच्चे सहित बड़ी संख्या में लोग भगवान महावीर की शिक्षाओं से लिखे झंडे और बैनर लेकर वसुंधरा एन्क्लेव की सड़कों पर चले और ''महावीर का क्या संदेश'', ''जियो और जीने दो'' के नारे लगाए और आम लोगों तक भगवान महावीर के ज्ञान का प्रचार किया। सीईएल अपार्टमेंट के बाहर एक ''विशाल भंडारा'' आयोजित किया गया। जहां आसपास के क्षेत्रों से अधिक से अधिक लोगों को भोजन (प्रसादम) प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथियों में क्षेत्रीय विधायक श्री कुलदीप जी, क्षेत्रीय पार्षद सुश्री मुनेश डेढ़ाजी की उपस्थिति रही। जैन समाज के अध्यक्ष श्री शरद जैन, उपाध्यक्ष श्री पवन जैन और सचिव श्रीमती शालिनी जैन ने उनका तिलक लगाकर और पटका भेंटकर सम्मान किया। अन्य सम्मानित अतिथियों में संयुक्त मंच से श्री जे पी शर्मा जी अध्यक्ष), विधायक प्रतिनिधि श्री कत्याल जी, सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री अनीता बहल, सनातन धर्म सभा की सचिव श्रीमती शैफाली शर्मा, वरिष्ठ नागरिक मंच के अध्यक्ष श्री आई डी शर्मा जी, श्री एम के भट्ट जी और सीईएल अपार्टमेंट के सचिव श्री राजेश खन्ना जी भी शामिल थे। उन्होंने सेवा की और भक्तों को भोजन परोसा और प्रसाद ग्रहण किया। उन्होंने जैन समाज को इतनी बड़ी सामाजिक सेवा के लिए धन्यवाद दिया। मंच पर बच्चों द्वारा जैन भजनों का आयोजन भी किया गया। बच्चों की भक्ति और भजनों के साथ पूरा माहौल उत्सवमय था।

# महावीर मय हुआ मानसरोवर

**राजाबाबू गोधा, संवाददाता**

**जयपुर, 12 अप्रैल 2025।** भगवान महावीर स्वामी के 2624 वें जन्म कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर सकल दिगंबर जैन समाज मानसरोवर जयपुर द्वारा विशाल वाहन प्रभातफेरी का आयोजन किया गया, कार्यक्रम में समाज के अध्यक्ष एमपी जैन एवं कमलेश चंद जैन ने बताया कि इस अवसर पर अग्रवाल फार्म स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर आदिनाथ से प्रभातफेरी को मुख्य अतिथि राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद्र जैन, राजस्थान जैन युवा महासभा के अध्यक्ष प्रदीप जैन महावीर जयंती कार्यक्रम के समन्वयक विनोद जैन कोटखावदा ने झंडी दिखाकर रवाना किया।

प्रभातफेरी के मुख्य संयोजक विनेश सोगानी ने बताया कि प्रभातफेरी को रवाना करने से पूर्व पूर्ण विधिविधान से भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा करने के पश्चात कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजेश रेणु काला ने ध्वजारोहण करने का सौभाग्य प्राप्त किया। समाज के मंत्री सौभाग मल जैन के नेतृत्व में सभी का तिलक माल्यार्पण एवं साफा पहनकर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष सुमित प्रकाश जैन, धन कुमार कासलीवाल, सुभाष जैन ने बताया कि प्रभातफेरी में सैकड़ों की तादाद में स्कूटर मोटरसाइकिल एवं ट्रैक्टरों पर महिलाएं पुरुष और बच्चे भगवान महावीर के जयकारों के साथ चल रहे थे। कार्यक्रम के संयोजक मुकेश कासलीवाल कुणाल काला ने बताया कि प्रभातफेरी अग्रवाल फार्म स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर से रवाना होकर थड़ी मार्केट स्थित पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर मीरा मार्ग नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर हीरा पथ होते हुए श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर पहुंची। समाज समिति के मंत्री ज्ञान बिलाला एवं राजेंद्र सेठी ने बताया कि प्रभात फेरी का जगह-जगह पुष्प वर्षा कर अभिनंदन किया गया। विभिन्न स्थानों पर संयोजकों का स्वागत किया गया। प्रभात फेरी के वरुण पथ पहुंचने पर 1008 दीपको से भगवान महावीर की महाआरती की गई। कार्यक्रम के अंत में मुख्य संयोजक विनेश सोगानी ने प्रभातफेरी में सम्मिलित हुए सभी का अभिनंदन एवं धन्यवाद ज्ञापित किया विशेष रूप से महिला मंडल की अध्यक्ष सुशील टोंग्या, तारामणि गोधा, सुशीला रावका भंवरी देवी जैन, उर्मिला पाटनी, हिमानी जैन एवं संयोजक गण मुकेश कासलीवाल कुणाल काला, मनोज लुहाड़िया, जम्मू सोगानी, एडवोकेट राजेश काला, सिद्ध कुमार सेठी, सुरेश छाबड़ा, प्रकाश पाटनी, सुरेंद्र पाटौदी का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया गया। इस अवसर पर भगवान महावीर के जीवन पर विद्वानों द्वारा प्रकाश डाला गया।

## सौ. हेमलताबाई पाटनी मेडिकल एजुकेशन संस्था में भ. महावीर जयंती संपन्न

**चिकलठाणा (महाराष्ट्र)।** भ. महावीर स्वामी की 2624वी जयंती एन-4, सिडको औरंगाबाद में हेमलताबाई पाटनी मेडिकल एजुकेशन संस्था में पत्रकार एम. सी. जैन, के हस्ते पुष्पहार अर्पण कर ''णमोकार महामंत्र'' का जाप किया, इस अवसर पर संस्था के सचिव प्रा. डा. राजेश एम पाटणी, डा. पवन डोंगरे, डा. पवार, डा. कोठारी, डा. प्रितेष पाटणी, बोराडे उपस्थित थे।

## शांति सागर जी आचार्य पद शताब्दी महोत्सव अंतर्गत

# भक्तामर दीप अनुष्ठान में आयोजित

**राजेश पंचोलिया, इंदौर**

पंचम पट्टाधीश 108 आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं समाधिस्थ 108 मुनि श्री चारित्रसागर जी की प्रेरणा से स्थापित श्री आदिनाथ चैत्यालय स्कीम नंबर 71 इंदौर में प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज आचार्य पद प्रतिष्ठापना शताब्दी महोत्सव एवं आचार्य श्री वर्धमान सागर जी 75 वीं हीरक जन्म वर्ष अंतर्गत 108 दिवसीय भक्तामर दीप अनुष्ठान 28 जनवरी से 15 मई तक आयोजित होकर निरंतर चल रहा है।

श्री आदिनाथ चैत्यालय के महासंरक्षक श्रीमती आरती सनत जी जैन ने बताया कि दिनांक 13 अप्रैल को 24 घंटे का अखंड भक्तांबर पाठ प्रातः प्रारंभ होकर समापन 14 अप्रैल को प्रातः हुआ। श्री भक्तामर विधान के 48 काव्य के अर्ध्य पूजन कर समर्पित किए गए। इस अवसर पर श्री जी का पंचामृत अभिषेक हुआ। मूल नायक श्री आदिनाथ भगवान की विशेष पूजन भक्ति भाव नृत्य पूर्वक की गई। श्री महेंद्र टी जैन अध्यक्ष एवं श्री सुनील जैन ईशान सचिव अनुसार भक्तामर महास्तोत आराधना भक्त परिवार के तत्वाधान में दीप आराधना कर पुण्यशाली परिवार द्वारा प्रभावना का वितरण किया जाता हैं। 108 दिवसीय भक्तामर दीप अनुष्ठान आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी के दीक्षा दिवस, अवतरण दिवस श्रावकों के जन्म दिवस, वैवाहिक सालगिरह पर आयोजित कर परिवार धर्म लाभ के रहे हैं। संरक्षक निखिल, श्रीमती रिया एवं विशाल अनुसार इस चैत्यालय में महिला अभिषेक, पंचामृत अभिषेक होता है। चैत्यालय से जुड़े अनेक भक्तों द्वारा विभिन्न धर्म प्रभावना के कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता की जा रही है।

# राकेश गोदिका 'रक्त वीर' की उपाधि से अलंकृत

**फागी संवाददाता**

**जयपुर।** दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति के संस्थापक अध्यक्ष युवा समाजसेवी राकेश गोदिका को दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन इंदौर द्वारा उनकी सेवाओं के लिए ''रक्त वीर'' की उपाधि से अलंकृत किया गया। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष सुरेन्द पांड्या, यश कमल अजमेरा, दैनिक समाचार जगत के संपादक शैलेंद्र गोधा ने रीजन अध्यक्ष राजेश बड़जात्या, महासचिव निर्मल संघी, मनोनीत अध्यक्ष सुनील बज, महासचिव नीरज जैन, कोषाध्यक्ष प्रमोद जैन सोनी के सानिध्य में राकेश गोदिका को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सन्मति ग्रुप अध्यक्ष मनीष लोग्या, सचिव राजेश पाटनी, मुख्य समन्वयक दर्शन बाकलीवाल, समन्वयक राकेश छाबड़ा सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि राकेश गोदिका ने अब तक लगभग 500 रक्तदान शिविर विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से आयोजित कर लगभग 20000 यूनिट रक्त एकत्र करवाने में अपना महत्व महत्वपूर्ण सहयोग किया है तथा स्वयं ने भी लगभग 75 बार रक्तदान किया है।

## प्रभात फेरी निकाल महावीर स्वामी का किया गुणगान

**मदनगंज किशनगढ़।** भगवान महावीर स्वामी के 2624वें जन्म कल्याण महोत्सव पर श्री दिग्म्बर जैन महावीर जिनालय हाउसिंग बोर्ड में 10 अप्रैल को धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसके तहत सुबह प्रभातफेरी निकाली गई। भगवान महावीर के अभिषेक के बाद शांतिधारा आर. के. मार्बल परिवार से अशोक पाटनी एवं आनंद बज ने की। शाम को णमोकार मंत्र का पाठ के तत्पश्चात 64 रजत दीपक के द्वारा वर्धमान स्त्रोत का पाठ, 108 दीपकों के द्वारा प्रभु की महा आरती की गई। रजतमय पालने का अनावरण शांता पाटनी एवं सुलोचना कासलीवाल कनक बज, मीना पाटनी एवं मंजू बोहरा के द्वारा किया गया।

– संजय कुमार जैन, संवाददाता

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता
उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

मिलता बहुत कुछ हैं इस जिन्दगी से मगर
हम गिनती उसकी करते हैं जिसें हम हासिल नहीं कर पाते

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3. भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168276 rkpatin777@gmail.com

# विशाल संघ के नायक चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज

## संपादकीय

भारत की प्राचीन संस्कृति में श्रमण परंपरा का विशेष स्थान रहा है। श्रमण संस्कृति का अर्थ है आत्मसंयम, अहिंसा, त्याग, साधना और आत्मशुद्धि का मार्ग। सदैव से श्रमण परंपरा गौरवशाली व लोकप्रिय रही है। इस परंपरा को सशक्त बनाने और जन-जन तक पहुँचाने में अनेक आचार्यों का योगदान रहा है। इनमें से एक प्रमुख नाम है श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक ज्ञान, साधना और उपदेशों से श्रमण संस्कृति को एक नई दिशा दी है।

बीसवीं सदी में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज दक्षिण, मुनिकुंजर श्री आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर) और आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी) की आचार्य परम्परा प्रवाहमान है। आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज, श्री आदिसागर जी महाराज की परम्परा के एक विशुद्ध आचार्य हैं जो अपनी विशुद्ध चर्या एवं चर्चा के माध्यम से जिनशासन को जीवंत कर रहे हैं। आपके माध्यम से माँ सरस्वती का भंडार दिन प्रतिदिन समृद्ध हो रहा है। आपकी देशनाओं की चर्चा पूरे देश-विदेश में है।

**युगपुरुष:** भारत भूमि की वसुंधरा अनेक संतों, महापुरुषों की जन्मदायिनी रही है जिसने हर युग में युगपुरुषों को जन्म देने का गौरव प्राप्त किया है। ये युगपुरुष अपने वाणी की ओजस्विता, अपने विचारों की उत्कृष्टता व अपनी आदर्शमय जीवन शैली से मानव समाज पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं वह जन-जन के आकर्षण के केंद्र बन जाते हैं। ऐसे ही युग पुरुष महामनीषी हैं आचार्य प्रवर श्री विशुद्ध सागर जी महामुनिराज जिन्होंने अपनी मूलाचारमयी चर्या और आध्यात्मिक देशनाओं से एक नया शंखनाद किया है।

**चुंबकीय व्यक्तित्व:** आचार्य गुरुवर का कांतिमय मुख मंडल, दिगंबर मुद्रा में उनके अंग-प्रत्यंग से झलकती संयम की साधना, उनका सौम्य व्यवहार, ओजमयी वाणी, वात्सल्य पूर्ण व्यवहार, अपनी चर्या, क्रिया से वर्धमान के वास्तविक लघुनंदन, विशुद्ध आहार चर्या से चतुर्थ कालीन श्रमण परंपरा का दर्शन देने वाले आचार्य गुरुवर के व्यक्तित्व का हर आयाम चुंबकीय वर्गणाओं से पूर्ण दर्शक को स्वतः अपनी और आकर्षित करता है, यही कारण है कि बड़े-बड़े पैकेज वाली नौकरियों को ठुकराकर उच्च शिक्षा के ऊंचे ओहदे को अनदेखा कर कई भव्य आत्माओं ने उनके पाद मूल में संयम जीवन को अंगीकार किया और गुरु के रूप में उन्हें अपना कर अपना पूरा जीवन गुरु चरणों में समर्पित कर दिया।

**श्रमण कुल के तिलक:** आचार्यश्री बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। आप श्रमण कुल के तिलक हैं। आप मूलाचार के मूर्त रूप हैं और जीवन्त समयसार हैं। आप जिनालय निर्माण एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि धर्म प्रभावना के कार्यक्रमों में सान्निध्य प्रदान करने के उपरान्त भी यश, ख्याति आदि की कामना से दूर निरपेक्ष भाव से सदैव स्वयं के विशुद्ध परिणामों की सन्निधि में विराजमान रहते हैं। ज्ञान-ध्यान और तप में रत आगमोक्त चर्या के पालकः आचार्य प्रवर समन्तभद्र स्वामी द्वारा लिखित ये पंक्तियां आचार्य श्री विशुद्धसागर जी पर अक्षरसः खरी उतरती हैं

**विषयाशावशातीतो**
**निरारम्भोऽपरिग्रहः।**
**ज्ञानध्यानतपोरक्तः**
**तपस्वी स प्रशस्यते।।10।।**

जब आचार्यश्री के श्रीमुख धाराप्रवाह आध्यात्मिक वाणी निश्रित होती है तो -'वीर हिमाचल ते निकसी गुरु गौतम के मुख कुंड धरी है' जिनवाणी स्तुति ये पंक्तियां एकदम सजीव हो जाती हैं।

**एक-एक शब्द अमृत:** श्रद्धालु श्रोताओं को लगता है गुरुवर बस बोलते रहें और हम बस सुनते रहें, उनका वह तेज चेहरा और सौम्य मुद्रा और वह स्नेह और मिठास भरी वाणी, उनके मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द मानो अमृत की बरसात करता है।

**आचार्य कुन्दकुन्द के समान:** आचार्य कुन्दकुन्द भगवन् के लगभग दो हजार वर्षों के उपरान्त इक्कीसवीं शताब्दी में आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा में एक ऐसे महान् उन्नायक आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिनकी आगमोक्त चर्या और समयसारमय चिन्तन और प्रवचनसारिणी वाणी से आचार्य कुन्दकुन्द की छवि साकार हो गयी है। आचार्य प्रवर कुन्दकुन्द भगवन् के द्वारा निबद्ध समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, अष्टपाहुड आदि ग्रन्थों पर आचार्य श्री विशुद्धसागर जी की देशनाएँ देखकर यही लगता है कि हमने आचार्य श्री कुन्दकुन्द को तो नहीं देखा लेकिन आचार्य श्री विशुद्धसागर जी को देखकर हम कह सकते हैं कि आचार्य प्रवर कुंदकुंद स्वामी ने भी इसी प्रकार आध्यत्मिक गंगा प्रवाहित की होगी।

**आध्यात्म जगत के ध्रुवतारे:** श्रमण संस्कृति के परिचायक, निर्लेप, निष्काम, निर्विकार, दिगम्बर मुद्राधारी, आध्यात्म जगत के ध्रुवतारे, समयसार की मूर्ति, वर्तमान के वर्धमान, धर्म प्रभाकर, आगम उपदेष्टा, धरती के भगवान आचार्य गुरुदेव विशुद्धसागर जी महाराज आज जन-जन की आस्था के केंद्र बिंदु बन गए हैं।

**सारी उपमाओं** - अलंकारों से भी ऊपरः आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महामुनिराज एक ऐसे संत हैं, जो सारी उपमाओं - अलंकारों से भी ऊपर हैं। उनकी ऊँचाईयाँ, उनका कद एवरेस्ट की चोटी से भी अतुलनीय है। उनके विचारों की गहराई सागर से भी गहरी है। उनका चिन्तन सात आसमानों के पार तक फैल जाता है। उनकी सम्पूर्ण साधनामय जीवन दर्शन, साहित्य उनके द्वारा बनाई गई चिंतन की नई पगडण्डियाँ अत्यंत उपयोगी और प्रेरक हैं।

**वीतरागी समत्व साधक:** एक युगश्रेष्ठ जैनाचार्य के रूप में जन-जन के मध्य अप्रतिम प्रसिद्धि को प्राप्त आचार्य भगवन् श्री विशुद्ध सागर जी महाराज यश प्रसिद्धि की प्राप्ति की लोकेषणा से दूर रहकर एक वीतरागी समत्व साधक के रूप में आचार्य कुन्दकुन्द की तरह आत्मा की पूर्ण शुद्धि को प्राप्त करने के लिए मोक्षमार्ग की आध्यात्मिक यात्रा में प्रतिपल अविराम गति से गतिमान हैं। वे निरंतर आत्म साधना के साथ प्रभावना में नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

"हो जाती है धरा पावन, जहां विचरण आप करते हैं।
धरती भी शीतल हो जाती है, जहां चरण विशुद्ध गुरु के पड़ते हैं।।"

एक अद्वितीय आध्यात्मिक संघनायक हैं। आपकी विशुद्धचर्या, सरलता, सहजता, निःस्वार्थ वात्सल्य एवं हृदयस्पर्शी मधुर वाणी ने युवा पीढ़ी को इतना अधिक प्रभावित किया कि उच्च शिक्षा प्राप्त अनेक नवयुवकों ने सांसारिक सुख साधनों और ऐश्वर्य का त्याग करके आपसे श्रमण दीक्षा ग्रहण करके आपका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया है। इस कलिकाल में जहाँ युवापीढ़ी आकंठ विषय-भोगों में डूबी हुई है, वहीं आपके करकमलों से साठ से अधिक बाल ब्रह्मचारी नवयुवकों ने दिगम्बर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली है। यह किसी चमत्कार से कम नहीं है।

**विशाल संघ के संघनायक:** अभी तक 58 मुनि दीक्षा, 1 एलक दीक्षा व 12 क्षुल्लक दीक्षा आचार्यश्री ने अपने कर कमलों से प्रदान की हैं साथ ही आप गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के पट्ट के उत्तराधिकारी होने से विशाल संघ के नायक हो गए हैं। विशाल संघ के संघनायक होने के कारण आप अपने पंचाचारों का पालन निरतिचार करते हुए शिष्यों को दीक्षा, शिक्षा एवं प्रायश्चित्त आदि प्रदान करने का उत्तरदायित्व भी कुशलता से निर्वहन कर रहे हैं। संघनायक आचार्य के रूप में आपकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इतने विशाल संघ का संचालन करने एवं अनुशासित करने के बाद भी आपकी आध्यात्मिक साधना बाधित नहीं हुई है। आप सदैव निर्विकल्प रहकर ''आत्मस्वभावं परभावभिन्नम'' की भावना में लीन रहते हैं। आपको अनेक राज्य सरकारों ने राजकीय अतिथि घोषित किया है।

**मजबूत हाथों में पट्टाचार्य पद:** गणाचार्य श्री विराग सागर जी को शायद पहले से महसूस हो गया था कि अब उनकी देह ज्यादा समय इस धरती पर रहने वाली नहीं है इसलिए उन्होंने समय रहते समाधि के एक दिन पूर्व ही अपने अंतिम संबोधन में पट्टाचार्य का पद अपने सुयोग्य शिष्य योग्य प्रभावक संत चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज को देने की घोषणा कर आगम की परंपरा का पालन किया। आध्यात्म योगी पूज्यवर विशुद्धसागर जी महाराज यथा नाम तथा गुण रुप हैं। जैसा नाम है, वैसा ही आचरण है। तत्वों का इतना गहन चिन्तवन है कि जिनवाणी उनके कण्ठ में विराजमान रहती है। निश्चित ही पूज्य आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज को यह पद दायित्व सौंपकर अपनी विरासत को मजबूत हाथों में प्रदान किया है।

**आचार्यश्री को समर्पित यह विशेषांक:** यह विशेषांक पूज्यवर आचार्य श्री विशुद्धसागर जी को पट्टाचार्य महोत्सव के अवसर पर सादर समर्पित है। इस अंक में जहाँ अनेक आचार्य, मुनिराजों की विनयांजलि, शुभाशीष, मंगलभावना, लेख प्रस्तुत हैं वहीं अनेक विद्वानों के लेख और राजनेताओं शुभकामना संदेश प्रकाशित किए जा रहे हैं। संपादक श्री सुधेश जैन जी लखनऊ के अथक श्रम के कारण यह विशेष अंक आपके हाथों में पहुँच रहा है।

**विशेषांक के प्रेरणास्रोत श्रमण मुनि सुप्रभसागर जी मुनिराज:** इस महत्वपूर्ण विशेषांक के प्रेरणास्रोत परम पूज्य मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज की प्रज्ञा-प्रतिभा विलक्षण है। श्रमण संस्कृति की गौरवशाली परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य परम पूज्य श्रमण सुप्रभसागर जी मुनिराज अपनी आगमोक्त चर्या और आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा निरंतर आत्मसाधना व प्रभावना में संलग्न हैं। आप श्रमण परंपरा के विलक्षण और तपस्वी संत हैं। आपने समाज और संस्कृति को भी एक नई दिशा दिखाई है। उपनयन संस्कृति की प्राचीन परंपरा को पुनर्जीवित करने में आपका महनीय योगदान है। मेरा सौभाग्य रहा है कि आपके सान्निध्य में अब तक सम्पन्न सभी विद्वत् संगोष्ठियों का संयोजन करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आपके निकट आकर आपके अगाध वैदुष्य और तप, साधना से अत्यधिक प्रभावित हुआ हूँ। संघस्थ मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज का कुशल मार्गदर्शन विशेषांक के लिए मिला है। उत्कर्ष समूह, भारत का योगदान सराहनीय है। सभी पुण्यार्जकों के प्रति आभार।

**इंदौर में श्रमणों महाकुंभ:** गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने महाराष्ट्र के जालना में सन् 2024 में अपनी समाधि के पूर्व अपने पट्ट का उत्तराधिकारी अपने सुयोग्य शिष्य आचार्य प्रवर आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज को घोषित किया था।

इंदौर में 27 अप्रैल से 2 मई तक सुमतिधाम में पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव का आयोजन किया किया जा रहा है। 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया के दिन विशेष समारोह में आचार्य विशुद्धसागर जी को पट्टाचार्य पद विधि विधान के साथ प्रदान किया जाएगा। इस अवसर पर 300 से अधिक संत-साध्वी और देशभर से लाखों गुरुभक्त उपस्थित रहेंगे। सुमतिधाम के मुखिया, आचार्यश्री के अनन्य भक्त समाज श्रेष्ठि श्री मनीष गोधा जी और सपना गोधा जी के सौजन्य से होने वाला यह आयोजन इंदौर की जैन समाज के इतिहास का सबसे बड़ा कार्यक्रम होगा। इसमें सभी संघ और पंथ के साधु पधारेंगे। यह आयोजन अपने आप में अद्वितीय और बेमिसाल होगा। आचार्यश्री के साधनामयी तेजस्वी जीवन को शब्दों की परिधि में बांधना संभव नहीं है। यह सूर्य को दीपक दिखाना और सिंधु को बिंदु जैसा है।

**सब धरती कागद करूँ,**
**लेखनी सब बनराय।**
**सात समुद्र की मसि करूँ,**
**गुरु गुण लिखा न जाय।।**

यदि सारी धरती को कागज मान लिया जाए, सारे जंगल - वनों की लकड़ी की कलम बना ली जाए तथा सातों समुद्र स्याही हो जाएँ तो भी हमारे द्वारा कभी गुरु के गुण नहीं लिखे जा सकते हैं। मेरा सौभाग्य रहा है कि परम पूज्य आचार्यश्री का मंगल सान्निध्य, मार्गदर्शन मुझे विद्यार्थी जीवन से ही मिला है। वर्तमान में अनेक संगोष्ठियों में आपके दर्शन और अमृत देशना का लाभ निरंतर प्राप्त हो रहा है।

इस अवसर पर मैं यही भावना भाता हूं कि तपोवर्धन एवं स्व-पर कल्याण के निमित्त आप सदा स्वस्थ रहें, दीर्घायु होकर श्रमण संस्कृति-जैन धर्म की असीम प्रभावना करें और आशीर्वाद प्रदान करते रहें जिससे हम अपने जीवन को ज्योतिर्मय बना सकें। जैन गजट व महासभा परिवार की ओर से सादर नमोस्तु।

**- डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर, सह सम्पादक**

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

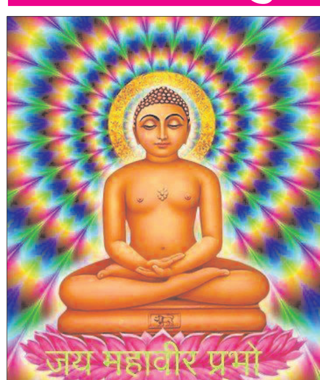


सुरेश कुमार-ललिता देवी बाकलीवाल, अमित कुमार- स्नेहा देवी बाकलीवाल, कैयरा, जेस्वी, शारव बाकलीवाल

सुरेश कुमार जैन एण्ड कंपनी

तरूण राम फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी-781001

# श्रामण्य से सिद्धत्व की ओर अध्यात्म योगी की अलौकिक यात्रा

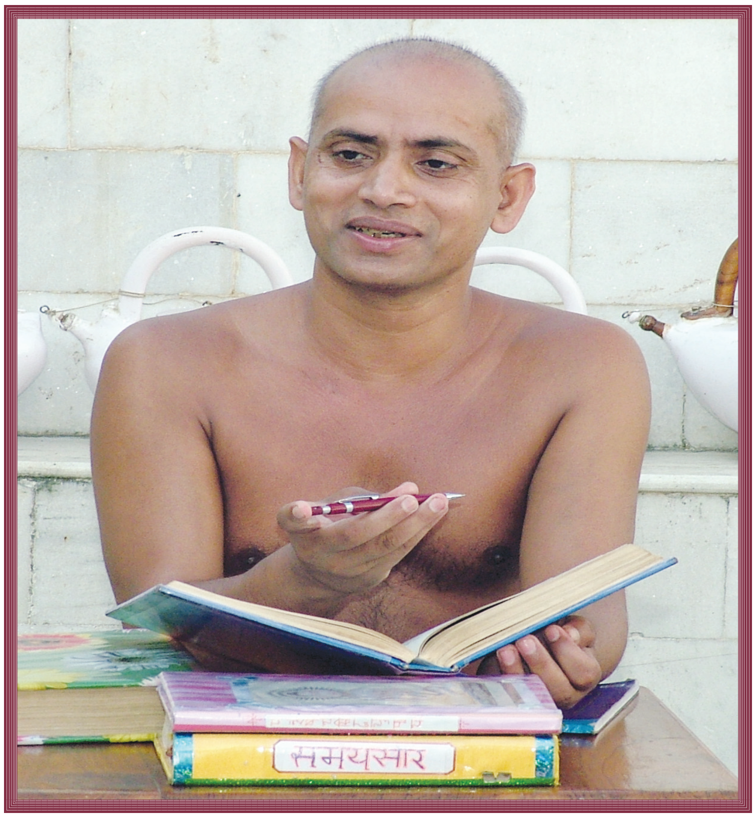


जैन परिवारों में यह एक संस्कार है कि जन्म के डेढ़ माह पश्चात् शिशु को प्रथम बार जिनेन्द्र दर्शन के जिन मन्दिर ले जाया जाता है। उसे वर्तमान में ''टेम्पल डे'' कहते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में इस विधि को ''चौकोत्सव समारोह'' भी कहते हैं।

'रुट' ग्राम के ही निवासी धर्मनिष्ठ श्रावक सेठ श्री रामनारायणजी जैन व उनकी सहधर्मिणी श्राविकारत्न श्रीमती रत्तीबाई के गर्भ से एक शिशु ने जन्म लिया, जो कालान्तर में वैराग्य को प्राप्त कर वर्तमान में हमारे मध्य अध्यात्मयोगी, समता-शिरोमणी 108 आचार्य श्री विशुद्धसागरजी के रूप में अधिष्ठित हैं। जो अपने आचार्यत्व के शिशुत्व-काल में ही अध्यात्म, आगम व संयम साधना के उच्च शिखर पर दिखाई दे रहे हैं, वे भविष्य में आचार्यत्व के यौवनत्व काल में कैसी विशालता व उत्कृष्टता को प्राप्त करेंगे? वह तो अभी भविष्य के गर्भ में, केवलीगम्य है।

श्रावक श्रेष्ठी श्री रामनारायणजी, श्रीमती रत्तीबाई को शिशु के जन्म के समय अपनी ससुराल भिण्ड ले गये थे। वहीं शिशु के मामा श्री महावीरजी के निज निवास पर शिशु का जन्म हुआ था। 18 दिसम्बर 1971 का वह दिन जब माँ रत्तीबाई ने मात्र सात माह के गर्भस्थ शिशु को जन्म दिया। नियोग से यह उनकी सातवीं संतान थी।

जन्म के कुछ दिन बाद माँ रत्ती जब शिशु को लेकर गृहग्राम रूर पहुँची, तो घर में ग्रामीणों की भीड़ एकत्रित हो गई थीं, शिशु को निहारने के लिये। इस अवसर पर शिशु के पिता श्री रामनारायणजी ने खुशी में गुड़-परमल बाँटे थे। ग्रामीण माताओं ने भी गीत गा-गाकर खूब मंगलाचार किये थे और गाँव के लोगों ने ग्रामीण वाद्य यन्त्र डफली से भी मधुर ध्वनि गुंजायमान की थी।

गृह ग्राम रूट की माटी शिशु की अगवानी में तत्पर जान पढ़ती थी। सिन्धु नदी का नीर भी मानो छू लेना चाहता था नवजात शिशु को ग्राम में मार्ग के किनारे लगे वृक्ष भी शिशु के आगमन पर मानो पत्ते फूल गिराकर शिशु का नहीं, भावी महाश्रमण का ही अभिवादन कर रहे हों, ऐसा प्रतीत हो रहा था। रूर ग्राम गौरवान्वित था, अपनी मिट्टी के लाल को पाकर, क्योंकि इसी लाल के कारण रूट की माटी भविष्य में जन-जन के लिए वन्दनीय हो जायेगी।

ग्रामीणों के लिए तो शिशु जन्म से पहले ही मंगलकारी सिद्ध हुआ था, क्योंकि जन्म के साथ एक ऐसा संयोग हो गया था, जो लाखों-करोड़ों में किसी एक के साथ ही होता है। यही संयोग ग्रामीणों को शिशु के प्रति आस्था का केन्द्र बन गया था वह संयोग था सतमासे शिशु का मामा के घर में जन्म होना, क्योंकि नारायण श्रीकृष्ण का जन्म भी सात मास में मामा के घर हुआ था। रूर वासियों के लिए यह शिशु कृष्ण कन्हैया ही था। आस्था का केन्द्र, विश्वास का मुकाम।

तीन सप्ताह व्यतीत हो गये शिशु को रूर आये हुए। तब घर में चर्चा प्रारम्भ हो गयी शिशु के नामकरण संस्कार की। माँ रत्ती ने अपने पुत्र के पिता से कहा - स्वामी ! शिशु को जन्म लिये 35 दिन बीत गये हैं, अतः इसका नामकरण संस्कार करना चाहिये। आप शिशु की कुण्डली (जन्म पत्रिका) बनवा लो जिससे राशि के अनुसार नामकरण किया जा सके।

वैसे भी जैन परिवारों में यह एक संस्कार है कि जन्म के डेढ़ माह पश्चात् शिशु को प्रथम बार जिनेन्द्र दर्शन के जिन मन्दिर ले जाया जाता है। उसे वर्तमान में टेम्पल डे कहते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में इस विधि को चौकोत्सव समारोह'' भी कहते हैं।

धर्मज्ञ जनक जननी रामनारायणजी एवं श्रीमती रत्तीबाई जो शिशु के भविष्य से अवगत थे, परन्तु फिर भी जन्म पत्रिका बनवाकर प्रमाणित कर लेना चाहते थे। जन्म पत्रिका (कुण्डली) भी तैयार हो गई जिससे पूर्णतः निष्कर्ष सामने आ गया कि ''यह शिशु बड़ा होकर अध्यात्म का पर्याय, समय का सच्चा साधक एवं श्रमण संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ धरती देवता सिद्ध होगा, टूटों को मिलाना और आत्महित ही जिसका ध्येय होगा। अत्यन्त तार्किक, ज्ञानवान व सहनशील भी होगा। पढ़ने में कुशल और अल्पवय में ही वैरागी होकर गृह त्याग कर देगा। अपनी आयु के चार दशक पूर्ण करते ही देशभर में छा जायेगा एवं मौन प्रिय, परन्तु वाणी की तान छोड़ने वाला प्रकृष्ट प्रवचनकार बनेगा।

शिशु के पिता सेठ श्री रामनारायण जी एवं जननी श्रीमती रत्तीदेवी समीप बैठकर जन्म पत्रिका के मूल बिन्दुओं को जानकर अत्यन्त हर्षित थे। माँ रत्ती उत्साह पूर्वक अपने स्वामी से कहने लगी कि कुण्डली में नया कुछ नहीं है क्या? यह सब तो आप मुझे शिशु के जन्म के पहले ही बता चुके हो। तब दोनों ही शिशु के गर्भस्थ अवस्था के समय आये स्वप्नों एवं उनके फल को स्मरण कर आह्लादित हो गये। उन्हें अपने पुत्र पर गौरव हो आया। दोनों ने एकटक शिशु को देखा व समीप लेटे पुत्र को पिता ने हाथ से सहलाया और माँ ने भी हाथ फेरकर पुत्र को स्नेह किया।

स्नेही जन-परिजनों ने शिशु को प्रथम जिनदर्शन कराने और शिशु का नामकरण करने का दिन 2 फरवरी 1972 निश्चित किया। फलतः परिजनों ने रिश्तेदारों को इस आशय का समाचार दे दिया। वह शुभ दिन भी पास आ गया। समारोह में सहभागिता के आकांक्षी-जन समय से पहले ही पहुँच गये थे। एक दिन पहले ही शिशु के मामा ननिहाल पक्ष के परिजनों के साथ पच लेकर ग्राम रूट में सकुशल पहुँच गये थे। मामा-मामी हों या बुआ, भौजाई सभी प्रफुल्लित थे, एक-दूसरे से मिलकर एवं बतियाकर।

2 फरवरी का दिन शिशु के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि आज उसे प्रथम बार जिनेन्द्र प्रभु के दर्शन के लिए जिन मन्दिर ले जाया जायेगा और आज ही होगा नामकरण संस्कार उस शिशु का, जिसका नामकरण संस्कार भविष्य में आचार्य भगवन्त स्वयं करेंगे, जनमेदनी के समक्ष, मन्त्रोच्चार पूर्वक दीक्षा उपरान्त।

नियत समय पर ग्राम के ग्रामीण पहुँच गये थे, सेठ श्री रामनारायण जी के घर पर। बुआ कटोटी देवी ने कटोरी भर आटे से चौक पूर दिया, तब-तक अन्य महिलाएँ माँ रत्तीबाई को चौक पर बैठाने सजाकर लिवा लाई। अन्य परिजन शिशु को भी ले आये। शिशु की सुन्दरता देखकर सभी आनन्दित हो रहे थे। शिशु गौर वर्ण का न होने पर भी शोभा को प्राप्त कर रहा था। मनमोहक नयनों में अँजा काजल, माथे पर चन्दन की बिंदकी, कमर व कलाई में सूती काला धागा, गले में स्वर्ण निर्मित छोटी-सी हाय, द्वय पादों में पायलें, बदन पर नवीन वस्त्र शिशु की सुन्दरता को द्विगुणित कर रहे थे। आगन्तुकों को भी शिशु का सौन्दर्य अनुपम लग रहा था।

एक ग्रामीण - वृद्ध महिला ने तो बेहिचक अपनी अखियों में लगा काजल अंगुली पर लेकर शिशु के वक्षस्थल पर यह कहते हुए लगा दिया कि ''नजर न लग जाये लला को।'' धनु राशि के अनुसार शिशु का नाम राजेन्द्र रखा गया, लेकिन ग्रामीणजन उसे कन्हैया कहते एवं गृह परिजन व सामान्यजन लला या सेठ का छोरा कहकर सम्बोधन करते थे। सभी ने भरपूर खुशी से शिशु के नामकरण समारोह का आनन्द लिया एवं शिशु एवं माँ को उपहारों की सौगात दी।

नामकरण - संस्कार के उपरान्त सबसे पहले राजेन्द्र (लला) को लेकर माँ रत्तीदेवी परिजनों के साथ देवालय गई थीं देव दर्शन के लिए। लला ने अपनी छोटी-छोटी अँखियों से खूब निहारा था, जिनेन्द्र देव को एवं मन्दिर में दीवारों में चित्रित चित्रों को जिनमें मुख्य थे आचार्य श्री महावीर कीर्ति का चित्र, आचार्य श्री सुमतिसागर जी का चित्र एवं सोनागिर के मूलनायक अष्टम तीर्थंकर 1008 श्री चन्द्रप्रभ भगवान् का चित्र।

मन्दिर के बीचों-बीच वेदी के समक्ष जिनेन्द्र जिनबिम्ब की ओर मुख करके लेटे हुए 'कट ग्राम' के लाल, सुश्री समीक्षा पाटनी विजय पाटनी ने लला के ललाट पर केशर का टीका लगाया गया। तदुपरान्त जननी माँ एवं जनक रामनारायन जी ने लला के द्वय कर्ण- कुंडों में 'महामन्त्र णमोकार उड़ेल दिया, नौ-नौ बार माँ ने दाहिने व पिता ने बाएँ कर्ण में मन्त्र प्रवाहित किया एक के बाद क्रमपूर्वक।

माँ ने उसी समय मन्दिर में अपने पुत्र लला को सम्बोधन करते हुये धर्मोपदेश दिया कि भो आत्मन! तू आज से जिन मार्गी हो गया है, पंचपरमेष्ठी ही इस लोक में शरणभूत हैं, मंगलकारी हैं एवं मोक्षार्थियों के पथ- प्रदर्शक हैं। निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरुओं की सेवा, अरिहन्त जिनेन्द्र की पूजा, अरिहन्त वाणी का श्रवण एवं अणुव्रतों का पालन ही भव्य श्रावक का मोक्षमार्ग है। जिनधर्मी को निरन्तर परमपदों की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करते रहना चाहिये। पिता रामनारायण ने भी लला के कर्ण कुण्डों को पावन कर दिया था स्वर्ण सूत्रों का पाठन करके। वे सूत्र थे चैतन्य स्वरूपोऽहम, ज्ञानपुञ्ज स्वरूपोऽहम, अनन्तज्ञान स्वरूपोऽहम् परमानन्द स्वरूपोऽहम् शुद्धात्म स्वरूपोऽहम् परम मंगल स्वरूपोऽहम, परमोत्तम स्वरूपोऽहम् और पटम शरण्योऽहम। ये सूत्र सुनाकर पिता ने मात्र रस्म ही नहीं की थी, वरन् नन्हें शिशु को आत्म संस्कारों की सम्पदा भी प्रदान की थी।

जो वर्तमान में विशाल वृक्ष हैं, उन्हें कभी किसी ने अंकुरित होते भी देखा होगा, किसी ने बीज भूमि में डालकर वृक्ष की कल्पना भी की होगी? वैसे ही आज लला के जनक-जननी ने जो सूत्र पिरोये थे लला की आत्मा में, वे निःसंदेह बीज ही हैं जो भविष्य में विशाल वाचनाओं के माध्यम से ग्रन्थों का रूप लेंगे। सभी ने अति उल्लासपूर्वक इस अनोखे उत्सव को देखा एवं अनुभूत किया कि जिसे प्रारम्भ से ही ''आत्म-स्वभावं-परभाव भिन्नं की भावना से परिपूरित किया गया है, वह भविष्य में क्या करेगा? इसका खुलासा मानो आज ही हो गया। क्योंकि जैसा बीज बोया वैसा ही तो फलित होगा। यही प्रतीत होता है कि ''यह शिशु भविष्य में अध्यात्म वेत्ता ! समयसार संचेता ! सद्बोध का शीतल-समीट संचारित करने वाला, आत्मशान्ति का अन्वेषक, अध्यात्म-संवाहक, अध्यात्मिक गुरु बनेगा।'' परिजनों ने आज शिशु को जिनेन्द्र देव के दर्शन ही नहीं कराये, बल्कि जिनमार्गी बना दिया था, जिनसूत्र प्रदान करके। परिजनों एवं पड़ोसियों ने बालक के भविष्य की उज्ज्वलता की खूब भावना भावित की। सभी पुरजन-परिजन लला को साथ लेकर घर पहुँचे जहाँ मामा महावीर ने परिजनों के द्वारा लाये गये उपहारों को लला के माता-पिता को प्रदान किया, जिसमें अग्रलिखित सामग्रियाँ सम्मिलित थीं। माँ के लिए नवीन वस्त्र, पायजेब, बिन्दियाँ, सुन्दर चूड़ियाँ एवं स्वाध्याय के लिए समयपाहुड ग्रन्थ की एक प्रति। यह सुविदित हो कि उस समय भिण्ड क्षेत्र में समयसार की विशेष धूम थी तथा विशेष अवसरों पर 'समयसार' जैसे ग्रन्थों को इष्ट मित्रों को प्रदान किया जाता था। मामा महावीर ने भी सभी परिजनों को यथायोग्य सामग्री का उपहार दिया था, साथ ही शिशु राजेन्द्र के लिए पालना, छोटी-सी गाड़ी, गादी, रजाई, खिलौने, घुंघरुवाली पायल और हाथों में पहनने के लिये सुन्दर सूत्रादि प्रदान किये थे। सुख का समय कैसे व्यतीत हो जाता है पता ही नहीं चलता है, वैसे ही लला का जीवन था। दिनों-दिन नवीन-नवीन संस्कारों का आरोपण करती थी माँ रत्तीदेवी एवं पिता रामनारायण जी। लला के शरीर की लालिमा भी दिनों-दिन वृद्धिंगत हो रही थी।

पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता
उत्कर्ष समूह भारत

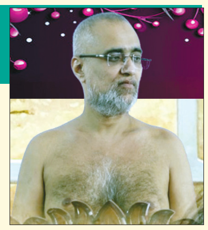
रोहित श्वेता जैन, ऋषि एवं राशी जैन
जैन जरी पैलेश गोटे वाले परिवार, इंदिरा नगर, लखनऊ

## शिशु का प्रकृति-प्रेम

अब लला अपने परिजनों से खूब परिचित हो गये थे। जब पिता चले जाते थे खेत पर और माँ व्यस्त रहती थी गृह कार्यों में तब भी लला ऊदन न करके दूसरी ही दिशा में अपने को लगाये रखते थे जैसे प्रकृति का आनन्द ले रहे हों। मन्दिर की घंटी की टनटनाहट, जयकार के नाद, मार्ग से निकलते कृषकों की वार्ता की फुसफुसाहट, कबूतरों की गुटर-गूँ चिड़ियों की चीं-ची, कौए की काँव-काँव, भोटे की गुंजाहट, पशुओं की रम्भाहट, बकरी की मैं-मैं, श्वानों की भौं-भौं, बिल्ली की म्याऊँ म्याऊँ, चूहों की चूँ-चूँ, चीं-चीं और वायु की साँय-साँय को भी सुनने के अभ्यस्त हो गये थे लला। ॠतुचक्र अपनी गति से चलायमान था, शिशिर ॠतु पूर्ण हो गई थी। बसन्त का आगमन हुआ, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त ॠतु भी पूर्ण हुई। क्रम चलता रहा, समय निकलता गया। माँ रत्तीदेवी राजेन्द्र (लला) को प्रतिदिन स्नान कराकर जिन मन्दिर ले जातीं, समय-समय पर जिनसूत्र सुनाती एवं आहार में दूध के साथ बादाम-पिस्ता घिसकर देती, कभी दाल का पानी पिलाती, तो कभी-कभी पिता रामनारायण जी लला को चुपके से फलों का गूदा भी खिला देते थे। जब लला को सर्दी-खाँसी होने लगती तो माँ रत्तीदेवी समझ जातीं थीं कि निश्चित ही इन्होंने लला को केला व अंगूर खिलाया होगा? पूछने पर लला के पिता मुस्कुराकर कहते कि हाँ, थोड़ा-सा खिलाया था, तब माँ रत्ती गुस्से में कहती, अभी लला छोटा है उसे अभी केला, अंगूर शीत करते हैं अतः आप न खिलाया करो। तब पिता कहते थे तुम चिन्ता न करो भाग्यवान, थोड़ी-सी केशर दूध के साथ दे दो सर्दी ठीक हो जायेगी। लला को कई वर्षों तक माँ ने दुग्धपान कराया था, पर फिर भी एक वर्ष डेढ़ माह के उपरान्त

विधिपूर्वक ''अन्न प्रासन्न संस्कार किया गया। माँ रत्ती घर के गेहूँ से बनी रोटी को दाल में गलाकर, तो कभी लौकी की सब्जी के साथ लला को भोजन कराती थीं तथा दिन में आवश्यकता अनुसार दूध-दलिया व फलों का रस भी देती थी। काल व्यतीत होता गया, लला दो वर्ष के हो गये, तब प्रथम बार उनके मुख से स्पष्ट शब्द निकलने लगे थे और अपनी जननी माँ को अम्मा कहकर पुकारने लगे थे।

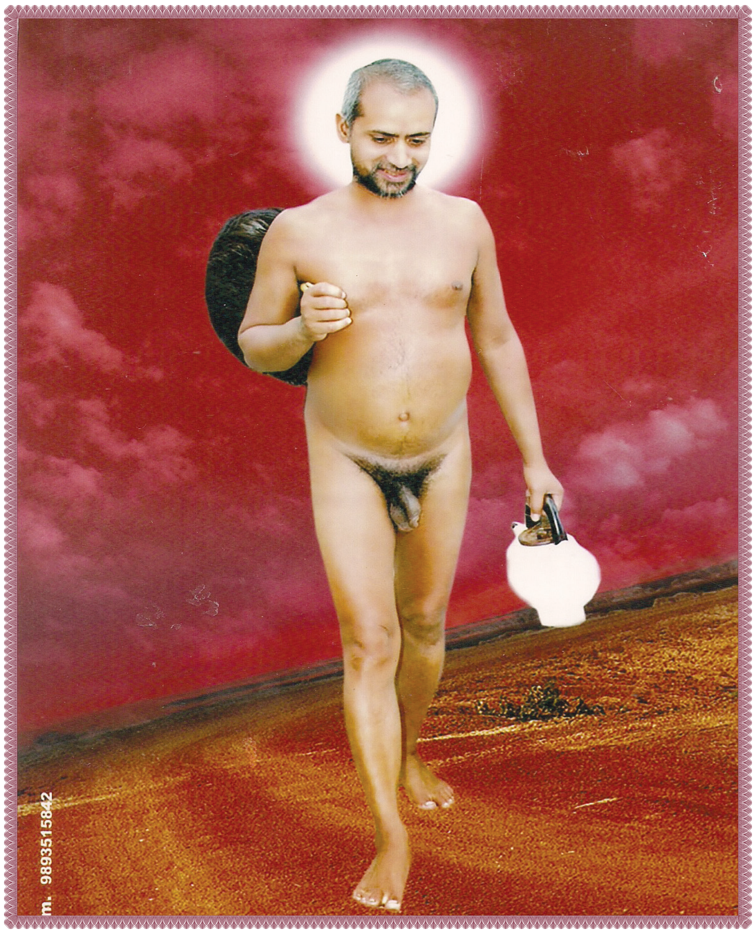


पिता रामनारायण जी लला को कुछ शब्दों का अभ्यास कराते जैसे 'भगवान की जय, णमो अरिहंताणं' आदि। पिताश्री अपने पुत्र लला का नाम लेकर आत्मीयतापूर्वक भैया कहते थे, उनके वाक्य होते थे भैया भोजन करेगा, भैया मन्दिर जायेगा? भैया राजा बेटा बनेगा? आदि। परिणाम यह हुआ कि लला (राजेन्द्र) ने अपने पिता जी को हमेशा 'भैया' कहकर ही पुकारा। माँ रत्ती अपने पुत्र को पालने में लिटाकर अनेक प्रकार से तत्व का बोध कराती थी। एक दिवस माँ ने पालने को ही लक्ष्य करके लला को उपदेश दिया। माँ बोली - ''देखो बेटा! यह पालना है, इसमें तुम सुखपूर्वक लेटे रहो, इसमें चार डोरियाँ बँधी हैं, जो इस पालने की आधार हैं, यदि एक डोर भी टूट जायेगी तो, तुम इसमें झूल नहीं पाओगे वैसे ही जिनवाणी चार अनुयोगों में विभक्त है। इन चारों अनुयोगों का सहारा प्राप्त कट संयमी साधक अपनी आत्मा में अवस्थित होते हैं।''

कुछ दिन पश्चात माँ ने लला को पाँव-पाँव चलाने के लिए काठ से निर्मित तीन पहिये की गाड़ी बनवा दी, जिसके सहारे लला चलना सीख रहे थे, तब एक दिन पिता रामनारायण जी कहते हैं कि आज यह त्रय पहिये की गाड़ी से चलना सीख रहा है, भविष्य में यह त्रय रत्नों। छ (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र) को धारण कर न जाने कहाँ-कहाँ पग बिहार करेगा।

अहो! वे नहीं जानते थे कि घर की चार दीवारों की सीमा में काठी की गाड़ी का सहारा लेकर घूमने वाला यह लाल बड़ा होकर अपने पाँवों से कई प्रदेशों की सीमा लांघ जायेगा और किसी के हाथ न आयेगा, सुबह किसी गाँव में होगी तो संध्या कहीं और। राजेन्द्र (लला) जब चार वर्ष के हुए तो स्वयं ही स्नान करके वस्त्र धारण कर मन्दिर जाने लगे थे। भोजन भी करने लगे थे अपने हाथों से। कभी-कभी तो माँ मन्दिर से न आ पाती तो लला अपनी दीदी से दूध गुड़ लेकर उदरस्थ कर लेते थे। लला को गुड़-दूध, दूध-रोटी, दूध की वासुंदी, मावे के गुलाब जामुन व फलों में पपीता बहुत पसन्द था। सब्जियों के नाम पर मात्र लौकी ही खाते थे। घर के बाग-बगीचे होने पर थी लला को मानो फल-सब्जियों व उनके रसों से परहेज ही था।

राजेन्द्र (लला) पाँच वर्ष के हो गये तो लौकिक शिक्षा के लिए रूट ग्राम में ही प्रतिदिन अपने मित्रों के साथ पैदल पढ़ने जाते थे। बरसात हो, कड़कड़ाती ठण्ड या तपती गर्मी हो, कंधे पर बस्ता टाँगकर पाँव-पाँव स्कूल जाना लला का नित्य नियम था। कभी-कभी अवकाश के दिन भी लला विद्यालय पहुँच जाते, भले ही अध्यापक न हों, परन्तु वहीं स्कूल प्रांगण में आसन जमाते और निश्चित समय तक विद्याध्ययन किया करते थे।

राजेन्द्र की उम्र अभी मात्र छह वर्ष कुछ माह की ही थी कि अनेकानेक प्रश्न उनके मस्तिष्क में जन्म लेने लगे थे, जिनका समाधान करने वे जनक-जननी एवं अग्रज इन्द्रसेन के पास जाते जो इन्हें प्रतिदिन रात्रि में विश्रांति के पूर्व महापुराण की कथाएँ सुनाया करते थे। एक दिन राजेन्द्र ने अपने अग्रज से प्रश्न किया कि क्या में भी भगवान् बन सकता हूँ?''

''बड़े भाई ने इन्द्रसेन ने उत्तर देते हुए कह दिया कि हाँ तुम भी पुरुषार्थपूर्वक भगवान् बन सकते हो।'' राजेन्द्र को जैसे अनमोल निधि मिल गई थी। रात्रि में तो राजेन्द्र अदृश्य संकल्प के साथ निद्रा में विलीन हो गये। प्रातःकाल राजेन्द्र जिन मंदिर जाने के लिये श्वेत वस्त्र धारण कर अपने पिता के साथ चल दिये और जब पिताश्री कुएं पर जल लेने गये तब-तक राजेन्द्र ने मन्दिर में कपड़े उतार दिये व निर्वस्त्र होकर वेदिका पर बैठ गये। पिता तो न आ पाए थे, परन्तु माँ वहाँ आ चुकी थी और जब उन्होंने यह दृश्य देखा तो बाल मन की अभिलाषा से परिचित हा गई, हँस पड़ी थीं, लला की आदर्श बाल-क्रीड़ा पर और पूछ लिया कि क्या कर रहे हो नग्न बैठकर वेदिका में? राजेन्द्र उत्तर देते हुए बोले ''अम्मा! आज में भगवान् बन गया हूँ।'' माँ ने समझाया, बेटा! भगवान् बनने के लिए पहले मुनिराज बनना पड़ता है, निर्दोष चर्या करनी होती है, संयम की साधना करनी होती है, तब कहीं भगवान् बना जाता है।

माँ के कहने पर राजेन्द्र ने वस्त्र तो पुनः धारण कर लिये, पर वह यह नहीं समझ पा रहे थे कि भगवान् और मुनिराज में क्या अन्तर होता है? माँ ने बहुत समझाया, अन्ततः माँ ने कहा कि मुनिराज आहार लेते हैं और भगवान् आहार नहीं लेते हैं। एक दिन राजेन्द्र पूजन करके घर आये, परन्तु विद्यालय नहीं गये और घर के पीछे मैदान में जाकर वहाँ से मोर के पंख बटोरने लगे और पंखों की एक छोटी सी पिच्छी तैयार कर घर ले आये और घर में आकर अम्मा से बोले कि आज मैं मुनि बनकर आहार ग्रहण करूंगा। मां ने पुनः राजेन्द्र को समझाया कि मुनि बनने के लिये घर छोड़कर गुरु से दीक्षा लेनी होती है।

''हम सांसारिक व्यवहार में, आपा- धापी में न तो गहराई से सोच पाते हैं और न ही सत्य को सत्य रूप में देख पाते हैं। बालकों की नित-नवीन चेष्टाओं को भी हम हँसी-हँसी में टाल देते हैं। आज जो चेष्टा राजेन्द्र ने मन्दिर में की थी वह कोई सामान्य बात नहीं थी, क्योंकि हम यदि किसी छह वर्ष के बालक का हाथ पकड़कर पूछें कि मुनि बनोगे? तो वह तुरन्त हाथ खींचकर दूर खड़ा हो जाता है। वहीं अल्पवय में लला की मुनि व भगवान बनने की चेष्टा उसके अन्तस्थ विचारों की ही परिचायक थी। कोई भविष्य-दृष्टा वहाँ होता तो शायद बता देता लला का भविष्य।'' सुसंस्कारित और धार्मिक राजेन्द्र तत्परता से विद्यार्जन करते रहे व स्वप्रेरणा से स्वाध्याय, पूजन, अभिषेक व संयम साधना के नवीन सोपानों को भी प्राप्त करते गये, किन्तु खेल-कूद से दूरी बनाये रखी। एक दिन माँ ने स्नेहपूर्वक पूछा-लला! तू अन्य बच्चों के साथ खेलने क्यों नहीं जाता? तब लला बोले - माँ तुमने ही तो बताया था कि जिसके हाथ-पैर टूटे होते हैं या अंग-भंग होते हैं वे मुनि नहीं बन सकते हैं इसलिए मैं खेलने नहीं जाता हूँ, क्योंकि मुझे मुनि बनना है। लला हमेशा अपने में रहते थे। लला पर यह कहावत लागू होती है कि ऊधो का न लेना न माधौ का देना' अर्थात् जगत् के समस्त झमेलों से भिन्न रहना।

## मुनि सिद्धार्थ सागर जी

# युवाओं के प्रेरणापुंज आचार्य विशुद्ध सागर

इक्कीसवीं सदी के एक दूर दृष्टा, युवाओं के प्रेरणापुंज, आध्यात्मिक प्रवचनों के सफल प्रस्तोता, आलौकिक व्यक्तित्व एवं विराट कृतित्व के धनी, वीतरागी श्रमण संस्कृति के आध्यात्मिक सद्गुरू दिगम्बराचार्य का नाम है - अध्यात्मयोगी विशुद्ध सागर जी। उगते यौवन के युवाओं को अध्यात्म की ओर अग्रसर कर उनकी सुप्त मानवीय चेतना को पुनर्जाग्रत कर, जीवन मूल्यों और अहिंसा का दिव्य अवतान देने वाले अग्रदूत हैं पूज्य श्री।

आप टूटती आस्थाओं को जोड़ने वाले महयोगी हैं। जन-जन को उन्मार्ग से सन्मार्ग बताते वाले श्रेष्ठ संन्यासी हैं। आध्यात्मिक चर्या के प्रतिपालक अध्यात्मयोगी हैं। चर्चा में नहीं चर्या में रहते हो इसलिए चर्या शिरोमणि हो। अध्यात्मपंथी आत्मा के सच्चे आत्मान्वेषी हैं। पतितों को पावन पथ प्रदर्शित करने वाले प्रत्यग् आत्मदर्शी हैं। जगत को प्राणी मात्र अहिंसा, अनुकम्पा का बोध देने वाले 'सिद्धार्थ तनय' के समान हैं। धरती पर चलते-फिरते धरती के देवता हैं। सभी को ज्ञान का प्रकाश देने वाले ज्ञानाचार्य हैं। सभी जीवों के लिए प्रियवचनों से संबोधित करने वाले देशनाचार्य हैं आप। आत्मस्वभावं परभाव भिन्नं। इस आध्यात्मिक सूत्र पर जीवन जीने वाले आप वह साधक हैं जिन्होंने अल्पवय में भगवत् श्री कुन्दकुन्द के वाङ्मय, खासकर समयसार के रहस्यों को उद्घाटित कर विश्व को चमत्कृत कर दिया है। आप अंतिम तीर्थेश तीर्थंकर महावीर स्वामी की शुद्ध-विशुद्ध पूत-परम्परा में हुए श्री आदिसागर अंकलीकर महाराज की अदूषित सु-संस्कृत, शुभंकर, वरेण्य श्रृंखला के आत्मानुशासक, प्रभावक प्रवचनकार एवं आत्म साधक हैं। आप अमल-विमल, विशुद्ध-शुद्ध श्रमण संस्कृति के वीतरागी, निर्ग्रन्थ सन्यासी हैं। आपका जितना विपुल व्यक्तित्व है, उससे कहीं कुछ अधिक कृतित्व भी अद्भुत है।

उत्कर्ष समूह भारत

पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता

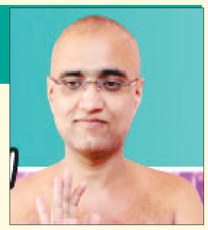

श्रीमती कमला काला, पुत्र-वैभव, गौरव काला, पुत्रवधु-दीक्षा, शिवी काला एवं परिवार, लखनऊ

- **भोग भूमि में क्रियात्मक धर्म वहाँ नहीं है, सम्यकदृष्टि तो वहाँ है लेकिन क्रियात्मक, आयतनात्मक, देव-शास्त्र-गुरु आत्मक, चारित्रात्मक धर्म नहीं होता क्योंकि वहां का वातावरण ही ऐसा है कि वहां संयम नहीं पाल सकते, बस वो मंद कषायी जरुर होते हैं। वहाँ धर्म नहीं होता तो अधर्म भी नहीं होता, अहिंसा नहीं है तो हिंसा भी नहीं है।**
- **समवशरण में भगवान एक ही भाषा में बोलते हैं लेकिन उनकी दिव्यध्वनि जिन कानों में पड़ेगी वो उनको उसी भाषा में समझ आती है। बच्चों को बच्चों की, बूढ़ों को बूढों की और पशुओं को पशुओं की भाषा में समझ में आएगी।**
- **महान आत्माओं का कोई एक अंग ही नहीं देखना चाहिए, जब अपन भगवान की नासा दृष्टि देखें तो अलग भाव आएगा, जब पद्मासन देखेंगे तो अलग भाव आएगा, जब श्रीवत्स का चिन्ह देखेंगे तो अलग भाव आएगा। जब छत्र का श्लोक पढ़े तो छत्र, चरणों का छंद कहे तो चरणों की महिमा है।**

**- मुनिपुंगव सुधा सागरजी**

# सर्वोत्कृष्ट समाधि साधक के ज्येष्ठ व श्रेष्ठ सुशिष्य का पट्टाचार्य महामहोत्सव

**मुनि विवर्धनसागर जी, बावनगजा**

**(शुशिष्य-गणाचार्य विराग सागर जी )**

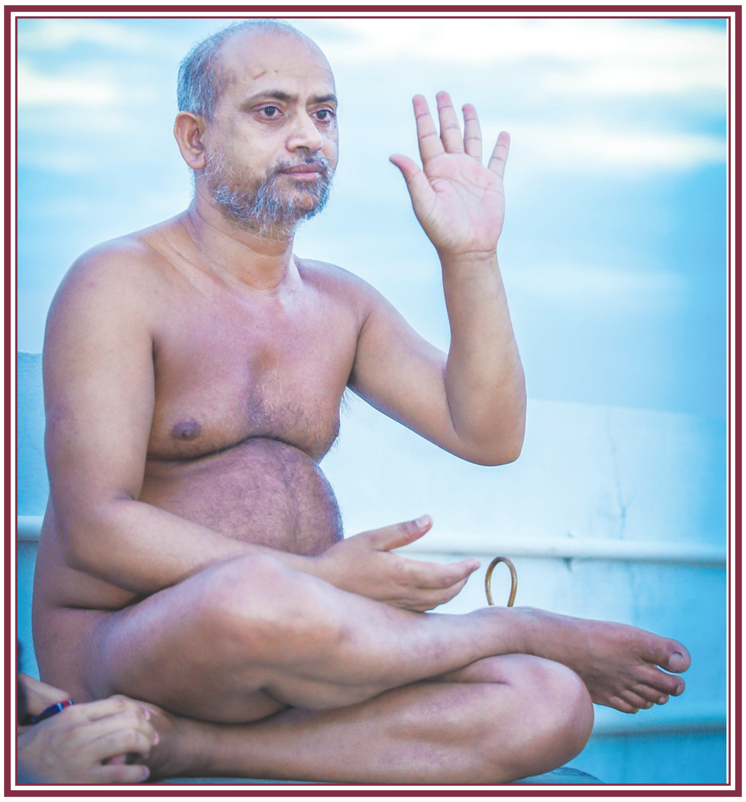

जिनशासन में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प. पू. एकता रूप रत्नत्रय स्वरूप को ही आचार्य उमास्वामी जी ने मोक्षमार्ग कहा है। मात्र बाह्य वसन का त्याग रत्नत्रय की प्राप्ति नहीं, अपित बहिरंग स्वरूप के सद्भावपूर्वक अंतरंग निर्मल परिणति, विकारी भावो का परिव्याग रत्नमय की उपलब्धि है।

साथ के प. पू. युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, सर्वोत्कृष्ट समाधि गरुदेव गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महामुनिराज ने प. पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर जी व प. पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमल सागर निमित्त पाकर उस परम रत्नत्रय स्वरूप किया। कहा जाता है कि -

पूत के गुण पालने में ही दिखने लगते हैं।''

प. पू. गुरुदेव के गुणों को देखकर ही प. पू. आचार्य भगवन श्रीविमल सागर जी ने दीक्षा प्रदान करते समय मंच से घोषणा की थी कि यह होनहार शिष्य मुनि विरागसागर भविष्य में आगे अनेकानेक साधकों को दीक्षा देकर विविध प्रतिभाओं को धारण करते हुए आत्म कल्याण करेगा।

वर्तमान में प. पू. सिद्धांतरत्न गुरुदेव गणाचार्य श्री विराग सागर जी को स्मरण करते है तो विभिन्न प्रतिभाओं का दिग्दर्शन होता है -

1. 248 दीक्षा प्रदान कर श्रमण संस्कृति को ऊँचाईयाँ प्रदान करने वाले 600 शिष्यों के कुशल आचार्य।

2. 147 सम्यकों के सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण की साधना के श्रेष्ठ निर्यापकाचार्य।

3. सर्वोदया, रत्नत्रयवर्धिनी श्रमण प्रबोधिनी व श्रमण संबोधिनी संस्कृत टीकाओं, शास्त्रसार समुच्चय चूर्णीसूत्र, प्राकृत-संस्कृत भक्ति स्तोत्र, जलविन्दु महाकाव्य, 18 लिपियों के महान सृजेता।

4. विभिन्न प्राचीन तीर्थों का जीर्णोद्धार व विकास।

5. विरागोदय तीर्थ पथरिया में नूतन सुंदर तीर्थ की रचना व ऐतिहासिक प्रभावना पूर्वक 81 पंचकल्याणक प्रतिष्ठा व गजरथ।

6. संपूर्ण देश में 1 लाख किमी. की यात्रा कर समाज को तोड़ने नहीं, अपितु जोड़ने का महान कार्य।

7. अहिंसा-व्यसन मुक्ति शाकाहार बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ व स्वच्छता अभियान द्वारा 40 लोगों को संदेश/संकल्प।

8. युग प्रतिक्रमण की प्राचीन पद्धति की पुनः स्थापना करते हुए जयपुर, झांसी व विरागोदय तीर्थ पथरिया में विशाल संघ सानिध्य में संपन्न युग प्रतिक्रमण, यतिसम्मेलन के विशाल व भव्य आयोजन द्वारा ऐतिहासिक धर्म प्रभावना।

9. आचार्य, उपाध्याय, स्थिविर गजधर, यह पंच यह तथा गणिनी पद योग्य शिष्यों को प्रदान कर आगामिक प्राचीन पद्धतियों का प्रवर्तन।

10. श्रेष्ठ सर्वोत्कृष्ट समाप्ति साधक- ऐसे प. पू. राष्ट्र संत, भारत गौरव गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के अनेकानेक शिष्यों में ज्येष्ठ, गंभीर, प्रभावक, अध्यात्म रसिक, न्याय-सिद्धांत- अध्यात्म- अध्यात्म ग्रंथों के श्रेष्ठ ज्ञाता, वस्तुत्व महाकाव्य दीर्घ प्रथम श्रृंखला के विजेता प. पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महामुनिराज हैं जो भारत देश के नगर-नगर, प्रांतों-प्रांतों में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा की अविरल श्रृंखला द्वारा निरंतर महती धर्म प्रभावना कर रहे हैं। अध्यात्म रस से ओतप्रोत वाणी का रसपान कर सभी आपकी अँगुली पकड़ धर्म मार्ग पर अग्रसित हो जाते हैं, यही कारण है कि वर्तमान श्रमण संस्कृति के उन्नयन में नवीन युवा पीढ़ी को सम्यक दिशा प्रदान करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपके सन् 2000 के सागर वर्षायोग में आपकी वाली का रसपान कर मोक्षमार्ग पर अग्रसित होने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ भार के अल्प संयोग के क्षणों में जो आपने सम्यक दिशा प्रदान की, उसका सदैव कृतज्ञ रहूँगा। उस समय आपकी भी श्रेष्ठ गुरु भक्ति का दिग्दर्शन होता है कि आपने प्राप्त मुझे चेतन परिग्रह को निस्वार्थ भाव से अपने गुरुदेव प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी को सौंप दिया। प. पू. चारित्र शिरोमणी गणाचार्य श्री विराग सागर जी महामुनिराज का सदैव- सदैव उपकारी रहूंगा कि 23 वर्षो तक आपकी चरण सन्निधि में रहते हुए निरंतर आपसे विविध प्रकार की शिक्षाओं को करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प. पू. गुरुदेव ने मात्र पुस्तकीय विद्या को महत्व नहीं दिया, अपितु उसे आचरण में लाने की शिक्षा भी प्रदान की। एक ओर किशमिश के समान सरल स्वाभावी रहे तो दूसरी ओर शिष्यों को विसंगतियों से दूर रखने हेतु नारियल के समान कठोर व श्रेष्ठ अनुशासक भी रहे।

प. पू. गुरुदेव निस्पृही संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की इन्हीं श्रेष्ठ शिक्षाओं, गुणों व अनुशासन का प्रभाव है कि प. पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी के समान श्रेष्ठ सुशिष्य रूप सुंदर चेतन कृति संपूर्ण समाज व देश के लिए प्राप्त हुई जिनको पाकर संपूर्ण राष्ट्र आज गौरवान्वित है तथा प. पू. गणाचार्य गुरुदेव ने अपनी आयु का अवसान काल निकट जानकर 1 दिन पूर्व ही अपने अंतिम उपदेश में आपको अपने उत्ताधिकारी के रूप में घोषणा करके, अपने आचार्य पद का त्याग कर सभी के प्रति क्षमा भाव व्यक्त करते हुए यम सल्लेखनापूर्वक समाधिमरण को प्राप्त किया था। ऐसे श्रेष्ठ शिष्य प. पू. आचार्य श्री विशुद्धसागर जी के पट्टाचार्य महामहोत्सव का कार्यक्रम 27 अप्रैल से 2 मई तक सुमति धाम इंदौर में आयोजित किया जा रहा है। संपूर्ण कार्यक्रम की ऐतिहासिक व भव्य रूप से आयोजना के मंगलमय समाचार पाकर संपूर्ण मूलसंघ के शिष्यगणों को हार्दिक प्रसन्नता व हर्ष है तथा प.पू. आचार्य श्री विशुद्धसागर जी भी प. पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज की आज्ञानुसार विराग वाटिका के सभी शिष्य-प्रशिष्यों के रत्नत्रय आराधना में निरंतर सहयोगी बनते हुए इसी प्रकार से धर्म प्रभावना करते रहें, यही भावना है। अंततः ऐसे महान प. पू. समतामूर्ति गणचार्य श्री विराग सागर जी महामुनिराज व प. पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी महामुनिराज के चरणों में बारम्बार नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

# नमोस्तु शासन उद्घोषक! तुम्हें नमन!

**- श्रमण सुप्रभ सागर, पार्श्वोत्कर्ष तीर्थ, मोहखेड़, छिंदवाड़ा (म. प्र.)**

क्या लिखूं, कैसे लिखूं? यह बहुत बड़ा प्रश्न है और प्रश्न होना भी स्वाभाविक है क्योंकि जिनके बारे में लिखना है उनका व्यक्तित्व शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। भावना और विचारों की तरंगें इतनी उठ रही हैं कि जिसका आदि-अंत नहीं पा रहा हूं पर लिखना भी जरूरी है क्योंकि वही मेरे लिए सुनयनपथगामी बने हैं, मेरे जीवन में अनेक लाभ हुए पर सुव्रतों का शुभलाभ रूपी सुप्रभात उनके ही पारस रूप स्पर्श से हुआ। सच कहूं तो यूं मुझमें उनके सुयश के गुणगान करने की शक्ति किंचित भी नहीं है परन्तु यह तो उनके प्रति भक्ति और उनकी ही कृपा है कि मेरी लेखनी उनके बारे में मृत शब्दों से अमृत गाथा लिखने जा रही है। जी हां! मैं उन्हीं के बारे में लिखने जा रहा हूं जो आज किसी पहचान या प्रशंसा के मोहताज नहीं हैं, ऐसे हैं वे ज्येष्ठ श्रमणाचार्य।

सम्प्रतिकाल में आचार्य दीर्घा में अल्पायु में ही अपनी साधना से शिरमौर बनने वाले वह युवा दिगम्बराचार्य।

गुरू की चर्या के नाम पर समस्त देशवासियों के मुख से निकलने वाला एक मात्र चर्चात्मक नाम वह हैं - चर्या शिरोमणि।

सागर और अनगार के लिए वर्तमान में जो समत्व के सुमेरू बने, ऐसे वह उत्तम पुरुष - संयम पुरुषोत्तम।

अपनी सुरभित मैत्री से देश की तरूणाई को जो धड़कन बने हैं, ऐसे हैं वह वात्सल्यमूर्ति। मात्र श्रावक के लिए ही नहीं, श्रमणों के लिए भी जो आदर्श मार्गदर्शक हैं, वह आदर्श श्रमणाचार्य।

शास्त्री-विद्वत् परम्परा को प्रकृत में अपनी नई सोच से निःशब्द करने वाले वह सत्यार्थ बोध प्रदायक।

आत्मा को नायक बनाकर वस्तु स्वरूप को शब्दों में घोलकर द्वादश खण्डों में लिपिबद्ध कर वागाड. पिलाने वाले वस्तुत्व महाकाव्य प्रस्तोता।

शताधिक ग्रन्थों के देशनाकार होने पर भी अपने निःसंग, निर्द्वन्द भावों में जीने वाले निर्ग्रंथ प्रत्य-आत्मदर्शी।

निर्माण नहीं, निर्वाण का पथ पंचमकाल में पंचाचार के पालन से प्रदर्शित करने वाले वह आचार्य, जो हैं - अर्द्ध शताधिक श्रमण शिल्पी।

लाखों किलोमीटर की चतुर्दिक पद यात्रा कर साधिक छह खण्डों में लगभग एक सौ पचास पंचकल्याणकों में भी सूरिमंत्र प्रदाता आधुनिक चक्रवर्ती आचार्यरत्न।

आगम के तलस्पर्शी अध्ययन से बने श्रुतसंवेगी, आप जैन विद्या के सुप्त विशुद्ध सूक्तियों को खोजकर जनभाषा में प्रस्तुत करने वाले 'जो है सो है' सिखाने वाले हैं नमोस्तु शासन उद्घोषक! तुम्हें नमन!

भूमि का ज्ञान कराते-कराते भूमिका बनाकर अध्यात्म की घुट्टी पिलाने वाले ही नहीं अपितु अध्यात्म में जीकर जोकर बनने से बचाने वाले - हे अध्यात्मयोगी! तुम हो सबसे अलग।

न्याय (लड़ाई) व अन्याय से बचने की कला गूढ़ न्याय ग्रंथों से प्रदान करते हुए देश-विदेशों में जिन शासन का डंका बजाने वाले तार्किक वाक्पटुता से एकान्त मतों का अन्त करने वाले आप वर्तमान के समन्तभद्र।

तीर्थंकर उवाच को गुरू वचनं प्रमाणं मानते हुए चित्र-विचित्र बातें करने वालों के साथ भी प्रसन्न मनः हो। धर्म प्रभावना करने, अपनी वंडरफुल वाणी से जैनिज्म समझाकर आगम सिन्धु का वैभव बढ़ाने वाले सौम्यमूर्ति अनगार अधिनायक आप ही हैं - अभिजात आचार्य।

सम-विषम परिस्थितियों में भी गुरू आज्ञा-समर्पण की सर्वप्रथम कहने वाले ही नहीं अपितु करके दिखाने वाले सदैव गुरू चरणों में प्रणत रहने वाले, गुरू जैसा करे, वैसा करे नहीं अपितु गुरू जैसा कहें सिखाने वाले गुरू की हर कसौटी पर खरे उतरने वाले आप और आपकी विनय ने आपको गुरू गणाचार्य विरागसागर जी का उत्तराधिकारी पद गुरू की समाधि के पूर्व गुरू मुख से घोषित होने से आप गुरू शिष्य परम्परा के स्वर्णिम इतिहास के रियल हीरो - हे श्रेष्ठ विष्योत्तम।

मेरे जीवन में नई सोच दे, मेरे अहम्-वहम् रूपी श्रम को दूरकर मैं ज्ञाननंद स्वभावी हूं, मैं भगवान आत्मा हूं बताते हुए स्मार्ट जीवन को, स्मार्ट व्हीहन दे मेरे संयम जीवन को स्टार्ट करने वाले, फेक नहीं, नेक जिन्दगी के प्रदाता, सुप्रवचन करना सिखाने वाले, पंचमगति के पूर्व पंचमकाल में स्वर्ग का सोपान दिखाने वाले, सुगुरू विशुद्धाष्टकम् व सदुरू जन स्तोत्र के नायक, स्वंयभू स्तोत्र का उवाच कराने वाले, दीक्षा-शिक्षा, संयम, तप देकर मेरा जीवनोत्कर्ष करने वाले, मुझे सुप्रभ बनाने वाले, मम-भो आदर्श गुरोत्तम!

श्री आदिसागर अंकलीकर की आदि परंपरा को वर्तमान में महावीर की कीर्ति समान विमल करने वाले सन्मति प्रदाता ज्येष्ठ-श्रेष्ठ-योग्य विरागसुत-पट्टाचार्य विशुद्धसागर जी! इसलिए तुम्हें नमन!

उपरोक्त उपमाऐं, अनुपमेय विशुद्ध गुरू को देना योग्य नहीं है, वे उन्हें परिभाषित नहीं कर सकतीं क्योंकि मैं जानता हूं कि सब उपमाऐं, विशुद्ध अनुपमेय को छोटा ही करती हैं पर जैसे राजा के साथ होकर भी रानी अलंकार रहित होकर शोभा को प्राप्त नहीं होती, उसी प्रकार लेखन श्री अलंकार (उपमा) से रहित विद्वज्जनों में शोभा को प्राप्त नहीं होगा, इसलिए इस विशुद्ध अनुपमेय को अलंकृत करने का अल्प प्रयास जो अनागत काल में इस विशुद्ध अनुपमेय को उपमाओं का जनक या इसी अनुपमेय को उपमाओं में प्रमाणित कर सार्थक होगा। मुझ जैसे हिन्दी अज्ञ की त्रुटियां ज्ञानी भाषाविद् अग्रज-अनुजों के लिए प्रमेय नहीं हो सकती क्योंकि वह सर्वज्ञ बनने वाले धर्मज्ञ हैं, मुझ सम अल्पज्ञ नहीं।

यह लेखन मुझे ज्ञान से विद्या, विराग से विशुद्ध भावों तक पहुंचाने के निमित्त बनते हुए, आयोजक, सहभागी, सहयोगी, निवेदक एवं पुण्यार्जकों को अधिक पुण्य संचय करा दे, सभी अपने जीवन समूह का उत्कर्ष करें, यही सु-भावना प्रभु-गुरू चरणों में प्रणतभावों के साथ समर्पित......मिलने वाला हर जीवन....जीवन की हर श्वांस...बस, गुरू तुम्हें ही समर्पित।

**-: पुण्यार्जक एवं नमनकर्ता :-**

**Chandraprakash Gopiram Jejani**
**8, Chandak Comound Ghat Road,**
**Nagpur-440018 (Maharashtra)**
**Mo. 9422101280**

# हे ज्ञानमूर्ति, हे तपोमूर्ति : शत शत वंदन

**- प्रवर्तक मुनि श्री सहज सागर, संघस्थ, -अन्तर्मना संघ**

अनंतकाल से प्रवाहमान चतुर्विंशति तीर्थंकर परम्परा में वर्तमान अवसर्पिणी काल मे आदि तीर्थंकर आदिनाथ से लेकर वर्तमान जिनशासन नायक भगवान महावीर स्वामी तक श्रमण परम्परा, तीर्थंकरों व उनके चतुर्विध संघ के माध्यम से सतत प्रवाहमान रही है। प्रभु महावीर के निर्वाण के पश्चात् भी वर्तमान 20 वीं 21 वीं शताब्दी में श्री आदिसागर, आचार्य श्री शांतिसागर जी की पट्टपरम्परा से खूब धर्म प्रभावना हो रही है।

श्री आदिसागर, आचार्य श्री महावीर कीर्ति, आचार्य श्री विमल सागर जी की परम्परा में बुंदेलखंड के प्रथम दिगम्बराचार्य के रूप में आचार्य श्री विरागसागर जी हुये जिन्होंने भी चतुर्विध संघ का गठन व साहित्य सृजन द्वारा इस परम्परा को अपना महत योगदान दिया। अनायास ही वर्ष 2024 में अपनी समाधि निकट जानकर उन्होंने अपने शिष्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी को अपनी विशाल चतुर्विध संघ परम्परा का पट्टाचार्य स्वमुख से घोषित किया व निर्विकल्प समाधि अंगीकार कर महाप्रयाण किया।

कृश काय होते हुये भी आचार्य श्री विशुद्धसागर जी ज्ञान व तपो शक्ति के महान धारक हैं। उनका ज्ञान सूर्य सम अंधकार का नाश करने वाला है, जिसका साक्षात प्रभाव हम सब उनकी अनेकानेक देशना ग्रंथों के माध्यम से अनुभूत कर ही रहे हैं। ये उनकी ही शैली का निर्विवाद प्रभाव का असर ही है कि भटके हुये मुमुक्षुओं ने उनकी देशना से पुनः मूल परम्परा को स्वीकार किया, जो उनकी चंद्रमा सम शक्ति शीतलता प्रदायक साबित हुआ है। उनकी तपोशक्ति व उनके सुचारित्र का ही ये प्रभाव दिखलाई पड़ रहा है कि वर्तमान भौतिकवादी युग में भी बहुसंख्या में आधुनिक शिक्षित युवावर्ग ने उनसे दीक्षा अंगीकार कर मोहमार्ग को त्याग कर मोक्षमार्ग को अंगीकार किया है। चेतन तीर्थों के निर्माण के साथ ही आचार्य श्री ने अचेतन तीर्थों का भी सृजन किया। वह सागर सम गंभीर हैं तो नई सूक्तियों के सृजक भी। ''जो है सो है'' आत्म स्वभावम पर भाव भिन्नम'' जैसे वाक्य जब कोई छोटा बच्चा भी बोलता है तो मन आनंद से भर जाता है। 2006 से कम्बदहल्ली से जब से मैं उनके संपर्क में आया व उनका कृपापात्र बना तभी से मैं उनकी संगोष्ठियों का हिस्सा रहा जिसके फलस्वरूप एक ओर तो मुझे उनके विपुल सृजित साहित्य के अध्ययन का अवसर मिला वहीं दूसरी ओर उनकी चरणरज अपने मस्तक पर लगाकर अपने चारित्र मोहनीय कर्म की निर्जरा का सुयोग भी बना। 2023 में गुरुदेव अन्तर्मना श्री प्रसन्न सागर जी से सुशील से सहज सागर की यात्रा सम्पन्न होने में मेरी विशुद्धि परिवर्धित करने में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी का महत योगदान रहा है।

उनके पट्टाचार्य पदारोहण के सुमांगलिक अवसर पर भक्तिपूर्वक उनके चरणों में नमोस्तु अर्पित करते हुये वंदन नमन करता हूँ। वह अपने संघ का तो निर्वहन करेंगे ही अपितु आज पूर्ण श्रमण परम्परा उनके ज्ञान व वैराग्य शक्ति की ऊर्जा से अपने को शक्तिशाली बनाने हेतु प्रतीक्षारत है। वर्तमान में संतवाद/पंथवाद, वात्सल्य के अभाव से उत्पन्न विभिन्न परिस्थितियों में आज पुनः किसी कुन्दकुन्द/शांतिसागर जी की आवश्यकता प्रतीत हो रही है जिसके लिए सबकी निगाहें स्वतः ही आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी की ओर देख रहीं हैं। वीर प्रभु से प्रार्थना, कामना कि पदारोहण के बाद वह सम्पूर्ण दिगम्बर श्रमण परम्परा को एक नई ऊर्जा, नई शक्ति, नये आयाम प्रदान करने में समर्थ हों।

कोटि कोटि नमोस्तु आचार्य श्री। अपना वरद हस्त/आशीर्वाद/वात्सल्य बनाये रखें।

# पुण्य फला अरिहंता

**- आचार्य विहर्ष सागर जी**

पुण्य का फल क्या है! पुण्य से अरिहंत पद की प्राप्ति हो जाती है! सारे ब्रह्मांड में सबसे कीमती चीज है तो पुण्य है। 2 मई 1963 को दमोह पथरिया ग्राम में कपूर चंद्र जी के घर में एक सूर्य का उदय हुआ उस सूर्य का नाम आचार्य विराग सागर के नाम से जग में प्रसिद्ध हुए। इस सूरज ने अपनी 247 किरणों से एक विराग वाटिका को तैयार किया।

इस वाटिका में सभी जाति के सुंदर सुंदर पुष्प खिल रहे थे वो सभी पुष्प अपनी महक से सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। विराग वाटिका का एक पुष्प अपनी सौम्यता से सहजता से अपने ज्ञान से अपनी पीयूष वाणी से धर्म की महती प्रभावना कर रहा था। इस पुष्प का नाम आचार्य विशुद्ध सागर रखा। इस पुष्प ने लगभग 70 साधक को मोक्षमार्ग में दीक्षा देकर एक विशुद्ध वाटिका का निर्माण किया, इन्होंने धर्म की एवं अपने गुरुजी ओर अपने पद की गरिमा का परचम दसों दिशाओं में फैला दिया। अकस्मात 4 जुलाई 2024 को गणाचार्य श्री विराग सागर जी महामुनिराज ज्ञानाराधना का फल लेते हुए एवं चेतन अवस्था में अपने संघ को आशीर्वाद देकर और अपने आचार्य पद को अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ शिष्य को अपना उत्तराधिकारी के रूप मे प्रथम पट्टाधीश विराग परम्परा के रूप में अपना पद संपूर्ण संघ चेतन व अचेतन वैभव विशुद्ध हाथों में सौंपकर अपनी देह का त्याग किया। अहिल्या देवी की भूमि इंदौर में सुमति धाम में 30 तारीख अप्रैल 2025 को संपूर्ण ससंघ की साक्षी में एवं विद्वतगण एवं समाज के प्रतिष्ठित गणमान्य के लोगों की साक्षी में उन्हें गणाचार्य पद से सुशोभित किया जायेगा। ये हम लोगों को गौरव की बात है हमारे बड़े भाई को बड़ी जिम्मेदारी दी जा रही है हम सभी आपके साथ हैं एवं बहुत खुशी भी है, इसलिए हम लोग 18 साधु संघ को लेकर इंदौर की ओर विहार कर रहे हैं। मेरे बड़े भाई अब आपको विशुद्ध वाटिका के साथ विराग वाटिका का भी ध्यान रखना है, इन्हें संभालना है। बड़ा भाई पिता तुल्य होता है। आपके चरणों में त्रयभक्ति सहित नमोस्तु। आप चिरायु हों, शतायु हों, तुमको हमारी उम्र भी लग जाए। अब आप हमारे बनवारी है। इस वाटिका में ज्ञानामृत का सिंचन करते रहें। हम सब हरे भरे रहें, जिन शासन की खुशबू बिखेरते रहें।

# आत्मीय साधर्मी आत्म साधक विशुद्ध सागर

**- आचार्य पुष्पदन्त सागर**

प्रतिवन्दना अन्धेरी रात में आशा के दीप जलाये बैठें है, विशुद्ध सागर हृदय ज्ञान वीणा को झंकृत करने वाले निर्ग्रन्थ आत्मसाधक हैं। आत्म पिपासुओं की प्यास बुझाने वाले सागर हैं, आत्मा-साधना के परमहंस हैं, गुरू को जिसने जाना है, सबको धर्म से जोड़ा है, वो अपने गुरू के हृदय की तरंग है इसलिए गुरू का पद, गुरू का स्थान, गुरू का अभाव आप पूरा करेंगें, यह मेरी भावना है तथा समस्त संघ का दिग्दर्शन आपको करना है, मैं आपके साथ हूं।

# परहित में लगना दुर्लभ है, उससे भी दुर्लभ है परहित के साथ ही आत्महित में प्रवृत्त होना

**- श्रमणाचार्य विनिश्चयसागर**

परहित और स्वहित में भिन्न-भिन्न रूप से प्रवर्तमान अनेक प्राणी इस धरा पर हुए हैं और होंगे परन्तु स्वहित के साथ परहित का अथवा परहित के साथ स्वहित का महासंगम अत्यन्त विरल है और विरलों में ही प्राप्त होता है। संयम सुमेरू, समाधि सम्राट, युगसूर्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी गुरूदेव और ऐसे ही महासंगम के स्थान थे, जो उभयहित के विचारों और कार्यकलापों के श्रेष्ठतम साधक बनकर इस वसुंधरा को अनुप्रणित कर गए। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन अभयहित के लिए जिया और जीवनान्त में भी स्वात्मा के साथ ही उन सभी परात्माओं के लिए कल्याण की व्यवस्था दे गए, जो उनकी निश्चलमूर्ति को हृदय में प्रतिष्ठ कर श्रद्धापुष्पों के अर्घ्य प्रतिदिन समर्पित करते हैं।

उनके अन्तिम सन्देश और संयमित समाधि के पीछे के भावों को इकट्ठा करके मूर्ति बनाई जाए तो एक 'निर्लिप्त साधक' की दिव्य और भव्य प्रतिमा दिखाई देगी, जिसे न पर्याय से राग था, न ही पर्यायानुरागियों से। जीवन से अधिक संयम और संयमियों की चिन्ता थी इसलिए सबकी चर्या-परिचर्या अनुशासन आदि व्यवहार के परिपालनार्थ अग्रज श्रेष्ठ, मनोज्ञ, श्रमणाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी को उत्तराधिकारित्व में अपना संघ और दायित्व सौंपकर, संयम के साथ वीर समाधिमरण किया। उनकी अन्तिम आज्ञा के रूप में हमारे समादरणीय श्रमणाचार्य विशुद्धसागर जी को हम सभी, गुरूदेव के उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकारें, उससे ही हमारे सम्पूर्ण संघ की एकता-अखण्डता का सूत्र संचालित होगा। ऐसा गणाचार्य गुरूदेव के प्रत्येक शिष्य को स्वीकार होना चाहिए।

# एक विशुद्ध आचार्य

**- आचार्य प्रज्ञासागर जी महाराज**

भगवान महावीर स्वामी की श्रमण परम्परा साधुओं के उज्ज्वल चरित्र एवं आगमिक ज्ञान से निष्कलंक है। साधुओं ने अपनी साधना करते हुए अपने ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग के माध्यम से जिनशासन की महती प्रभावना की है और कर रहे हैं। यह क्रम पंचमकाल के अंत तक चलता रहेगा। बीसवीं सदी में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज, मुनिकुंजर श्रेष्ठ श्री आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर) और उत्तर भारत के महान आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी) की आचार्य परम्परा प्रवाहमान है। आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज, श्री आदिसागर जी महाराज की परम्परा के एक विशुद्ध आचार्य हैं जो अपनी विशुद्धचर्या एवं चर्चा के माध्यम से जिनशासन को जीवंत कर रहे हैं। आपके माध्यम से माँ सरस्वती का भंडार दिन प्रतिदिन समृद्ध हो रहा है। आपके जिनशासन पर महत उपकार हैं। आपके गुरु आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने समाधि से पहले आपको अपने विशाल संघ का नायक नियुक्त करते हुए पट्टाचार्य बनाने की घोषणा करके आपकी योग्यता का सम्मान किया। हकीकत में आप इसके हकदार थे, इसलिए आपको आपके गुरु ने यह दायित्व दिया है। आज मैं आपके पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव के अवसर पर उपस्थित होकर अभिभूत हूं, मेरी अनंत शुभ कामनाएं आपके साथ हैं। मेरा प्रति नमोस्तु स्वीकार करें। नमोस्तु...नमोस्तु...नमोस्तु !

पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता

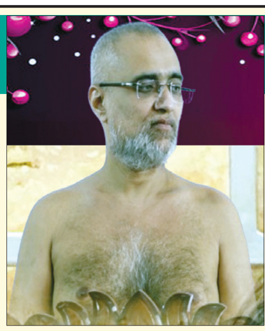

उत्कर्ष समूह भारत

Ar. VISHAL JAIN
(Principal Architect)
B.Arch., M.Arch.
Immediate Past Chairman
(IIID LUCKNOW CHAPTER)

NIRVANA
Consultants & Engineers
Architects, Interior Designer, Engineers
Approved Valuer & Vastu Consultants

Add. : 221A, IInd Floor, Sahara Shopping Centre, Ayodhya Road, Lucknow-16 Tel : 0522-4010638, 9415197072, 9335496852
E-mail : vishal.nirvana@gmail.com Website- www.nirvanacons.com

➩ हम कुछ नहीं जानते कि भगवान क्या कह रहे हैं, बस इतना पक्का है कि जिनेंद्र देव अन्यथावादी नहीं होते।

# आत्मानुशासन प्रिय

**- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी**

**(संघस्थ - तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर, सुनील सागर जी)**

आत्मानुशासन प्रिय प. पू. आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज आपकी देशना जन मानस पटल में दिव्य देशना लगती हैं - बीसवी सदी के आचार्य आदि से जिन्होंने अपनी शांत निष्कलंक निर्ग्रंथ छवि जन-जन के हृदय में अंकित है, ऐसे अनेक श्रुतधर आचार्य हुए जो भगवान महावीर की कीर्ति को वात्सल्य की निर्झरिणी से सन्मति युग में इक्कीसवीं सदी तक लेकर आये हैं, उसी श्रृंखला में समाधि वीर गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज हुए जिन्होंने निस्पृह जीवन के साथ निर्विकल्प समाधि को प्राप्त करते हुए अपना पद अपने सुयोग्य शिष्य श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी को सर्व संघ की जिम्मेदारी को पट्टाचार्य के रूप में प्रदान करने की घोषणा अंतिम समय में अत्यंत सजगता से की।

हमें इस पट्टाधीश पद पर आसीन आचार्य श्री विशुद्ध सागरजी महाराज के भाग्य और कर्तव्य के ऊपर बहुत नाज है - क्योंकि आपका जैन धर्म के, गुरु के प्रति, शिष्यों और भक्तों के प्रति समर्पण हमने देखा है।

If great thoughts used to be in the Land of surrender, then the determination is on the surface of devotion

समर्पण की भूमि पर उत्तम विचार होते हैं, तो भक्ति के तल पर संकल्प होता हैं। आचार्य श्री का वात्सल्य बड़ा ही अपूर्व लगा - जब हम शिखरजी 2022 में आ रहे थे तब कटनी में दर्शन का लाभ मिला, हमारे इतनी वयोवृद्ध माताजिओं को देखकर, बड़े ही वात्सल्य के साथ परिक्रमा करने वाली माताजियों 90 से 99 उम्र वाली 5 माताजी भी थीं। आचार्य श्री ने इशारे से टेबल पर बैठने को कहा और मुझे कहा 'कैसे इन मूर्तियों को संभालती हो? हमने कहा सब आप गुरुओं का आशीर्वाद है।

आ. स्वस्तिमति माताजी को देखकर बोला- आपके पास बहुत बड़ी धरोहर है - मुझे लगता है शुभमतिजी! संघ भी यही संभालती होगी? मैने कहा - हां आचार्य श्री यह सत्य है-''नाम तो मेरा होता, काम माँ करती है'' आज से इनको गणिनी माताजी कहा करिये, आपके पहले इनको ही बड़ा मानिये। आचार्य श्री ने जैसा आदेश दिया उसका यथावत् पालन कर रहे हैं।

आचार्य विशुद्धसागरजी महाराज आप वयोवृद्धों और युवा पीढ़ी को सत् मार्ग दिखाने वाले, प्रभावना के शिरोमौर्य, पुरातत्व साहित्य कोश संवर्धक हैं, जैन अजैन दर्शन के तत्ववेत्ता हो, अचलान् हो, व्यपेतनिदान हो, स्थानयुतान् हो, कष्ट-दुष्ट लेश्या हीनान् हो, विधि नानाश्रित वासान् हो, अलिप्त देहान् हो, विनिर्जित इन्द्रिय करिण हो। निश्चित रूप से मेरे भाई (आ. विरागसागर महाराज) ने योग्य अतियोग्य शिष्य को अपना पद देकर समाज, विद्वान एवं शिष्यों पर महत कृपा परम वात्सल्य दिखाया है।

प. पू. पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज के पट्टाधीश पदारोहण के स्वस्ति शुभ अवसर पर नमोस्तु शासन सदा जयवंत हो, हमारे 26 माताजियों की तरफ से बहुत सारी बधाईयाँ एवं कोटीशः अनुमोदना-स्वास्थ लाभ।

आपके श्री चरणों में त्रिवार त्रय भक्ति पूर्वक नमोस्तु।

# शिष्य शिरोमणी से गुरू शिरोमणि श्रमणाचार्य 108 विशुद्धसागर जी

**- दिगम्बर शुद्धोपयोग सागर, पढ़रपुर महाराष्ट्र**

भारत भूमि जो सदैव साधु संतों की भूमि कहलाती आई है वही भूमि पर सैकड़ों आचार्यगण हुये हैं जिनने अपनी तपस्या के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में अहिंसा का पाठ सिखाया है। वे धरती के देवता निर्ग्रंथ योगी जयवंत हो जयवंत हो वीतराग श्रमण संस्कृति। उत्तर भारत तीर्थंकरों की जन्म भूमि और दक्षिण भारत दिगम्बर आचार्यों के जन्म से गौरवान्वित है। पुनः उत्तर भारत के गर्भ में दिगम्बर योगियों को जन्म दिया।

इस क्रम में गणाचार्य विराग सागर जी हुये वे वात्सल्य रत्नाकर विमलसागर जी के शिष्य हुये हैं। जो चर्या और वात्सल्य गुरू परम्परा से विराग सागर जी को मिला वहीं उन्होंने सम्पूर्ण शिष्यों को सिखाया है। वास्तव में यही परम्परा न बीसपंथी न तेरापंथी विराग सागर जी के शिष्य आगम पंथी के नाम से प्रख्यात है। इसी क्रम में जीवन भर की साधना करते हुये श्री विरागसिन्धु ने पांच सौ शिष्यों को गृहकारावास से श्रमण धर्म में लगा दिया और उनकी समाधि कराई। किस समय किस जीव की पर्याय का अंत आ जावे, किसी जीव को पता नहीं चलता सो पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराते हुये विराग सिन्धु जी जालना प्रवेश के पूर्व ही स्वर्ग में प्रवेश कर गए। विरागसिन्धु जी समाधिस्थ हो गए। समाधि के पूर्व एक अद्भुत कार्य किया स्वयं का पद अपने शिष्य शिरोमणि को गुरूशिरोमणि बना दिया। वास्तव में विशुद्ध सागर जी सम्पूर्ण भारतवर्ष में दिगम्बर धर्म, अहिंसा का प्रचार पद विहार करते हुये कर रहे हैं। विशुद्ध सागर जी के ऊपर सम्पूर्ण संघ एवं समाज का विश्वास है वे इस कार्य के लिए एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व हैं।

प. पू. गणाचार्य विराग सागर जी के जिस समय समाचार मिले तो गुरूवर विभवसागर जी भावविभोर हो गए किन्तु जब पुनः समाचार मिला कि विशुद्ध सागर जी अब नवीन पट्टाचार्य हैं तब उनका मन प्रसन्नता से भर गया। ज्ञातव्य रहे कि यह पदभार स्वयं विरागसागर जी सौंपकर गये हैं। मेरी मान्यता है दादागुरू ने विशुद्ध सागर के रूप में एक ऐसा हीरा दिया है जो सम्पूर्ण विश्व में जैन धर्म की ध्वजा को फहरायेगा। शेष शुभ।

## पट्टाचार्य पद हेतु शुभकामनायें

गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने विरागमय चारित्र से वात्सल्य से अनेक भव्य जीवों को अहिंसा संदेश देकर उनको मोक्षमार्ग पर लगा दिया है। गणाचार्य श्री विरागसागर जी ने अपने समाधि पूर्व ही अपने जीवन को क्षणभंगुर जानकर सब जीवों से क्षमा मांगकर अपना गणाचार्य पद अपने सुयोग्य शिष्य श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी को सर्व संघ की जिम्मेदारी देकर उनको अपने पट्टाचार्य के रूप में प्रदान करने की घोषणा अंतिम समय में की थी। श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी या पट्टाचार्य पद योग्य हैं। उनको मैं संकल्प सागर अपनी तरफसे शुभकामना देता हूँ। आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी जो स्वयं कल्याण पथ पर लगे हैं वे ही दूसरों के कल्याण के निमित्त बन सकते हैं। हम जैसे भव्य जीवों को आचार्यश्री ने आध्यात्मिक प्रवचन से भव्य जीवों को उपदेश देकर धर्म और मोक्षमार्ग प्रशस्त किया है। **–श्रमण श्री संकल्प सागर जी महाराज**

# पट्टचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज का व्यक्तित्व और कृतित्व

**- चरण सेवक श्रमण साक्ष्य सागर मुनि**

यूं तो इस विश्व वसुंधरा को काल व्यय के साथ अनेकानेक महान आत्माओं ने अपनी चरण रज से पवित्र और पावन किया है। जो अपनी आत्मिक शक्ति को जान स्व प्रज्ञा, उत्कृष्ट संयम और सम्यक्चारित्र के पवित्र दिव्य प्रकाश से वंदनीय व पूज्यनीय हुए हैं।

इसी श्रृंखला में परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विराग सागर जी महामुनिराज के नयन तारे उन्हीं के पर पर आसीन होने जा रहे पूज्य आचार्य गुरुदेव श्री 102 विशुद्ध सागर जी मुनिराज हैं जिन्होंने अपनी प्रेक्षाकारी प्रज्ञा और आगम के तलस्पर्शी ज्ञान से हर प्राणी के हृदय में एक अमिट स्थान बनाया है। गुरुदेव ने रहस्यमयी जिन सूत्रों को आवालगोपाल क्रीड़ा सा सुलभ - रोचक और मिश्री सा मिष्ट बनाकर जिन शासन की महती प्रभावना प्रभावना की है।

पूज्य आचार्य गुरूदेव जिनको किसी परिचय की आव है ''जिनके व्यक्तित्व कृतित्व से यह धरा स्वयं ही प्रफुल्लित और गौरवान्वित है'', के लिए कुछ लिखते हुए मेरे शब्द, प्रत्यंत बौने प्रतीत होंगे फिर भी उनकी भक्ति से प्रेरित हो कुछ लिखने का साहस किया है।

पूज्य आचार्य गुरुदेव विद्वानों के लिए, ज्ञान श्रृंगार पूज्य है तो कवियों के लिए कवित्व करता है, प्रतिवादियों के लिए बज्र प्रहार के समान हैं तो आराती परंपरा के प्राण है। आप मधुर भाषी, नीति निष्जात वात्सल्य के विशाल अम्बु तथा आत्मार्थिजनों को प्रेरणास्त्रोत हैं। आपके कण्ठ में सदैव सरस्वती वास करती है। आपने अब तक लक्षाधिक कि. मी. की पदयात्रा कर देश की नगर-नगर गली-गली में श्री जिन नमोस्तु शासन को जयवन्त किया है। द्विशतकाधिक ग्रन्थों का सृजन कर तत्त्व पिपास जनों के हृदय तृप्त किए हैं तो वहीं हजारों प्रतिमाओं को सूरिमंत्र प्रदान कर जीवों को सम्यग्दर्शन का हेतु प्रदान किया है एवं जिन प्रतिमाओं की विद्वेषियों के द्वारा द्वारा की गई क्षति की प्रति की है। जहाँ आपने साठ से अधिक चेतन बिम्ब रचे हैं तो वहीं ''वस्तुत्व, महाकाव्य'' जैसी, कृति सृजन कर विश्व को अमूल्य निधि प्रदान की है।

आज की युवा पीढ़ी जो पाश्चात्यता की अन्ध दौड़, निराशावादिता, हठवादिता और व्यसन जैसे चक्रव्यूह में फँसी है, को अपने हस्तावलम्बन देकर गर्त में गिरने से बचाया है, जो आपके दूर दृष्टित्व का बोध कराता है।

मैं उस दृश्य को कभी भूल नहीं पाता हूं. जब एक साधारण से व्यक्ति द्वारा अपमान किये जाने पर भी आपने उसके कल्याण की चिता जलाई, यह आपकी जीव दया और वात्सल्य का प्रतीक है। गणाचार्य गुरूवर विराग सागर जी से पट्टाचार्य पद का गौरव प्राप्त करना आपकी गुरुभक्ति, दृढ़ धर्म श्रद्धा और कुशल नेतृत्व का बोधक है। जैसे सुगन्धित पुष्प के सन्निकर्ष से वायु सुभावित होती है वैसे ही आप जैसे उत्कृष्ट पुष्प के ज्ञान, चारित्र और मार्गदर्शन रूपी सुगन्ध से हमारा जीवन भी पवित्र और सुभाषित बने आपके आशीष से हमारी साधना की निर्मल स्वपर कल्याणकारी हो ऐसी भावना प्रतिक्षण भाता हूँ। आप चिरजीवी हों, निरोग रहें आपकी प्रज्ञा और यश युगों-युगों तक जीवंत रहे यही हृदय भाव है।

पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता

उत्कर्ष समूह भारत

Manakchand Anil raja Dheeraj Aditya Jainam Siddham Baj (Jal shree) Pariwar, Chhindwara

## अध्यात्म रत्नाकर

**आपका चिंतन, मनन आध्यात्मिक है। आपकी चर्चा व चर्या आध्यात्मिक है। आपके भाव, भाषा, भावना व भेष आध्यात्मिक है। आपकी वृत्ति आध्यात्मिक है, आप अन्तर्मुखी हैं, इसलिए आप 'अध्यात्म रत्नाकर' हैं। आपने जैनों के मुकुटमणी भगवत श्री कुंदकुंद देव के प्राकृत-साहित्य पर आध्यात्मिक व्याख्यान कर जन-जन में अध्यात्म की अलख जगाई है। आपका तन, मन, वचन सब कुछ आध्यात्मिक है, इसलिए आप 'अध्यात्म रत्नाकर' हैं। आपने प्रतिभा सम्पन्न, ज्ञानी- ध्यानी, आध्यात्मिक श्रमणों की श्रृंखला खड़ी की है, इसलिए आप "अध्यात्म रत्नाकर" हैं।**

**- श्रमण मुनि निर्मोह सागर**

# विलक्षण प्रतिभा के धनी

**डॉ. श्रेयांसकुमार जैन, बड़ौत**

**अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद**

गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज ने अपनी समाधि से पूर्व अपने प्रज्ञावन्त अध्यात्म-विद्या विज्ञाता आत्मचिन्तक, चारित्र आराधना में सतत् संलग्न सुयोग्य शिष्य, आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, साथ में गणाचार्य पद भी सौंपा था। गणाचार्य श्री विरागसागर जी द्वारा घोषित पद को चर्याशिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज को 30 अप्रैल 2025 को इन्दौर, सुमतिधाम में विराट महोत्सव के साथ समस्त मुनि आर्यिका संघों के बीच प्रदान किया जायेगा। उस समय प्रज्ञा-प्रतिभा और सरलता की प्रतिमूर्ति, सरल सुबोध शैली के उपदेष्टा, श्रमण मुनि श्री सुप्रभसागर महाराज और श्रमण मुनि श्री प्रणतसागर महाराज ने अपनी विनय भावना समर्पित करने के लिए विभिन्न विशेषांक प्रकाशित करने की प्रेरणा दी है।

आचार्यप्रवर श्री विशुद्धसागर जी महाराज श्रुतज्ञान में पारंगत हैं। वे अपने और दूसरों के कल्याणार्थ निरन्तर स्वाध्याय करते हैं। स्वाध्याय से कर्मों का विनाश करते हुए कल्याण के इच्छुक मानवों के लिए सर्वज्ञ की आज्ञा के आधार पर धर्मोपदेश देते हैं। श्रुत को हृदय में धारण करते हैं। श्रुत रूप तीर्थ का विच्छेदन हो इसीलिए आचार्यश्री श्रुत की निरन्तर प्रभावना में संलग्न हैं। तीर्थ परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिए स्वाध्याय सतत् करते-कराते रहते हैं। पूज्यश्री विहारकाल में भी प्रतिदिन स्वाध्याय करते हैं और शिष्यों को स्वाध्याय कराते हैं।

स्वाध्याय और धर्मोपदेश करने से श्रुत तथा मोक्षमार्ग प्रवर्तित रहता है। स्वाध्याय के समान दूसरा तप नहीं है।

स्वाध्याय के साथ-साथ चर्या का बड़ी सजगता से पालन कर रहे हैं, वे अनियत विहारी हैं। वे महान् ज्ञानी हैं, चारित्र रूपी जहाज पर सवार होते हैं। वे ज्ञानरूपी पतवार से ओर ध्यान रूपी वायु से अतिशीघ्र संसार रूपी समुद्र को पार कर जाते हैं। चर्याशिरोमणि निर्मल चारित्र का पालन करते हुए आगम सिद्धान्त ग्रन्थों का निरन्तर पारायण करते रहते हैं। सैद्धान्तिक विषयों को सहज, सरल उदाहरणों के माध्यम से समझाने की अद्भुत कला में पारंगत हैं। दिव्य एवं भव्य व्यक्तित्व के स्वामी होकर रत्नत्रय के मूर्तिमान स्वरूप हैं। इन्होंने अपनी अलौकिक प्रज्ञा और प्रतिभा के द्वारा जैन वाङ्मय को बहुत अधिक समृद्ध किया है। आगम, अध्यात्म, दर्शन सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों पर देशनाएँ देकर उन ग्रन्थों के हार्द को प्रस्फुटित किया है। काव्य कला की निपुणता के फलस्वरूप 'वस्तुत्व महाकाव्य' जैसी अनुपन रचना बौद्धिक जगत् को प्रदान कर महान् उपकार किया। सत्यार्थ बोध, सोलहकारण भावना इत्यादिक रचनाएँ देकर जैन साहित्य को समृद्ध किया है। विपुल साहित्य में आपके साहित्य का सम्मिलन होना गौरवपूर्ण है। उत्तर से दक्षिण तक जिनशासन का ध्वज लहराने वाले जैन विद्या निष्णात मनीषी आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज भौतिकवाद की चकाचौंध से दूर रहने वाले विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। अध्यात्म विद्या के पुरस्कर्ता के रूप में ख्याति प्राप्त अपनी विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। आप सांसारिक वैभव और सुख में आसक्त न होकर आत्मसुख में लीन रहते हैं। सांसारिक सुखों के प्रति सदैव अनासक्त रहते हैं और शिष्यों को अनासक्त रहने की शिक्षा भी प्रदान करते हैं। वे सतत् विचारते हैं कि रत्नत्रय ही उत्तम मार्ग है। अन्तर्मुखी दृष्टि उत्तम है। जब तक निश्चय रत्नत्रय की प्राप्ति नहीं होती तब तक स्व-पर के हित में कार्य करो। स्व पर का हित साधन में लगे सच्चे साधु हैं। आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज पूर्ण रूप से वैसे हैं जैसा शास्त्रों में मुनि का स्वरूप कहा गया है -

**जधजादरूवजादं**
**उप्पाडिदकेसद मंसुगं सुद्धं ।**
**रहिदं हिंसादीदो**
**अप्पडिकम्मं हवदि लिंगं ।।**
**मुच्छारंभविजुत्तं जुत्तं**
**उवओग जोग सुद्धीहिं।**
**लिंगं ण परावेक्खं**
**अपुणब्भवकारणं जेण्हं ।।**

प्रवचनसार-205, 206 अर्थात् जन्म समय के रूप जैसा रूप वाला, सिर, दाढ़ी-मूंछ के बालों का लोच किया हुआ शुद्ध (परिग्रह रहित) हिंसादि से रहित और प्रतिकर्म से रहित लिंग (मुनि का बहिरंग चिन्ह) होता है। मूर्च्छा और आरम्भ रहित उपयोग और योग की शुद्धि से युक्त तथा पर की अपेक्षा से रहित ऐसा जिनेन्द्र देव द्वारा कथित श्रमण का लिंग है जो कि मोक्ष का कारण है। पूज्य आचार्यश्री निर्ग्रन्थता के आदर्श हैं, उनका जीवन वीतरागता की चरम परिणति है। ये अन्तर और बाह्य दोनों अवस्थाओं में शुद्ध हैं। हिंसादि रहित, श्रृंगार रहित, आरम्भ परिग्रह रहित, उपयोग और योग की शुद्धि सहित पर द्रव्य की अपेक्षा रहित मोक्ष के लिए दिगम्बर मुद्रा अनिवार्य है, जो आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज के पास है। यद्यपि इस समय की मुद्रा से मोक्ष नहीं प्राप्त होगा किन्तु जिस काल में मोक्ष मिले, उस काल में इसी दिगम्बर मुद्रा से मोक्ष मिलेगा। इसी लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहे हैं गुरुवर। पूज्य आचार्यश्री निरन्तर ज्ञानाराधना में संलग्न रहते हैं किन्तु तप आराधना को एक क्षण भी नहीं छोड़ते। दोनों आराधना इनके जीवन में साथ-साथ चलती हैं। आगम भी दोनों आराधनाओं का एक साथ होना अनिवार्य कहता है।

सम्यक्तव निधि से विभूषित आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज ने अर्धशतक के अधिक मुनि दीक्षाएँ देकर मोक्षमार्ग की महती प्रभावना की है। आपके माध्यम से अवाल बृद्ध धर्ममार्ग से जुड़ता है। उत्तर से दक्षिण भारत के अनेक नगरों में चातुर्मास करके जिन महिमा को वृद्धिंगत किया है। 2023 का वर्षायोग बड़ौत नगर में हुआ उसमें मैंने आपकी चर्या निकट से देखी है। साधुता आपके अंग-अंग से परिलक्षित होती है और सच्चे गुरु के दर्शन कर मैं कृतार्थ हुआ। विद्वानों की दृष्टि में आप में गुरु के समस्त लक्षण विद्यमान हैं। आचार्यश्री में निम्न सभी गुण विद्यमान हैं, जैसा कि कहा गया है -

**श्रुतभविकलं शुद्धावृत्तिः**
**परप्रतिबोधने,परिणत्तिरूद्योगो**
**मार्गप्रवर्तनं सन्निद्धधीः।**
**नुधनुतिरन्तत्सेको लोकज्ञता मृदुता**
**स्पृहा, यतिपतिगुणा यस्मिन्नन्ये च**
**सोऽस्तु गुरुः सताम् ।।**

जैन सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। आद्यावधि आपके द्वारा जैनदर्शन और जैन धर्म की महती प्रभावना की गई। यही कारण है कि गुरुदेव गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज द्वारा आपको पट्ट की घोषणा की गई और सम्पूर्ण समाज आपको आचार्य श्री विरागसागर महाराज के पट्ट पर अभिषिक्त कर रही है। आपके लिए आचार्य श्री विरागसागर महाराज के सम्पूर्ण मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका चतुर्विध संघों ने अपना मार्गदर्शक और आचार्य स्वीकार किया एतावता सभी मुनिसंघ, आर्यिका संघ सुमतिधाम इन्दौर पहुँच कर पट्टाचार्य पद पर अधिष्ठित करेंगे। साथ में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् सहित सभी विद्वत्वर्ग उसका समर्थन कर रहा है। मैं स्वयं अपनी ओर से चर्याशिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज को सहस्त्रशः नमोऽस्तु करता हुआ उनके गणाचार्य, पट्टाचार्य अलंकरण की अनुमोदना समर्थन करता हूँ और जिनेन्द्र प्रभु से कामना करता हूँ कि पूज्यवर आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज शत-शरद ऋतुओं के सुमनों की सुवासित होकर सहस्त्रों वर्षों तक जिनश्रुत की प्रभावना करें।

**प्रेषकः डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर**

# प्रसन्नधिया सहर्ष - भावना

**- प्रसन्नधिया श्रमण सहर्ष सागर जी**

आचार्य गुरुवर विशुद्ध सागर जी महामुनिराज इस युग के लिए साक्षात् परमात्म स्वरूप हैं। जिन्होंने अपने दृढ़ सम्यत्वत्व, ज्ञान, चारित्र से स्व-पर का कल्याण किया है और कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव के इन्द्रिय, अनिन्द्रिय, अतीन्द्रिय वृत्ति आलौकिक है।

गुरुदेव की इन्द्रिय वृत्ति सदा ही पारमार्थिक तत्व की खोज करती रहती है। जो कर्णेन्द्रिय है वह सदा ही श्रुत रूपी अमृत का पान करने के लिए लालायित रहती है तथा कर्णेन्द्रिय पर की निन्दा को सुनने के लिए अपनी योग्यता का त्याग कर देती। पूज्य गुरुदेव की नेत्र-इन्द्रिय सदा ही वीतरागता का अवलोकन करती है तथा सरागता में भी वीतरागता की शक्ति को अपने ज्ञान से देखती है। गुरुदेव की स्पर्श इन्द्रिय सदा ही देव-शास्त्र - गुरु के आधार का स्पर्श करती है, जिससे वह अपने आत्म तत्त्व को स्पर्श उद्यम में अधिक अधिक हढ़ता को प्राप्त करते हैं।

पूज्य गुरुदेव की रसना इन्द्रिया सदा ही हित, मधुर, विशद, महावीर के द्वारा किये गये तत्व का सेवन नहीं है परन्तु वाणी में माधुर्यता के बिना अन्य कुछ भी नहीं है। भोजन में शुक्ल का सेवन है ऐसे ही गुरूदेव की वाणी में शुक्ल लेश्या की वृत्ति है। उनकी वाणी में पक्षपात नहीं है निष्पक्ष प्रमाण-नय की व्याख्यात है।

पूज्य गुरूदेव की घ्राणेन्द्रिय हमेशा परमार्थ की गंध को ही सूंघती है। विषय कषाय को वृद्धि करने वाली गंध को नहीं सूंघती, जिससे विषय-कषाय की परिणति छूट जाती है, ऐसी गंध को पूज्य गुरूदेव सहर्ष ही ग्रहण करते हैं। आचार्य गुरूवर विशुद्ध सागर जी महाराज की अनिन्द्रिय वृत्ति भी आलौकिक है। वह हमेशा विशुद्धि की ही वांछा करते हैं। उनका मन आशाओं के वाश से रहित हैं। वे अपने अंतःकरण को प्रभु भक्ति से, श्रुत भक्ति से, गुरूभक्ति से पूरित रखते हैं।

आचार्य गुरूवर विशुद्ध सागर जी महाराज की अतीन्द्रिय वृत्ति से सम्पन्न है, त्याग-उपादान से शून्य है, निश्चय-व्यवहार की दृष्टि से रहित है। ज्ञाता-दृष्टा की परिणति से युक्त हैं। आचार्य भगवन का निश्चय व्यवहारात्मक परिचय है। यह परिचय हमारे कर्मों का नाश करने में साधक है तथा प्रसन्नधिया सहर्ष भाव को उत्पन्न करने वाला हैं। गुरूदेव की निर्मल छवि तन-मन को है, सुखदायी। गुरूदेव की निर्मल चर्या सहर्ष मन को सहर्षदायी।


## पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता

उत्कर्ष समूह भारत

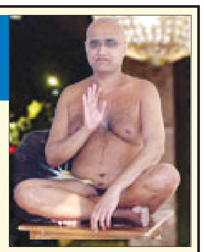

**संजीव जैन, मनीषा जैन, प्रतीक जैन, पूजा जैन, प्राची जैन, दृश्या जैन, लखनऊ**


# गुरू का सुयश समग्रता को प्राप्त हो गया

गुरू तो गुरू ही होता है क्योंकि गुरू गुरू गुरूता को प्राप्त होता है, गुरू की चर्या, गुरू का चारित्र, गुरू की सोच गुरूता से युक्त हो समग्रता को प्राप्त होती है लेकिन गुरू बनने के लिए लघु बनना आवश्यक होता है। हमारे गुरू भी गुरू हैं पर गुरू बनने से पूर्व वे लघु बने, विनेय बनकर उन्होंने वात्सल्य, समर्पण, शिष्यत्व, चारित्र की गुरूता को प्राप्त किया इसलिए गुरू का सुयश समग्रता के साथ सर्वत्र व्याप्त हो गया। प. पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी विराग वाटिका की गुरूता को पट्टाचार्य के रूप में प्राप्त हो रहे हैं क्योंकि उन्होंने गणाचार्य श्री विरागसागर जी के शिष्यत्व को प्राप्त किया, उनके विश्वास को जीता अपने समर्पण से, उनके वात्सल्य को प्राप्त किया अपनी विनय से, ऋजुता से, शुचिता से। वात्सल्य रत्नाकर आचार्य भगवन् विमल सागर जी का आशीष फलीभूत हुआ क्योंकि उन्होंने दीक्षा के पूर्व ही कह दिया था कि बेटा, जहां जायेगा वहां तेरी जय-जयकार होगी। अध्यात्म की गहराईयों का स्पर्श करने वाले, चर्या को समय का सार बनाने वाले ऐसे गुरूवर के पट्टाचार्य पदारोहण के अवसर पर मंगल शुभकामना के साथ कोटिशः नमन।

**– श्रमण सुयश सागर,**
**शिष्य पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी**

# आचार्य श्री विशुद्धसागर जी का महनीय अवदान

**सोमचन्द्र शास्त्री**

**मैनवार, जिला ललितपुर**

भारतवर्ष की संस्कृति त्याग, तप, साधना एवं चारित्र प्रधान संस्कृति मानी जाती है। इस आधार पर दिगंबर जैन श्रमण संस्कृति को भारतीय संस्कृति का प्राण कहा जा सकता है। दिगंबर जैन श्रमण बिना बोले आचरण मात्र से ही धर्म का उपदेश देते हैं एवं श्रमण परंपरा के पावन प्रेरक होते हैं। उनका जीवन एक जीवंत शास्त्र है। एक ऐसा शास्त्र जिसमें चरित्र लिपि का उपयोग हुआ है। ऐसे चारित्र के धनी आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज जो दर्शनाचार, ज्ञानाचार, वीर्याचार, चारित्राचार और तपश्चरणाचार, इन पांचों आचारों में जो स्वयं भी तत्पर होते हैं और अन्य शिष्यों को भी लगाते हैं, ऐसे आचार्य मुनि ध्यान करने योग्य हैं। बहिरंग सहकारी करणो रूप से जो व्यवहार नय से पांच प्रकार का आचार है उसमें जो अपने को तथा पर को लगाते हैं अर्थात आप उस पंचाचार को साधते हैं और दूसरे साधुओं को सधाते हैं। वे आचार्य मुनि हैं, वे पदस्थ ध्यान में ध्यान करने योग्य हैं।

न होते सूर्य और चंदा
न ज्योतिष मंत्र ये होते।
नहीं ब्रह्मांण्ड ये होता,
ना भौतिक मंत्र ये होते ।।
समंदर सूख ही जाता,
जमाना जल चुका होता। अगर धरती पर इन जैसे
दिगंबर संत ना होते।।

आगम के परिप्रेक्ष्य में समाज को सुधारने हेतु आचार्यश्री द्वारा उठाये गये कदम अत्यंत साहसिक एवं आर्ष परंपरावादी हैं।

आचार्यश्री ने जहां जैन धर्म और श्रमण, संस्कृति का उत्थान करके जिन्होंने अपने दिगम्बरत्व से जैन धर्म की विश्वव्यापी पताका फहराई है और भविष्य के लिए इस धर्म की नींव अत्यंत मजबूत बना दी है। आचार्यश्री ने आगम की रक्षा हेतु सिद्धांत ग्रन्थों को ताम्र पत्र में उत्कीर्ण कराने का महान कार्य किया। आपके द्वारा पुरातत्व की रक्षा के लिए शताधिक मंदिरों का निर्माण एवं प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्वार करके तीर्थ का संवर्धन एवं श्रमण संस्कृति का रखरखाव किया गया है जो हमारे पुरातत्व को समृद्ध बनाते हैं।

साहित्यिक संवर्धन के लिए आपके द्वारा शताधिक ग्रन्थों का लेखन एवं उन पर राष्ट्रीय सेमिनार विद्वत्संगोष्ठियों का आयोजन कराया गया जो हमारे साहित्य को संवर्धन एवं संरक्षण प्रदान करेगा।

श्रमण परंपरा को जीवंत रखने के उद्देश्य से आपके द्वारा शताधिक दीक्षाएं एवं अनेकों ब्रह्मचारी भैया को ब्रह्मचारी व्रत को देखकर के उनका कल्याण किया है। सर्वाधिक दूरी का बिहार करने वाले संघों में आपका संघ अग्रणी रहा है, निश्चित रूप से आपने पग विहार करते हुए पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक चारों ही दिशाओं में श्रमण संस्कृति की यशपताका फहराई है। आपके इस अमूल्य योगदान को श्रमण संस्कृति हमेशा याद करती है। इनके चरण जहां पड़ते, वह धरती तीरथ बन जाती है।

# सम्प्रदायातीत आचार्यश्री विशुद्धसागर जी

**डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन**
**से. नि. प्राचार्य, टीकमगढ**

भारतीय सन्तों की ज्योतिष्मती परम्परा में श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज का अप्रतिम स्थान है। अपनी देशनाओं द्वारा उन्होंने श्रमण संस्कृति को सम्वर्धित कर स्थायित्व प्रदान किया है। तपश्चरण से सम्पृक्त अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त और स्याद्वाद को जीवन का अभिन्न अंग बनाकर दर्शन, ज्ञान और चारित्र की आराधना पूर्वक उन्होंने जिनशासन का मूर्तरूप प्रदान किया है। यही कारण है कि आप सभी सम्प्रदाओं की समाज में प्रथित और सर्वसम्मानित हैं। अहिंसक संस्कृति के अनुरूप आप समाज निर्माण के पक्षधर रहे हैं। ओजस्वी वाणी में अध्यात्म की यौक्तिक व्याख्या कर आबालवृद्ध सभी को अध्यात्म धारा में निमज्जन करने के लिए आपने उत्प्रेरित किया है। आपकी देशनाएं तर्क और युक्तियों पर कसी हुई होती हैं, जो दर्शन और न्याय ग्रन्थों के अगाध अध्ययन का परिचायक है। प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी के अनेक गाथा, श्लोक एवं पद्यादि आपको कण्ठस्थ हैं, जिनका उपयोग आप विषयवस्तु की पुष्टि के लिए अपनी देशनाओं में करते हैं। पंथ, सम्प्रदाय, जाति आदि के भेद से अतीत आप समाज में विश्वजनीन भावात्मक एकता स्थापित करने के लिए निरन्तर पीयूष वाणी की वर्षा करते रहते हैं। उनका मानना है कि बिना अहंकार विगलन के समाज में एकता, समरसता, प्रेम, सौहार्द्र और सहिष्णुता आदि स्थापित नहीं हो सकते, धर्म रूपी ध्वजा की डोर इसी से बंधी हुई है, श्रावक व श्रमण द्वारा अहंकार रूपी इस डोर की शिथिलता सामाजिक और धार्मिक सम्बन्धों को विखण्डित कर सकती है। इसलिए उन्होंने आचार्य समन्तभद्र के 'न धर्मो धार्मिकैर्विना' इस मूलमंत्र को स्मरण रखने की सदैव प्रेरणा दी है। इस शाश्वत सत्य से सभी परिचित ही हैं कि विशुद्धचर्या के धनी, अध्यात्म शिरोमणि आचार्यश्री विशुद्धसागर जी महाराज इस पंचमकाल में अपनी उत्कृष्ट सम्यक् साधना और श्रुताराधना के लिए देश विदेश के भक्तों द्वारा पूजे जाते हैं, जिसके फलस्वरूप आज उन्हें श्रमण परम्परा के पोषक आचार्य कुन्दकुन्द आचार्य समन्तभद्र आचार्य अकलंक, आचार्य अमृत चन्द आदि आचार्यों की परम्परा में प्रतिष्ठापित किया जाना सार्थक होगा। कौन जानता था कि आज से पचास वर्ष पूर्व रूर (भिण्ड) में जन्में बालक, जिसका नाम राजेन्द्रकुमार जैन, दिया गया, जिसे 'लला' के नाम से अभिहित किया जाता था, वह एक दिन अध्यात्म के शिखर पर आरूढ़ होकर श्रमण संस्कृति का महान् उद्गाता बनकर जैनधर्म की पताका फहरायेगा । उस बालक ने 1988 में ब्रह्मचर्य व्रत, 1989 में क्षु. दीक्षा, 1991 में ऐलक दीक्षा और 21 नव. 1991 को राष्ट्र सन्त परमपूज्य आचार्यश्री विरागसागर जी से मुनि दीक्षा और 2007 में उन्हीं से आचार्य पद प्राप्त कर आत्मकल्याण और जनकल्याण हेतु अपनी ज्ञान रश्मियों को विकीर्ण करने लगे। उनके द्वारा अध्यात्म, धर्म, दर्शन आदि पर दी गई देशनाएं अल्प समय में ही स्वतंत्र ग्रन्थों के रूप में चरितार्थ हुईं। आज उनकी संख्या सैकड़ों में है, जिनसे समाज का महान् उपकार हो रहा है। देश और विदेशों में हजारों भक्त आपके ग्रन्थों को पढ़कर धर्म लाभ ले रहे हैं। अपार प्रसन्नता का विषय है कि ऐसे विलक्षण प्रतिभा और अद्भुत तर्कणा शक्ति के धनी, महान तपस्वी, श्रमण संस्कृति के उद्गाता परम पूज्य आचार्य विशुद्धसागर जी महाराज का गुणानुवाद, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् के बुलेटिन, मार्च 2025 के माध्यम से 'आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज विशेषांक के रूप में किया जा रहा है, निश्चित रूप से यह उपक्रम श्लाघनीय है। हमारा परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के चरणों में त्रिवार नमोऽस्तु।

- उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद्

# आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज

युग बीतते हैं, सृष्टियां बदलती हैं, दृष्टियों में भी परिवर्तन आता है। कई युगदृष्टा जन्म लेते हैं। अनेकों की सिर्फ स्मृतियां शेष रहती है, लेकिन कुछ व्यक्तित्व अपनी अमर गाथाओं को चिरस्थाई बना देते हैं। उन्हीं महापुरुषों का जीवन स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाता है, जो असंख्य जनमानस के जीवन को घने तिमिर से निकालकर उज्जवल प्रकाश से प्रकाशित कर देते हैं। ऐसे ही निरीह, निर्लिप्त, निरपेक्ष एवं स्वावलंबी जीवन जीने वाले युग पुरुषों की सर्वोच्च श्रेणी में नाम आता है दिगंबर जैनाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का, जिन्होंने स्वेच्छा से अपने जीवन को पूर्ण वीतरागमय बनाया। त्याग और तपस्या से स्वयं को श्रृंगारित किया। स्वयं के रूप को संयम के ढांचे में ढाला। अनुशासन को अपनी ढाल बनाया और तैयार कर दी संयमी युवाओं की सुगठित धर्म सेना। जो उनकी छवि मात्र को निहार-निहार कर चल पड़े घर-द्वार छोड़ उनके जैसा बनने के लिए। स्वयं चिद्रूप, चिन्मय स्वरूप बने और अनेक चैतन्य कृतियों का सृजन करते चले गए जो आज भी अनवरत जारी है। इतना ही नहीं अनेक भव्य श्रावकों की सल्लेखना कराकर हमेशा-हमेशा के लिए भव-भ्रमण से मुक्ति का सोपान भी प्रदान किया है।

जो तप, त्याग, अपरिग्रह की मूर्ति कहलाते हैं। जो बालयोगी हैं, जो प्रज्ञा के धनी हैं। जिनकी निश्चल मुस्कान से प्राणी मात्र को वात्सल्य-अमृत मिलता है। जो करपात्री हैं, पगविहारी हैं। जिनका लक्ष्य मुक्तिरमा है, जो ज्ञान, वैराग्य और त्यागपथ के गतिमान पथिक हैं। जो अध्यात्म-सरोवर से निकली निश्चय और व्यवहारमय रूपी सरिता में नाव बनकर चलते हैं। जो शांत रस की गहन वाटिका में मौन अवगाहन करते हैं। जो अनुभूत सत्य को ही जिव्हा पर स्थान देते हैं, जिनकी खनकती वाणी में मिश्री का माधुर्य है, जो मोह-मदन-विजेता हैं, जो चारित्र-शिरोमणि हैं, जो चुंबकीय व्यक्तित्व के स्वामी हैं, जिनका राजमार्ग पंथवाद और संतवाद से हटकर है। उनमें बालक सी निश्छलता है। जिनके पास पहुंचने के लिए क्रोध तरसता रहता है, मन मचलता रहता है, मोह व माया संकोची बनकर टूट खड़े रहते हैं। जिनके आनंदमयी स्वभाव को पीड़ायें स्पर्श नहीं कर पाती। जिनके आश्रय को पाकर छत्तीस गुणरत्न हर्षित रहते हैं। उस महान संत के विषय में जो भक्त जितने विशेषण जानते हैं, वे सभी लगा दिए जावें तो भी उनकी विशेषता का वर्णन पूर्ण नहीं किया जा सकता। यह वर्ष आपके अवतरण का स्वर्णिम 52वाँ वर्ष है। भारतीय समुदाय का स्वर्णिम काल है यह आपके स्वर्णिम आभामंडल तले यह वसुधा भी स्वयं को स्वर्णमयी बना लेना चाहती है। आपकी एक-एक पदचाप उसे धन्य कर रही है। आपका एक-एक शब्द कृतकृत्य कर रहा है। एक नई टोशनी और ऊर्जा से भर गया है। हर वह व्यक्ति जिसने क्षणभर को भी आपकी पावन निश्रा में श्वांस ली हैं।

प. पू. श्री आदिसागर जी महाराज 'अंकलीकर, उनके शिष्य आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज, उनके शिष्य आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज, उनके शिष्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज 'फफोतू तथा आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की परम्परा में आचार्य प्रवर श्री विशुद्धसागर जी महाराज अत्यंत प्रेरणास्पद हैं। संसार की असारता उनके जीवन की रग-रग में समाई हुई है। परम शांत, अध्यात्म योगी आचार्य श्री की कथनी व करनी में समानता है। उन्होंने आगमालोक में अपने जीवन को ढाला है और स्व दीक्षित शिष्य वर्ग को भी उसकी वे प्रेरणा देते रहते हैं। निस्पृहता के धनी - आचार्य श्री हमेशा कहा करते हैं कि साधु-जीवन के चार प्रमुख गुण हैं, इनके रहते ही साधु-जीवन आदर्श बन सकता है।

1. इंद्रिय विजय
2. कषाय विजय
3. आहार विजय
4. निद्रा विजय

ये चारों ही गुण आचार्यश्री के जीवन में पूर्ण रूपेण पाए जाते हैं। इंद्रिय विजेता जो उनके जीवन का अभिन्न अंग है, वही कषाय उनकी अत्यंत मंद है। निद्रा विजय भी यथाशपथ उनमें है, रात्रि का बहुभाग उनका चिंतन और जाप्य में ही व्यतीत होता है। आहार विजय तो उनके जीवन में प्रमुखता से है। दही, तेल, नमक का उनका आजन्म त्याग है। आहार के समय दाता के प्रति वात्सल्यपूर्ण व्यवहार और अपने शरीर के प्रति निस्पृहता उनका महत्वपूर्ण गुण है। भौतिकता प्रधान युग में भी ऐसे महापुरुष आत्मकल्याण का आदर्श मार्ग हमें दिखा रहे हैं। यह सब हमारे पुण्योदय का ही प्रतिफल है।

**पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता**

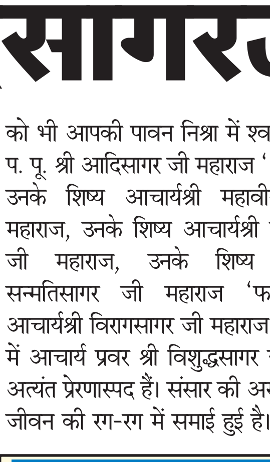

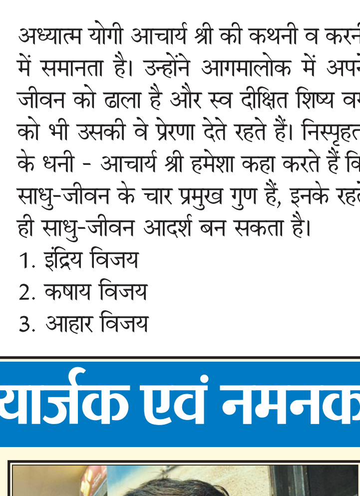

उत्कर्ष समूह भारत

332/14, Chowk Sarrafa, Gol Darwaja, Lucknow
Mo. 9335925285
Ph. 0522-4013412
Mail - jain4150@gmail.com

जम्बू कुमार अध्यात्म जैन सर्राफ

Siddharth Jain
Mo. 9335925285
JAMBU KUMAR ADHYATM JAIN SARRAF
Hallmark 91601750 Jewellery Showroom
IGI Certified Diamond, Kundan, Gold, Silver Jewellery, Utenisile

# श्रामण्य से सिद्धत्व की ओर
## अध्यात्मयोगी श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी

**पूर्व नामः** बा. ब्र. श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन (लला)
**पिता श्रीः** श्री रामनारायण जी जैन (समाधिस्थ - मुनि श्री विश्वजीत सागर जी)
**माता श्रीः** श्रीमती रत्तीबाईजी जैन (समाधिस्थ क्षुल्लिका श्री विश्वमतिमाताजी)
**जन्म स्थानः** भिण्ड (म.प्र.), गृह ग्राम रूर
**जन्म दिनांकः** 18 दिसम्बर 1971
**लौकिक शिक्षाः** दसवीं
**भाई/बहिनः** पाँच भाई, दो बहिन
**ब्रह्मचर्य व्रत कबः** 16 नवम्बर 1988, तीर्थक्षेत्र बरासौंजी
**क्षुल्लक दीक्षाः** 11 अक्टूबर 1989, भिण्ड (म.प्र.)
**नामकरणः** क्षुल्लक श्री यशोधर सागर जी
**ऐलक दीक्षाः** 19 जून 1991, पन्ना (म.प्र.)
**मुनि दीक्षाः** 21 नवम्बर 1991, कार्तिक सुदी पूर्णिमा
**मुनि दीक्षा स्थलः** तीर्थक्षेत्र श्रेयांसगिरि, जिला-पन्ना (म.प्र.)
**नामकरणः** मुनि श्री विशुद्धसागर जी
**आचार्य पदः** 31 मार्च 2007, महावीर जयंती
**स्थानः** औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
**दीक्षा गुरूः** प. पू. गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज
**भाषा ज्ञानः** हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत
**संयमी सृजनः** मुनि - 46, क्षुल्लक - 4
**साहित्य सृजनः** दो सौ से अधिक आध्यात्मिक कृतियाँ
**पंचकल्याणक प्रतिष्ठाः** 121 (सन् 2022 तक)

**विहार क्षेत्रः** मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, झारखण्ड, बिहार, तेलंगाना
**पग विहारः** 90,000 कि.मी. (सन् 2022 तक)
**रूचिः** न्याय-अध्यात्म शास्त्रों का अध्ययन/अध्यापन एवं मौन साधना
**प्रसिद्धिः** अध्यात्ममयी सरल, सुबोध प्रवचनकार

## श्रमण सूर्य के वरद हस्तकमलों से जिनबिंबों की प्राण प्रतिष्ठा

### सर्वाधिक सूरिमंत्र प्रदाता -

आपके द्वारा मुनि दीक्षा के पश्चात् सन् 1995 से सन् 2022 तक 121 पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों में ससंघ सान्निध्य प्रदान कर तीर्थंकर भगवंतों की प्रतिमाओं में सूरि मंत्र प्रदान कर उन्हें पूजनीय बनाया-

सन् 1995 में: 4 (रजवांस, जतारा, गिरार जी, देवेन्द्रनगर)
सन् 1996 में: 1 (तेवरी)
सन् 1997 में: 1 (तेवरी)
सन् 1998 में: 1 (फाफाडीह-रायपुर)
सन् 2000 में: 2 (करगुवां, टड़ा-केसली)
सन् 2001 में: 1 (सिलवानी)
सन् 2003 में: 3 (लालघाटी-भोपाल, पिपलानी, हिरनई)
सन् 2005 में: 3 (पन्ना, तेवरी, अमरावती)
सन् 2008 में: 2 (पन्ना, तेवरी)
सन् 2009 में: 7 (टोड़ी, फतेहपुर, गुरसरांय, टीकमगढ़, करगुवां जी, अशोकनगर, भोपाल)
सन् 2010 में: 4 (भिलाई, उज्जैन, ओबेदुल्लागंज, भोपाल)
सन् 2011 में: 7 (नवागढ़, बानपुर, करगुवां जी, बालाबेहट, देवेन्द्रनगर, पन्ना, द्रोणगिरी)
सन् 2012 में: 3 (घुवारा, विराटनगर, भिण्ड)
सन् 2013 में: 7 (विदिशा, सागर, बड़ा मलहरा, रानीपुर, पन्ना, सिवनी, चंद्रपुर)
सन् 2014 में: 7 (भिलाई, छिंदवाड़ा, सागर, नैनागिरी जी, द्रोणगिरी जी, अलीपुर-आष्टा)
सन् 2015 में: 4 (मदनपुर, भोपाल, उज्जैन, रजवांस)
सन् 2016 में: 5 (द्रोणगिरी, छिंदवाड़ा, भिलाई, भिलाई, भिलाई, रायपुर)
सन् 2017 में: 10 (सिवनी, बेतूल, भोपाल, झण्डवा, पपौरा जी, शाहगढ़, मंगलगिरी, कटरा-सागर, इंदौर, सावरगांव)
सन् 2018 में: 4 (हैदराबाद, परभणी, तामसा, चंद्रपुर)
सन् 2019 में: 14 (छिंदवाड़ा, झिलमिली, चांदामेटा, श्रवणबेलगोला, जबलपुर, तेवरी, गोरझामर, भोपाल, मुलताई, मुक्तागिरी, बेतूल, भिण्ड, बरही)
सन् 2020 में: 2 लखनऊ, सोनागिर)
सन् 2021 में: 8 (सम्मेद शिखर, निमियाघाट, सम्मेद शिखर (4), ईसरी)
सन् 2022 में: 12 (गया, कुण्डलपुर (नालंदा), चतरा, वाराणसी, ब्रजपुर (पन्ना), ईशानगर (छतरपुर), तेवरी, जबलपुर, रायपुर, भिलाई, रिसाली, नसिया दी दुर्ग।

पावन वर्षायाग
1. 1990 - टीकमगढ़ (म.प्र.)
2. 1991 - श्रेयांसगिरि (म.प्र.)
3. 1992 - द्रोणगिरि (म.प्र.)
4. 1993 - श्रेयांसगिरि (म.प्र.)
5. 1994 - बीना (म.प्र.)
6. 1995 - पन्ना (म.प्र.)
7. 1996 - छतरपुर (म.प्र.)
8. 1997 - दुर्ग (छ.ग.)
9. 1998 - भिलाई (छ.ग.)
10. 1999 - करगुवां जी (उ.प्र.)
11. 2000 - सागर (म.प्र.)
12. 2001 - सिलवानी (म.प्र.)
13. 2002 - भोपाल (म.प्र.)
14. 2003 - ललितपुर (म.प्र.)
15. 2004 - विदिशा (म.प्र.)
16. 2005 - अमरावती (महा.)
17. 2006 - अशोक नगर
18. 2007 - इंदौर
19. 2008 - जबलपुर
20. 2009 - अशोक नगर
21. 2010 - उज्जैन
22. 2011 - सागर
23. 2012 - आगरा
24. 2013 - नागपुर
25. 2014 - भोपाल
26. 2015 - भीलवाड़ा
27. 2016 - वैशालीनगर (छ.ग.)
28. 2017 - इंदौर
29. 2018 - औरंगाबाद
30. 2019 - भिण्ड
31. 2020 - वैशाली बासोकुण्ड
32. 2021 - सम्मेदशिखर जी
33. 2012 - रायपुर

## आध्यात्म योगी आचार्य श्री विशुद्धसागरजी द्वारा सृजित साहित्य

### देशना साहित्य (ग्रंथांक)

- पुरुषार्थ देशना (पुरुषार्थ सिद्धि उपाय) (हिन्दी, मराठी, कन्नड़)
- समय देशना (समयसार) (भाग-1 से 17) (हिन्दी मराठी, गुजराती)
- प्रकृष्ट देशना (प्रवचनसार) (भाग-1 से 18)
- नियम देशना (नियमसार) (भाग-1 से 3) (हिन्दी, मराठी, कन्नड़)
- अध्यात्म देशना (योगसार) (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, प्राकृत) तत्त्वदेशना (तत्त्वसार)
- प्रेक्षा देशना (वारसाणुपेक्खा)
- सर्वोदयीदेशना (इष्टोपदेश)
- स्वरुपदेशना (स्वरूप संबोधन)
- श्रावक धर्म देशना (रत्न करण्ड श्रावकाचार) (हिन्दी, कन्नड़)
- सागार अनगार धर्म देशना (रयणसार)
- सामायिक देशना (सामायिक पाठ) (हिन्दी, मराठी)
- सद्ज्ञान देशना (ज्ञानांकुश (भाग 1-2)
- तत्वार्थ देशना (तत्वार्थसूत्र)
- सद्देशना (सार-समुच्चय) (भाग-1 से 6)
- परमार्थ तत्वदेशना (तत्तवानुशासन) (भाग-1 से 6)
- सुभाषित देशना (सुभाषित रत्नावली) (भाग-1 से 5)
- निग्रंथ देशना (आत्मानुशासन) (भाग-1 से 6)
- पृच्छना देशना (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
- सैंतालीस शक्तियाँ
- अलिंगग्गहणं
- श्रमण धर्म देशना (क्षमादि दस धर्म)

भाष्य, अनुशीलन, परिशीलन
- स्वरुप-संबोधन परिशीलन (हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, प्राकृत, संस्कृत)
- इष्टोपदेश भाष्य (हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, प्राकृत)
- समाधितंत्र - अनुशीलन (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, प्राकृत)
- सोलहकारण भावना अनुशीलन

आध्यात्मिक चिंतन (लेखन)
- शुद्धात्म- तरंगिणी (हिन्दी, मटाठी, अंग्रेजी, प्राकृत, संस्कृत)
- निजात्म तरंगिणी (हिन्दी, मराठी, प्राकृत, संस्कृत)
- निजानुभव तरंगिणी (हिन्दी, प्राकृत संस्कृत)
- स्वानुभव तरंगिणी (हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, प्राकृत, संस्कृत)
- आत्म-बोध (हिन्दी, अपभ्रंश, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी)
- विचार
- सत्यार्थ प्रबोध (नैतिक निबंध)

आध्यात्मिक काव्य साहित्य
- वस्तुत्व महाकाव्य (1200-कविता)
- शुद्धात्म काव्य तरंगिणी
- स्वानुभव (157-कविता)
- ध्रुव स्वभाव (594-कविता)
- शब्दः अध्यात्म पंथी का (346- कविता)
- ज्ञायक भाव (432-कविता)
- वस्तु स्वभाव (374-कविता)
- चिद्-स्वभाव (500-कविता)
- सम्यक-नीतिकाव्य
- कर्म-विपाक

पद्यानुवाद साहित्य
- बोध-वाक्यामृत
- चिंतन-चंद्रिका
- निजात्म पद्यानुवाद चंद्रिका
- अध्यात्म प्रमेय पद्यानुवाद चंद्रिका
- पंचशील पद्यानुवाद चंद्रिका
- अमृत बिंदु पद्यानुवाद

लघु प्रवचन कृति
- प्रवचन प्रभा (हिन्दी, अंग्रेजी)
- प्रवचन प्रदीप (हिन्दी, अंग्रेजी)
- प्रवचन पीयूष (हिन्दी, अंग्रेजी)
- तत्व तरंगिणी

कथा-साहित्य
- भवान्धेस्तारको-गुरु (आचार्य श्री विमलसागर जी पर)
- गुरुवो भवन्ति शरणं (आचार्य श्री विद्यासागर जी पर)
- वात्सल्य पर्व (रक्षाबंधन)

बाल्य संस्कार साहित्य
- चिंता रहस्य (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी)
- जीवन रहस्य
- आनन्दित जीवन
- धैर्य
- सम्यक विचार
- सहज जीवन
- सही सोच

आध्यात्मिक नीति सूत्र लेखन
- सत्यार्थ- बोध (हिन्दी, अंग्रेजी प्राकृत, संस्कृत)
- बोधिसूत्र (हिन्दी, मराठी, प्राकृत)
- सार-सूत्र (हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, प्राकृत)
- पंचशील सिद्धांत (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी)
- सम्यक विचार

# ज्येष्ठ आचार्य श्रेष्ठ शिष्य गणाचार्य श्री के पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी

- श्रमण प्रणत सागर
(शिष्यः पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी)

जिनागम में पूर्वाचार्यों ने अनेक सम्बन्धों की व्याख्या की है, जिनमें से श्रद्धा-श्रद्धेय सम्बन्ध को छोड़कर शेष सभी सम्बन्ध संसार के ही कारण हैं। मात्र एक श्रद्धा-श्रद्धेय सम्बन्ध भव सागर से पार कराने में निमित्त है और वह सम्बन्ध भक्त और भगवान का भी हो सकता है। प. पू. पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर जी में दोनों ही सम्बन्ध देखने को मिलते हैं, प. पू. गुरुदेव सच्चे जिनेन्द्र भक्त हैं तो अच्छे शिष्य भी हैं। बचपन से ही उनमें सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा देखने को मिलती है। ग्रीष्मकाल के समय उनके रूर गांव एक किसान के खलिहान में आग लग गई, उस किसान ने उसे बुझाने का प्रयास किया पर स्वयं को असफल होते देख वह भागते-भागते लला के पास पहुंचकर कहता है कि अब आप ही कुछ करो और लला ने पास में ही पड़ी हुई मिट्टी हाथ में उठाकर श्रद्धा पूर्वक परमात्मा का स्मरण करते हुए उस आग पर फेंक दी और आग शीघ्र ही बुझ गयी। प. पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी गुरूदेव के शरीर के पृष्ठ भाग में एक बहुत बड़ा फेड़ा हो गया था, जिसकी असहनीय वेदना होने पर भी वे 1 किमी दिन में दो बार भगवान के दर्शन करने जाते थे और इस जिन भक्ति का ही परिणाम रहा कि वह वेदना अल्पकाल में ही समाप्त हो गयी।

घटना उस समय की है जब प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी संघ सहित फूफ (भिण्ड) नगर में विराजते थे और प. पू. गुरूवर विशुद्धसागर जी का मंगल विहार विराट नगर (राज.) के लिए उसी मार्ग की ओर चल रहा था, गुरू दर्शन के निमित्त प. पू. गुरूवर एक दिन में लगभग 40 किमी का विहार करते हुए फूफ नगर में पहुंचे, गणाचार्य श्री जी ने अपने संघस्थ साधुओं को अपने ज्येष्ठ शिष्य की आगवानी हेतु भेजा। जब प. पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी अपने गुरू के समक्ष पहुंचे तो उन्होंने भक्तिपूर्वक गुरू वंदना की और प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी, आचार्य विशुद्धसागर जी से कहते हैं कि आओ, आ. विशुद्ध सागर जी सिंहासन ग्रहण करो, तब प. पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी सिंहासन हटाने के लिए इशारा करते हुए कहते हैं कि नहीं गुरू जी ! मैं आचार्य अपने शिष्यों के लिए हूं न कि अपने गुरू के लिए अपने गुरू के लिए तो मैं शिष्य ही हूँ।' ऐसे श्रेष्ठ शिष्य हैं। प.पू. श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी और उनकी यह सरलता ही उन्हें अपने गुरू के ज्येष्ठ आचार्य होने का गौरव दिलाती है। उनकी इस सरलता और सहजता का ही परिणाम है कि हमारे गुरूवर अपने गुरू के मुख से उच्चारित उस सर्वसंघ की जिम्मेदारी रूप पट्टाचार्य पद को प्राप्त हो रहे हैं,

# श्रमण तिलक पट्टाचार्य 108 विशुद्धसागर जी

- महामनः श्रमण यत्नसागर

सम्पूर्ण भारतीय वसुंधरा मुस्करा रही है क्योंकि इस भूमि पर धरती के देवता निर्ग्रंथ योगियों की पद विहार से सुशोभित है। प्रत्येक भव्य जीव ऐसे योगियों के चरणों में मस्तक झुकाकर स्वयं को अभिभूत समझता है। ऐसे उज्जवल, कीर्तिमान यश के धारक गणाचार्य श्री विराग सागर जी हुये हैं। इनके पांच शतक शिष्यों में सभी शिष्यों की शिष्य शिरोमणि के रूप में या यूं कहें गुरू गुरू शिरोमणि के रूप में श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी इस भू को पवित्र करते हुये पावन पद विहार करते हुये सारे भारत में उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम तक पद विहार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा से प्रभावना की है।

जो अद्वितीय प्रभावना कभी जिनसेनाचार्य, अजितसेनाचार्य, समन्तभद्राचार्य, कुन्दकुन्दाचार्य आदि आदि सहस्रों आचार्यों ने जो जिनशासन की प्रभावना की थी, वहीं प्रभावना या उससे भी अधिक जिनशासन की ध्वजा को सम्पूर्ण विश्व में फहरा रही है। पुरुष हो, युग पुरुष हो, महापुरूष हो, या फिर स्वयं धरती के देवता हो किन्तु समयचक्र और काल के गाल से कोई भी नहीं बच पाता ऐसा ही हुआ। गणाचार्य विराग सागर जी महामुनिराज विहार करते हुये उत्तर भारत से दक्षिण भारत में प्रवेश किया कि काल को यह स्वीकार नहीं था। जालना प्रवेश के पूर्व ही गुरूवर्य ने स्वर्ग में प्रवेश कर लिया। श्री विराग सूर्य अस्त हो गया। जैसा भगवती आराधना, मरणकंडिका आदि ग्रंथों में जिस जैसे समाधिमरण लिखा वैसा ही समाधिमरण महामनः विरागसागर जी ने किया और समाधि के पूर्व उत्तराधिकारी के रूप में सम्पूर्ण संघ, सम्पूर्ण भारत को विशुद्ध सागर दिए।

वे वास्तव में गुरुतर भार के योग्य है, मुझे महामनाः ने महामनः बनाकर असीम कृपा की है। मैं चरणों में नतमस्तक हूँ।

ऐसे गणाचार्य श्री के ज्येष्ठ आचार्य एवं श्रेष्ठ शिष्य के चरणों कोटिशः नमन।

शेष पृष्ठ 1 का.....

**2. तप और साधना का अद्भुत मार्गः** दिगंबर साधु जीवन का मूल आधार है - आत्म संयम, तपस्या और ब्रह्मचर्य। आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने इन सभी आदर्शों को न केवल आत्मसात किया है, बल्कि उन्हें चरम तक पहुँचाकर अनुकरणीय बना दिया है। उनके जीवन की तपस्या इतनी कठोर और विलक्षण रही है कि इसे सुनकर भी सामान्य मनुष्य की चेतना सिहर उठती है।

वे लम्बे-लम्बे उपवास करते हैं कई बार एकासना, बीजमात्र आहार, अठाई, पचखान, उपवासों की श्रृंखला जैसे महान व्रतों का पालन कर चुके हैं। उनका हर आहार एक यज्ञ होता है जिसमें वे अपने संकल्प, संयम और आत्मशुद्धि को समर्पित करते हैं। आहार में वे अत्यंत सीमित, सात्विक और ध्यानयुक्त रहते हैं, जिसमें स्वाद का नहीं, बल्कि साधना का भाव प्रबल होता है।

विहार के समय वे न तो मौसम की चिंता करते हैं, न मार्ग की कठिनाइयों से विचलित होते हैं। तप, त्याग और सहिष्णुता उनके जीवन के अंग बन चुके हैं। उन्हें कभी विश्राम की चिंता नहीं रही वे कहते हैं, ''मुनि का विश्राम आत्मा में है, देह में नहीं।''

उन्होंने अनेक बार गहन जंगलों, पर्वतों और बीहड़ों में रहकर एकांत साधना की है - जहाँ न सुविधा थी, न शोरगुल, केवल आत्मा और परमात्मा के बीच संवाद था। कई बार उन्होंने कठोर साधनाओं के माध्यम से जीवन को इतना निर्मल और पवित्र कर लिया कि वे स्वयं एक चलते- फिरते तीर्थ बन गए।

उनकी साधना आत्म-प्रेरित है - किसी दिखावे या प्रसिद्धि के लिए नहीं । वे कहते हैं: ''तप वही श्रेष्ठ है जो आत्मा को निर्मल करे, अहं को नहीं बढ़ाए।'' उनके जीवन की यह तपस्या नई पीढ़ी को यह संदेश देती है कि भौतिक सुख-सुविधाएँ ही जीवन का उद्देश्य नहीं हैं - आत्मा की उन्नति ही सच्चा पुरुषार्थ है।

**3. ज्ञान, विचार और प्रवचन शैलीः** आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज की वाणी में गहराई और सरलता का अद्भुत समन्वय है। वे जिस विषय पर बोलते हैं, उसमें आत्मा की गूंज सुनाई देती है। उनके प्रवचन किसी शास्त्र को रटकर बोले गए शब्द नहीं होते, बल्कि आत्म अनुभूति से निकले हुए विचार होते हैं। वे गूढ़ जैन सिद्धांतों को सरल भाषा में, उदाहरणों के माध्यम से समझाते हैं। बच्चे, युवा और वृद्ध - सभी उनके प्रवचनों से प्रभावित होते हैं। उनका प्रमुख उद्देश्य है धर्म को जन-जन तक पहुँचना, और वह भी बिना बोझ या भय के वे कहते हैं:

''धर्म डराने के लिए नहीं, समझाने के लिए है। धर्म सिर झुकवाने के लिए नहीं, आत्मा को उठाने के लिए है।''

उनके प्रवचनों में आत्मा की स्वतंत्रता, अहिंसा की महिमा, संयम की शक्ति और वैराग्य की - सुगंध रहती है। वे वर्तमान समस्याओं पर भी प्रकाश डालते हैं जैसे नशा, व्यसन, भोगवाद, और पारिवारिक विघटन और उनके समाधान भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देते हैं।

**4. समाज में योगदान और जागरूकता अभियानः** आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी का कार्यक्षेत्र केवल मुनियों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के हर वर्ग तक उनकी चेतना पहुँची है। उन्होंने अनेक सामाजिक जागरूकता अभियान चलाए हैं:

**नशा मुक्ति अभियानः** वे युवा वर्ग को नशे से दूर रहने की प्रेरणा देते हैं और व्यसनमुक्त समाज का निर्माण करने का आह्वान करते हैं।

शाकाहार प्रचारः आचार्य श्री ने विभिन्न नगरों में शाकाहार रैलियाँ, गोष्ठियाँ और प्रेरणादायक प्रवचन देकर मांसाहार का विरोध और अहिंसा का समर्थन किया।

**गौ-संरक्षणः** उन्होंने कई गौशालाओं के निर्माण और संचालन में मार्गदर्शन दिया है।

**अहिंसा यात्राः** उनके विहार को 'अहिंसा यात्रा' की संज्ञा दी गई, जिसमें हर पड़ाव पर समाज को कुछ न कुछ देने का भाव रहता है। मानते हैं कि धर्म तभी सार्थक है जब वह समाज को सशक्त बनाए, और उनकी हर गतिविधि इस सोच को दर्शाती है।

**5. युवाओं के लिए प्रेरणास्रोतः** आज की युवा पीढ़ी जहाँ भ्रमित तनावग्रस्त और अस्थिर है, वहाँ आचार्य श्री का व्यक्तित्व एक दीपस्तंभ जैसा कार्य करता है। उनके प्रवचन में युवा मन की उलझनों का समाधान मिलता है। वे युवाओं को आत्मनिर्भर बनने, संयम का पालन करने, और जीवन में उद्देश्य तय करने की प्रेरणा देते हैं। वे कहते हैं: ''युवाओं का जीवन स्मार्टफोन से नहीं, स्मार्ट संकल्प से सफल होता है। उनकी प्रेरणा से हजारों युवाओं ने जीवनशैली बदली है। व्यसन छोड़े हैं, सेवाभाव अपनाया है, और कई तो संयम पथ पर भी अग्रसर हुए हैं। वे शिक्षा और आत्मचिंतन के संतुलन को महत्वपूर्ण मानते हैं।

**6. शासन और संघ निर्माण में नेतृत्वः** दिगंबर परंपरा में आचार्य पद सर्वोच्च स्थान रखता है, और आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी इस पद को अपनी साधना, ज्ञान और नेतृत्व से गौरव प्रदान कर रहे हैं। उनके संघ में मुनि, ऐलक और क्षुल्लक जैसे अनेक संयमी साधु हैं, जिन्हें वे विनयपूर्वक मार्गदर्शन देते हैं। वे शास्त्रों का गंभीर अध्ययन करवाते हैं, और व्यावहारिक साधना की ओर प्रेरित करते हैं। उनके नेतृत्व में अनेक दीक्षा महोत्सव आयोजित हुए हैं, जिनमें युवक-युवतियाँ संसार को त्याग कर आत्मकल्याण के मार्ग पर बढ़े हैं।

**7. विशेष अभियान और ऐतिहासिक उपलब्धियाँः** आचार्य श्री के आशीर्वाद से देश के कई भागों में ऐतिहासिक आयोजन हुए हैं, जैसेः पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, जैन तीर्थों की पुनःस्थापना, मंदिरों का जीर्णोद्धार और नूतन निर्माण, पुस्तकों और प्रवचन संग्रहों का प्रकाशन।

वे एक साथ साधना और संगठन दोनों को संभालते हैं। यह उनका संतुलित दृष्टिकोण है जो उन्हें विशेष बनाता है।

**8. विचारों की गहराई और भावनाओं की ऊँचाईः** उनके विचार न केवल तात्कालिक समाधान देते हैं, बल्कि जीवन की दिशा भी तय करते हैं। उनके कुछ प्रमुख कथन हैं:

''दुनिया बदलने की सोच से पहले खुद को बदलो।'' ''मौन सबसे बड़ी वाणी है, जब वह आत्मा से निकलती है।'' ''धर्म वही जो भीतर उतरे, केवल कानों में नहीं गूंजे।'' ''जितना देखो बाहर, उससे हजार गुना बड़ा है तुम्हारा भीतर।'' उनकी भावनाएँ करुणा, अहिंसा, मैत्री और आत्मसाक्षात्कार से भरी होती हैं। वे जीवन के हर मोड़ पर आध्यात्मिक दृष्टिकोण देने वाले पथप्रदर्शक हैं।

**निष्कर्षः** आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का जीवन एक जीवंत ग्रंथ है - जिसमें तप, त्याग, सेवा और आत्मचिंतन के सभी अध्याय मिलते हैं। वे उन विरले मुनियों में से हैं, जो केवल उपदेश नहीं देते, बल्कि स्वयं उन सिद्धांतों को जीते हैं। आज जब समाज दिशाहीन होता जा रहा है, जब धर्म केवल बाहरी आडंबर बनता जा रहा है, तब आचार्य श्री जैसे संत एक लौ की भांति हैं जो चेतना को जाग्रत करते हैं। हमें उनके जीवन से यह शिक्षा मिलती है कि सत्य, संयम और साधना से न केवल आत्मा की उन्नति संभव है, बल्कि समाज का भी कल्याण हो सकता है। उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि- ''साधु वह नहीं जो केवल जंगल में तप करे, साधु वह है जो समाज को अपनी तपस्या से जागृत कर दे।''

**आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के चरणों में कुछ पंक्तियाः**

**आचार्य हैं विशुद्ध सागर,**
**तेजस्वी तप के लाल,**
**संयम, साधना, शांति में,**
**उनका अनुपम है भाल।**
**वाणी से बहता ज्ञान जल,**
**चित करें निर्मल,**
**हर शब्द में होता झलकता**
**आत्मा का संबल।**
**त्याग की दीपशिखा बनकर,**
**पथ को करें प्रकाशित,**
**मौन में भी वह कह जाएँ,**
**उपदेशों से विस्तृत।**
**जंगल हो या नगर धरा,**
**सबमें बांटे प्रकाश,**
**सच्चे संत की परिभाषा,**
**उनके चरणों का वास।**
**प्रेरणा हैं वे समाज की,**
**ज्यों गगन का चाँद,**
**सादगी में समाया जिनमें,**
**दिव्यता का भंडार अपार।**

पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता
उत्कर्ष समूह भारत
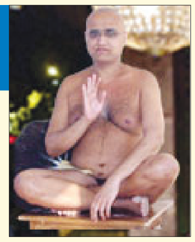

संजीव जैन, मनीषा जैन, प्रतीक जैन, पूजा जैन, प्राची जैन, दृश्या जैन, लखनऊ

# स्वाध्याय प्रभावक आ. विशुद्ध सागर जी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

**महावीर दीपचंद ठोले**
**छत्रपती संभाजी नगर**

''जिनके गुणों से हमसे गाया नहीं जाता, जिनकी साधना का अंदाजा कभी लगाया नहीं जाता, जिनकी तपस्या का गुणगान करें तो कैसा करें कि दुनिया में ऐसा अजूबा कहीं पाया नहीं जाता'' ऐसे अकल्पनीय, अद्भुत, अनोखे, साधना में दुर्धर चर्या शिरोमणि आचार्य विशुद्ध सागर जी के चरणों में श्रद्धा, भक्ति, और समर्पण के पुष्प अर्पण करता हूँ। हमने साक्षात् भगवान महावीर को तो नहीं देखा पर आचार्य विशुद्ध सागर जी को देखकर भगवान महावीर के ही दर्शन हो रहे ऐसा प्रतीत होता है क्योंकि आप सादगी की जीती जाती तस्वीर हैं। स्वभाव में विनम्र और बर्ताव में कबीर है। आप चले, पद यात्रा करें तो चल तीर्थ ही चल रहा है ऐसा प्रतीत होता है। आप कलम उठाए तो समयसार जैसे महान ग्रंथ बन जाएं। जब आपकी देशना होती है तो साक्षात् महावीर की ही देशना हो रही है, ऐसा महसूस होता है। जब आप ध्यान में लीन रहते हैं तो साक्षात तीर्थंकर की ही छवी दृष्टिगोचर होती है। आपके पास ना कोई जमीन का टुकड़ा, ना कोई आश्रम, ना कोई मठ है। सिर्फ कमण्डलु और पिछी ही आपकी जायदाद है। हम तो कहते हैं कि आप साक्षात ईश्वर के ही अंश और दरवेश हो इसलिए तो आपके चरणों में सारा देश होता है। ऐसे आचार्य श्री का अवतरण 18 दिसंबर 1971 के पावन अवसर पर राजेंद्र कुमार के रूप में पिताश्री राम नारायण जी के आंगन में, मां श्रीमती रतीबाई जैन (पोरवाल) की कोख से हुआ। पुत्र रत्न के रूप में राजेंद्र कुमार का उदय एक आनंद का अद्भुत उत्सव था। बचपन से ही यह सुंदर सलोना सा बालक विलक्षण प्रतिभा संपन्न था। मेघा अदभुत थी। 18 वर्ष की आयु में ही आपने ब्रह्मचर्य व्रत को अंगीकार कर लिया और 21 नवंबर 91 के शुभ दिन आपके जीवन के परिवर्तन का मानक दिवस बन गया। श्री क्षेत्र श्रेयांसगिरी के पवित्र

धरा पर मुनी विशुद्ध सागर जी का अविर्भाव हुआ। इस युवा साधक के चित्त में अपनी आत्मा को निर्मल करने की एक ही धुन थी और दृष्टि लगी थी मोक्ष पद की प्राप्ति की ओर। बचपन से ही उनकी स्थितप्रज्ञता, योगत्रयी की एकाग्रता, कठोर संयम, आत्मानुशासन और सहिष्णुता विस्मयकारी थी। उनकी स्थिरता, साधना के प्रति जागरुकता और धृति संपन्नता निश्चित ही दीक्षा गुरू आ. विराग सागर जी को भविष्य के प्रति आस्वस्त करने वाली थी। उनके कृपा दृष्टी से इतिहास के पृष्ठों ने करवट ली और छत्रपति संभाजी नगर औरंगाबाद महाराष्ट्र में 31 मार्च 2007 को आप आचार्य पद पर विराजित हो गये।

तप की अप्रतिम विभूति, सुचिता के पवित्रतम वैभव, संस्कृति के विलास रूप- रत्नों के प्रकर्ष और श्रेयस के समुल्लस, अत्यंत मृदु, करुणाशील, विनम्र, प्रशांत, निस्पृही निर्लिप्त, निर्विकार, निरंहकारी और निश्चिलता के अप्रतिम अभ्यासी पूज्य ज्योतिर्मय गुरुवर आचार्य विशुद्ध सागर जी इस युग के महावीर ही है। आचार्य श्री आत्म ऊर्ध्वारोहण के अप्रमत्त साधक है। जो युग को अमृत निधि बांटने वाले वितरागी पथ के ऐसे पथिक है जो ज्योतिर्मय है, रसमय है, ऊदितोदित व्यक्तित्व के धनी है। आपका हर प्रशस्त चिंतन, हर मधुर वचन, हर सुविहित आचरण मंगलमय तो है ही और चिरस्मरणीय भी। आपका तप प्रदर्शन का माध्यम नहीं है, प्रत्युत वह तो कषाय मुक्ति और आत्मा की परिशुद्धि का अभियान है। आपके मुखमंडल पर चंद्र के समान सौम्य तेजस्विता सदैव छाई रहती है जो आपके सद्गुणों की सुगंध से सुरभित है। आपके ज्ञान की क्रांति जीवन की क्रांति बन गई है। सम्यक ज्ञान से निरीक्षण, निरीक्षण से ज्ञान, ज्ञान से मुक्ति यह धर्म मार्ग आचार्य श्री ने अपनाया है जो उन्हें मुक्तिपथ की ओर ले जा रहा है।

पूज्यपाद आचार्य श्री तेजस्विता एवं ऊर्जस्वीता के संग अप्रमत्त उर्ध्वमुखी साधक स्वरूप में अपने श्रमणत्व के प्रति प्रतिपल जागरूक और लक्ष्य के प्रति अप्रमत्त रहे हैं। जहां उनका अनुत्तर संयम, अनुत्तर आचार, अनुत्तर विचार, अनुत्तर व्यवहार और अनुत्तर संस्कार अनकहे ही उनकी साधना के दिव्य उजास को विस्तारित करता रहा है। जिसमें प्रमुदित हो जनमानस उनके मन, वचन और कर्म की युति से वितराग पथ की ओर पुरुषार्थ पथ की बारंबार वंदना करता है।

ज्ञान की आगाधता, आत्मा की पवित्रता, सृजन धर्मिता और अप्रमत्तता और विनम्रता उन्हें विशिष्ट श्रेणी में स्थापित करती है। उनका जीवन स्फटिकसा समुज्वल, कांच सा पारदर्शी है। जिसमें चारित्र की पवित्रता और संयम की पराकाष्ठा है। मोक्ष पद के साधक हैं वे। उनकी संयम साधना का परम लक्ष्य है मुक्ति, जिसकी आधारशिला है उनका समाधि उन्मुख जीवन। उनका जीवन वृत एक आदर्श है, एक अभिनव प्रेरणा है।

आचार्य श्री के नयनों में सदा स्नेह का बहता हुआ झरना, मुखमंडल पर सदैव गंभीर सात्विक मंद मुस्कान, सुशोभित रहती है। उनके सिद्धहस्त हाथ हरदम सबके उत्थान में तत्पर है। चरण युगल सम्यकज्ञान, दर्शन चारित्र की उत्कृष्ट साधना हेतु गतिमान है। तपस्विता, मनस्विता, सतत ज्ञानोपयोगिता, स्वाध्याय शीलता, साहित्य सृजन, सेवा भावना के भागीरथी समप्रवाह से उनके बेजोड़ पुरुषार्थ की जीवन्त कहानी, घड़ी की अनवरत चलती सुईयों की भांति लिख रही है एक अमिट गाथा काल के कपाल पर। आचार्य श्री की अक्षुण्ण ग्यान धारा एवं अविरत चलने वाली कलम से अब तक शताधिक ग्रथों का सृजन हुआ है, हो रहा है। इनमें से कई ग्रथों को विश्वविद्यालयों में शोध कार्य के लिए सम्मिलित किया गया है। जिससे जिन धर्म का प्रचार प्रसार के साथ अनेक छात्र डाक्टरेट, पीएचडी की ऊपाधि भी प्राप्त करेंगे।

आप भारतीय संस्कृति के संवाहक हैं। प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक की संस्कृति उसमें संन्निहित है। जिसके कारण वेठ बन गए हैं प्राचीन और अर्वाचीन संस्कृतियों के संगम स्थल।

आचार्य श्री यशस्वी, तेजस्वी, मनस्वी, साधनाशील, प्रभावी, बहुआयामी व्यक्तित्व तथा विलक्षणता का एक गुलदस्ता है। श्रद्धा, सेवा, विनय, विवेक, समर्पण की पंचज्योती से ज्योतित उनका जीवन साहस और पुरुषार्थ की जलती दीप सीखा है। वस्तुतः वे सत्य निष्ठा, चारित्र निष्ठा, आत्म निष्ठा, गुरु निष्ठा, आज्ञा निष्ठा की सुरभि दसों दिशाओं में फैलाने वाली विश्व की महान विभूति हैं। आचार्य श्री परमार्थ को समर्पित एक ऐसी विशुद्ध आत्मा का अभीधान है जिनके आभामंडल में वीतरागता की स्थितप्रज्ञता साकार होती है और होती रहती है निरंतर प्रवाहमान। अनुकंपा से ओतप्रोत यह एक ऐसे महर्षि का अभिधान है, जिनका क्षण क्षण आत्म कल्याण और जनकल्याण के सम्यक प्रवर्तन हेतु नियोजित है।

आचार्यश्री एक ऐसे दिव्य संत हैं जिनका आधार है जिनवाणी, जिनका आचार है वीतराग की दिशा में निरंतर गतिशीलता, रत्नत्रय की आराधना। जिनके विचार हैं सत्य की अप्रतिम उपासना, जिनका व्यवहार है मृदु करुणाशील, विनम्र, प्रशांत। जिनका स्वाभाविक स्वभाव है समय प्रबंधन।

अत्यंत सामान्य किंतु प्रभावशाली और वात्सल्य परिपूर्ण - शब्दों में गुम्फ़ित उनका शंखनाद जन-जन के अन्तस्थल में उत्कीर्णित हो जाता है और उनके प्रबोधन को आत्मसात कर जीवन को धन्य बना लेने की प्रवृत्ति अत्यंत सहजता के संग अद्भुत हो जाती है। उनके अब तक 15000 से अधिक प्रवचन हो चुके होंगे और 60000 से अधिक पृष्ठों का लेखन हो चुका है। आपने अब तक 100 से अधिक मंदिरों की पंचकल्याणक सम्पन्न कराए हैं। महान प्रतिभाशाली आचार्य विशुद्ध सागर जी उम्र से युवा है लेकिन अनुभव से वृद्ध हैं। अपने उपदेशों से, आगमोक्त आचरण से अनेक शिष्यों को तथा भव्य जीवों को दीक्षा देकर मोक्षमार्ग में लगाया है। लगा रहे हैं। आप शिष्यों को अपनी पैनी छत्री, हथोडे से तराश कर अनमोल हीरे बना रहे हैं और वे भी जैन धर्म की पताका को फहरा रहे हैं। जब आपने दीक्षा ली तो अकेले ही थे लेकिन आज इनका काफिला बहुत बड़ा हो गया है। कहते हैं ना अकेला ही चला था जानेबी मंजिल की ओर। साथी मिलते गए और कारवा बढ़ते गया। आपके पास मुल्क के पॉलिटिकल रहनुमा हो, बड़े-बड़े शहजादा, कानूनगो, डॉक्टर, इंजीनियर, विद्वान, पंडित ऐसी एक से एक नामचीन हस्तियां आपके दर पर कदमबोसी को पहुंचती है। गजब का अजूबा है। कहते हैं जिसने भी इस निष्काम मसिहा की कदमबोसी की वह खुशहाल और मालामाल हो गया। कहते हैं कुशल शिल्पी के हाथ पत्थर लग जाए तो वह मूर्ति बन जाती है। बीज को कुशल माली मिल जाए तो वह वटवृक्ष में रूपांतरित हो जाता है। वैसे ही पतन में डूब रही समाज को आचार्य

**❑ दिगंबर जैन साधु मर सकता है लेकिन दूसरे को मारने के लिए विद्या सिद्ध नहीं कर सकता। जब किसी व्यक्ति को उछाला जा रहा हो, जब किसी व्यक्ति को अपवादित किया जा रहा हो तो एकदम से धारणा नहीं बनाना, थोड़ा सोचना जरूर ये महान पवित्र आत्मा है क्योंकि अच्छे लोगों को उछालने में ही मजा आता है। जिसको किसी ने रंग न लगाया हो, उसको रंग लगाने का मजा अलग है, होली है। ज्ञानी व्यक्ति को कहा इसको होली मानो, वे कहते हैं हमें उसी को दाग लगाना है, जिसमें आज तक कोई दाग नहीं है। हमें उसी को गाली देना है जिसको दुनिया आज तक पूजती है, हमें उसी की निंदा करना है जिसकी सारी दुनिया प्रशंसा करती है।**

**- मुनिपुंगव सुधा सागरजी**

उत्कर्ष समूह भारत

## पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता

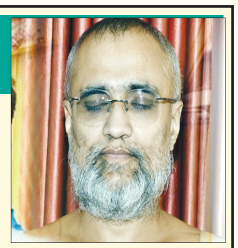

**रोहित श्वेता जैन, ऋषि एवं राशी जैन, जैन जरी पैलेश गोटें वाले परिवार, इंदिरा नगर, लखनऊ**

# संस्मरण : अमूल्य निधि के रूप में हमें गुरु मिले

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विराग सागर जी मुनि महाराज के परम प्रभावक सुशिष्य श्रमण मुनि 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का वर्ष 1997 का चातुर्मास धर्म नगरी दुर्ग एवं 1998 का पावन वर्षायोग इस्पात नगरी भिलाई के त्रिवेणी तीर्थ में धर्म प्रभावना पूर्ण सानंद संपन्न हुआ।

अब भाग्य जागे नवापारा राजिम नगर के, जब मुनिश्री के शीतकालीन वाचना का सौभाग्य मिला। मुनिश्री कड़कड़ाती ठंड में भिलाई से रायपुर होते हुए राजिम की ओर विहार कर रहे थे। एक ओर नवापाटा दूसरी ओर राजिम बीच में बहती त्रिवेणी संगम महानदी, पैरी एवं सोंदूर नदी के स्वच्छ जल की धार। ऐसे त्रिवेणी संगम पर छत्तीसगढ़ की जीवनदायिनी महानदी के तट पर बसी हमारी नागरी नवापारा, मुनिश्री ने ससंघ मंगल प्रवेश किया, वह शुभ तिथि 10 दिसंबर थी। समाज के साथ-साथ नगर के सभी समुदाय के लोगों के मुनिश्री की भव्य आगवानी की।

मुनिश्री ने शुभ घड़ी देखकर रयणसार ग्रंथ की वाचना प्रारंभ की। छोटी सी वय के छोटे से महाराज का आगम सम्मत ज्ञान एवं आगमोक्त चर्या पूरे नगर में चर्चा का विषय बन गया। यही कारण था कि वाचना में श्वेतांबर समाज के बहुत से श्रावक आते थे साथ ही साथ अन्य समाज के धर्मावलंबी भी उत्साहपूर्वक उपस्थित होकर ज्ञान गंगा में अवगाहन करके अपने आपको धन्य मानते थे। यहां तक कि वाचना का मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य भी श्वेताम्बर समाज के श्रेष्ठी ने पाया। मुनिश्री के ज्ञान की पताका पूरे नगर में फहराने लगी इसलिए भोर के सूर्य की भांति ही श्रोताओं की संख्या भी प्रतिदिन बढ़ने लगी।

एक ओर जहां मुनिश्री के श्रीमुख से निःसृत जिनवाणी श्रोताओं के ज्ञान में वृद्धि कर रही थी तो दूसरी ओट गुरुजी का वात्सल्य सभी की श्रद्धा को द्विगुणित कट रहा था। मुनिश्री का अबाल वृद्ध सभी के प्रति समान वात्सल्य जिनधर्म की प्रभावना को नितप्रति वर्धमान कर रहा था। युवाओं का तो कहना ही क्या वह तो गुरु चरणों में ऐसे नतमस्तक हो गया था मानो कोई निधि ही मिल गई हो। प्रातः जंगल के समय लगभग 50 से अधिक की संख्या में बच्चे एवं युवा गुरूदेव के साथ होते थे।

वाचना अपने युवावस्था को प्राप्त हो रही थी तभी एक ऐसी घटना घटी जिसने सभी के हृदय को मुनियों के प्रति श्रद्धा से लबालब कर लिया। मुनि श्री प्रतिदिन की चर्या में लेखन भी शामिल था। वे रोज कुछ न कुछ अवश्य लिखते थे परंतु विगत् दो तीन दिनों से गुरुजी की लेखनी शांत थी, एक जिज्ञासु श्रावक ने प्रश्न किया - महाराज श्री आप प्रतिदिन कुछ न कुछ लिखते अवश्य थे पर कुछ समय से आपकी लेखनी स्थिर है। गुरुजी ने जो उत्तर दिया वह हृदयस्पर्शी था, उन्होंने कहा मेटी पेन की रिफिल समाप्त हो गई है इसलिए लिखना बंद है। आपने पूछा इसलिए बतला दिया पर आप लाना नहीं। उनकी बात सुनकर लगा कि जैन मुनि भिक्षु तो होता है पर भिखारी नहीं। इस घटना ने हम सभी को इतना प्रभावित किया कि सच्चे मन से हमने उन्हें अपना गुरु मान लिया।

समय का पंछी पंख लगाकर उड़ता चला जा रहा था आखिरकार वह बेला भी आ गयी जब गुरुदेव का विहार पंचास्तिव प्राचीन नगरी आरंग होते हुए रायपुर की ओर होना था। विहार पूर्व गुरुवर की प्रवचन सभा में पूरे वर्णी भवन के भीतर एवं बाहर श्रावकों का हुजूम था। गुरुवर ने जब संबोधन दिया तो उपस्थित विशाल जन समूह के मध्य कोई भी ऐसा नहीं होगा जिसकी आंखें नम न हुई हों। सभी ने अश्रुपूरित नयनों से गुरुवर को विदा किया। युवाओं एवं बच्चों ने भी अपने आंसुओं से गुरूजी का पाद प्रक्षालन कर उनके साथ बिहार में जाने का संकल्प लिया और हम आठ युवाओं ने अपने आराध्य गुरुदेव के 'चरणों में अष्ट द्रव्य की भांति में अपने आपको समर्पित कर दिया। उस समय हम सभी का रात्रि भोजन, आलू प्याज, होटल एवं चप्पल का त्याग था। गुरुदेव के साथ हम सभी चल पड़े गुरुचरणों के पीछे-पीछे। गुरुजी के प्रति श्रद्धा का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है लगभग 18 किलोमीटर तक बच्चे से लेकर बूढ़े तक पद विहार में शामिल थे, उसके बाद सभी गुरुदेव का आशीष प्राप्तकर वापस लौट गए। शेष रह गए हम आठ सदस्य।

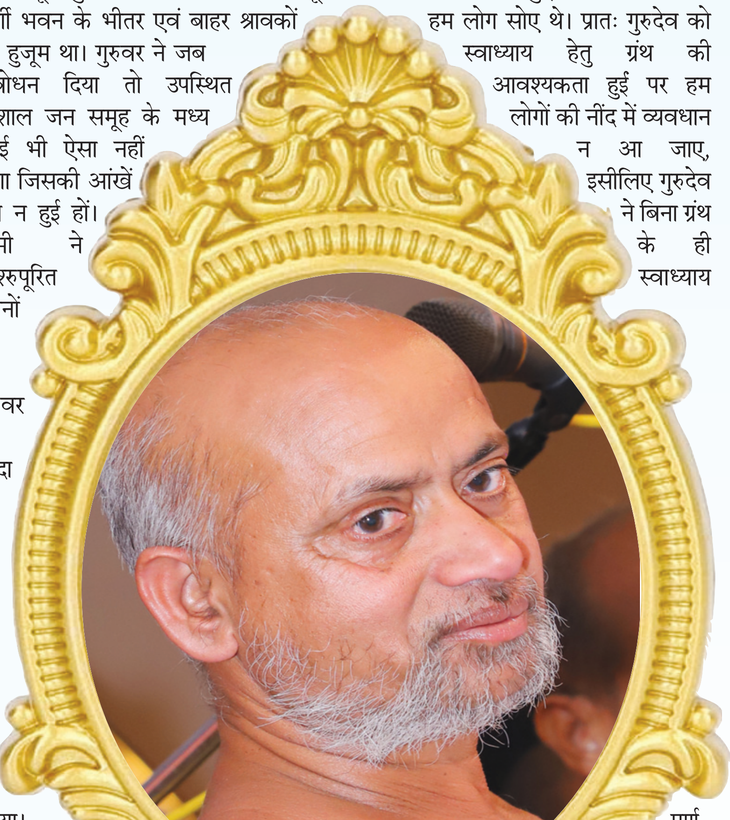

गुरुदेव ने विहार करते हुए आरंग स्थित प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन किए और बताया कि यहां पूर्व में बहुत बड़ी जैन समाज निवास करती होगी। संघ विहार करता हुआ, रात्रि विश्राम हेतु ग्राम लखोली पहुंचा। रात्रि विश्राम एक छोटे से हालनुमा जिससे लगी छोटी सी कोठरी जहां शास्त्र जी रखे हुए थे। उसी स्थान पर हम लोग सोए थे। प्रातः गुरुदेव को स्वाध्याय हेतु ग्रंथ की आवश्यकता हुई पर हम लोगों की नींद में व्यवधान न आ जाए, इसीलिए गुरुदेव ने बिना ग्रंथ के ही स्वाध्याय पूर्ण किया। विहार पुनः प्रारंभ हुआ रास्ते में गुरुदेव ने कहा - आज मेरा स्वाध्याय अधूरा रह जाता, हमें खेद हुआ। हमने कहा गुरुवर हमारे कारण आपका स्वाध्याय नहीं हो पाया हमें क्षमा करें। तब गुरुदेव ने कहा - मेरा स्वाध्याय तो हो गया क्योंकि मुझे याद था, पर तुम लोग ध्यान रखना, कितना भी याद हो बिना देखे नहीं पढ़ना। देखकर पढ़ोगे तो एकाग्रता रहेगी, चित्त भटकेगा नहीं और भूल गए तो तुरंत सहीं पढ़ लोगे। हम धन्य हुए ऐसे वात्सल्यमूर्ति गुरु को पाकर हम लोगों ने गुरु उपदेश को गांठ बांधकर रख लिया। ऐसे ही पूरे विहार में गुरुदेव हमें छोटे-छोटे संबोधन से धर्म का मर्म बतलाते जाते थे।

शनैः शनैः विहार का अंतिम पड़ाव भी वैसे ही आ गया जैसे सूर्य उदयाचल से अस्ताचल की ओर पहुंच जाता है। इसी भावना के साथ विहार के सहयोगीः हम गुरुदेव के साथ विहार करते हुए रायपुर पहुंचे, वह दिन था माघ पूर्णिमा 31 जनवरी 1999 ट्रायपुर समाज ने गुरुदेव की भव्य आगवानी की, गुरुवर फाफाडीह मंदिर जी में विराजमान हो गए। आहार पश्चात् हम सभी गुरुदेव के श्री चरणों के सम्मुख बैठे थे। समय था निज घर की ओर लौटने का, गुरुजी भी शांत हम भी शांत कोई भी कुछ नहीं बोल रहा था। हम प्रतीक्षा कर रहे थे गुरुदेव कुछ संबोधन प्रदान करें पर गुरुदेव हमारे भावों को समझ रहे थे, इसलिए शांत थे। जैसे बांध में रुका हुआ पानी उछल- उछल कर बाहर आने का प्रयास करता है और गेट खुलते ही तेजी से बहने लगता है, वैसे ही विगत् कुछ समय से रुके हुए हमारे आंसू भी तीव्र प्रवाह के साथ बहने लगे। हम रागी लोग वीतरागी गुरु के समक्ष मोह के वशीभूत दीवाल की ओर मुंह करके, कोई घड़ी को निहारते हुए, कोई सिट को नीचे किए हुए बस टोए जा रहे थे। वह क्षण आज भी हमारे नयनों के सामने यथावत् दृष्टिगोचर होने लगता है, जब हम सभी गुरु के सम्मुख बैठकर नैनों से अश्रुपात कर रहे थे और गुरूदेव हमें मध्यम स्वर से संबोधन प्रदान कर रहे थे, लेकिन हमारे आंसू थे कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। बहुत देर पश्चात् जैसे हमें होश आया और हमने देखा गुरुजी की सामायिक का समय हो गया है तब हमने गुरुदेव के चरण कमलों में अपना शीश रखकर नमोस्तु वंदन किया और बिना कुछ बोले, बिना पीछे मुड़े हम वापस आने का उद्यम करने लगे। क्योंकि हमें भान था कि यदि गुरुदेव से नजर मिली तो हम वापस नहीं जा पाएंगे। गुरुदेव ने उस दिन हमें संबोधित करते हुए सूत्र प्रदान किया- ज्येष्ठ नहीं श्रेष्ठ बनो। श्रेष्ठता ही ज्येष्ठता की निशानी है। हम सभी उसी पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। धन्य हुआ हमारा जीवन जो ऐसे गुरुदेव का हम पर विशेष आशीष रहा। गुरुदेव का आशीर्वाद हमारी अपनी- अपनी डायरियों पर अपने हस्तकमल से सूत्र अंकित किए जो आज भी हमारे लिए अनमोल निधि की भांति हमारे पास हैं।

गुरु की मनमोहक मुस्कान एवं वात्सल्य को अपने हृदय में संजोकर हम वापस अपने गृहनगर की ओर लौट पड़े।

गुरु के आशीष का ऐसा असर था कि हम उनसे दूर होना ही नहीं चाहते थे। हम वापस तो आ गए पर मन लग ही नहीं रहा था, इसलिए हम सभी प्रतिदिन रात्रि में गुरुजी की वैयावृत्ति करने तब तक रायपुर जाते रहे, जब तक गुरुदेव रायपुर में विराजमान रहे। अभावों के बीच बिना किसी पूर्व योजना के संपन्न हुआ विहार भी गुरु आशीष से सानंद पूर्ण हुआ। इसकी स्मृति हमारे मानस पर आजीवन विद्यमान रहेगी।

हम सभी धन्य हुए कि हमने आगमोक्त चर्या के धनी, वात्सल्यमयी, सरस्वती जिनके कंठ में विराजमान है, जो जग में रहते हुए जग से निस्पृह हैं, ऐसे महासंत को गुरु के रूप में पाया और ऐसे महासाधु के महल विहार करवाने का अभूतपूर्व अवसर हमें प्राप्त हुआ। 1998 से लेकर आज तक वात्सल्यमूर्ति गुरुदेव की कृपा से राजिम नगरी को तीन बार चरण धूलि से पावन होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भले ही अल्प समय के लिए मिला हो। अब हम सबकी एक ही अभिलाषा हे की गुरुदेव का ससंघ चातुर्मास राजिम में हो।

## संघर्ष भी सहर्ष से

**- आर्यिका सिद्धान्तमति माताजी**
**संघस्थ गणिनी आर्यिका शुभस्वस्ति माताजी सुशिष्या**

संघर्ष भी सहर्ष स्वीकार करते हुए, लंबे अंतराय बिहार आदि में जिनका परिषह जय, तीव्र असाता कर्मोदय में आर्त-रौद्र ध्यान से मुक्त निरंतर धर्म-ध्यान अनुप्रेक्षा की शरण लेने वाले, ऐसे आचार्य विशुद्ध- सागरजी महाराज आज जन जन के आदर्श के कारी है। आपके आभामण्डल की किरण से मोक्षमार्ग के लिए प्रेरित करती है, चलती फिरती अध्यात्म की युनिवर्सिटी के महानायक, आप किसी भी ऋतु में, कैसे भी रास्तों पर जिस सहजता से बढ़ाते हो, आप का स्वभाव निष्क्रोध, निर्माण मय दिखाई देता है।'पुण्य फला अरिहंता' के समान आपके स्वभाव अनुसार आपका फल पुण्यमय हो रहा है लेकिन पुण्य के लिए आपका लक्ष्य नहीं है सिर्फजिनशासन जयवंत रहे यही आपका लक्ष है जो स्याद्वाद एवं अनेकांत की बात है। आपके पट्टाचार्य पदारोहण पद के शुभ अवसर पर मेरी और मेरी गुरु माँ के तरफसे ढेर सारी शुभभावना के साथ त्रिवार नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

## श्रुत जलधि पारगेभ्य :

**- आर्यिका सुपर्वभति माताजी**
**संघस्थ- गणिनी आ. शुभस्वास्तमति माताजी सुशिष्या**

**"श्रुतजलधि पारगेभ्यः**
**स्व-परमत विभावना पटु मतिभ्यः।**
**सुचरित तपो निधि भयो,**
**नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः॥**

आचार्य प्रवर आप ऐसे कुशल और बुद्धिमान श्रुतरुपी समुद्र के तीर को प्राप्त है, स्वमत परमत के विचार करने में जिनकी बुद्धि अत्यंत प्रखर है, सम्यक् चारित्र तप, जिनकी निधियाँ है, जिनके पास बहुत मात्रा में गुण है ऐसे आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज के श्री चरणों में आपके पट्टाचार्य पदारोहण पद के शुभ अवसर पर मेरा और मेरी गुरु माँ का और सोडहं भक्त परिवार की ओर से कोटिशः त्रिवार त्रयभक्ति से नमोस्तु।


## पुण्यार्जक एवं नमनकर्त्ता

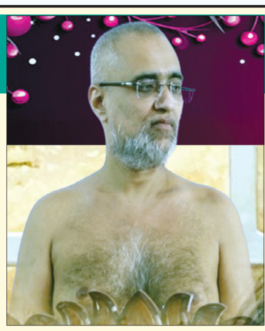

उत्कर्ष समूह भारत

**Ar. VISHAL JAIN**
(Principal Architect)
B.Arch., M.Arch.
Immediate Past Chairman
(IIID LUCKNOW CHAPTER)

NIRVANA
Consultants & Engineers
Architects, Interior Designer, Engineers
Approved Valuer & Vastu Consultants

Add. : 221A, IInd Floor, Sahara Shopping Centre, Ayodhya Road, Lucknow-16 Tel : 0522-4010638, 9415197072, 9335496852
E-mail : vishal.nirvana@gmail.com Website- www.nirvanacons.com

# जीवन में लोभ और वासना बुद्धि को भ्रष्ट करती है

**- आचार्य विशुद्ध सागर जी**

**खरगोन।** जीवन कुख्यात नहीं विख्यात होना चाहिए। खोटे कार्य करने की भावना कीचड़ में पत्थर फेंकने के समान है, जो स्वयं का जीवन बर्बाद करती है। योग्यता रखी नहीं जाती, योग्यता प्रकट की जाती है। यदि योग्यता को बढ़ाना है तो योग्य लोगों के साथ रहना चाहिए। अयोग्य की संगति जीवन बर्बाद करती है, ध्यान रहे सुविधाओं से योग्यता का विकास नहीं होता है। जीवन में किसी के अहित करने का भाव मन में नहीं लाना चाहिए। हमेशा हित करने का भाव रखें। जीवन में लोभ और वासना बुद्धि को भ्रष्ट करती है, इसलिए इनसे बचे, उक्त विचार वेदी शिखर प्रतिष्ठा महा महोत्सव समारोह के प्रथम दिवस चर्या शिरोमणि श्रमणाचार्य, अध्यात्म योगी 108 श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने राधा कुंज सभागृह में व्यक्त किए, पूज्य श्री ने वर्तमान जीवन शैली में अपना जीवन बर्बाद कर रहे लोगों को सुलभ मार्गदर्शन दिया।

**उत्पत्ति विनाश सहित होता है** - आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज ने कहा कि जिस क्रिया से वर्तमान में शांति नहीं है तो भविष्य क्या होगा। धन कमाने के लिए व्यक्ति समय पर भोजन नहीं करता, धन कमाने के लिए शरीर बर्बाद करता है, इस शरीर को बीमारियां होने पर बचाने के लिए अस्पतालों में वही धन खर्च करता है। मोबाइल पर घंटों निंदा में लगा रहता है। ध्यान रहे जो शरीर मिला है वह उत्पत्ति है, उत्पत्ति के साथ नाश प्रारंभ हो जाता है। उत्पत्ति नाश सहित है यही वस्तु तत्व है ध्यान रहे नाश उपकारी होता है जिस प्रकार भोजन यदि पेट में जाने के बाद नाश न हो तो वह नुकसान पहुंचता है इसलिए उत्पत्ति और नाश दोनों ही सार्थक है। मंच संचालक, मीडिया प्रभारी राजेंद्र जैन महावीर, आशीष जैन ने बताया कि खरगोन पोस्ट ऑफिस चौराहा पर स्थित धर्मशाला में मंदिर 80 वर्ष प्राचीन था, जिसे सुंदर ढंग से मकराना के मार्बल से बनाया गया है।

**-राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद**

# आठगांव में 10 दिन का प्रोग्राम

**गुवाहाटी।** महावीर जयन्ती के उपलक्ष्य में गुवाहाटी आठगांव चैत्यालय में 10 दिन का प्रोग्राम रखा गया, जिसमें पहले दिन णमोकार का जाप यह प्रोग्राम हर दिन एक घंटा का था। दूसरे दिन महावीर चालीसा, तीसरे दिन महावीराष्टक का पाठ, चौथे दिन भक्तामर का पाठ व रिद्धी 48 मंत्रों द्वारा दीपक अनुष्ठान, पांचवें दिन भजन संध्या, छटवें दिन भक्तामर की मंगल गीता का पाठ, सातवें दिन सांस्कृतिक पाठ के साथ-साथ भजन, आठवें दिन कल्याण मन्दिर स्तोत्र का पाठ व 44 रिद्धी मंत्रों द्वारा दीप प्रज्वलित, नवमें दिन वर्धमान स्तोत्र का पाठ व रिद्धी मंत्रों द्वारा 64 दीपक अनुष्ठान, दसवें दिन णमोकार मंत्र जाप व भगवान महावीर के बारे में प्रश्न मंच द्वारा 40 दिन का अनुष्ठान का विसर्जन करके हम सभी ने पुण्य अर्जन किया। यह प्रोग्राम सहयोगिता श्रीमती किरण काला द्वारा संजोगा गया व इसमें सभी आंठगांव, महिलाओं व पुरूष वर्ग का सहयोग रहा, सभी के सहयोग से यह कार्य सफल रहा।

**- शेखर चंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता**

भ. महावीर स्वामी की 2624वीं जन्म जयंती पर हार्दिक बधाई एवं मंगलमयी शुभकामनाएं

नाथूलाल जैन सांवला मो. 9799497163
अशोक जैन सांवला मो. 9799497363
संजय कुमार जैन मो. 9799397263

मैसर्स जैन स्टोन
ग्राम लाम्बाखोह, तहसील तालेड़ा, जिला बूंदी
सभी प्रकार के सेण्ड स्टोन के निर्माता व विक्रेता

# पट्टाचार्य महोत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनायें

**- गणिनी आर्यिका विशिष्ट श्री ससंघ (9 पिच्छी)**

भगवान वर्धमान स्वामी एवं प्राचीन पूर्वाचार्यो की युग प्रतिक्रमण, यति-सम्मेलन व श्रमण-श्रमणी की परम्परा को वृद्धिंगत करने वाले वर्तमान युग के वर्धमान, भक्तों के भगवान प. पू. भारत गौरव, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी गुरूदेव के महाप्रभावक चर्या शिरोमणि, अध्यात्मयोगी संत विशुद्ध सागर जी महाराज एक ऐसे महान साधक हैं जिन्होंने अल्पवय से ही जीवन के विशुद्ध क्षणों को आगमिक चर्या, सैद्धांतिक शास्त्रों के गहन अध्ययन व अनुशासन के साथ गुरू चरणों में व्यतीत किया एवं प्रथम शिष्य बन गुरू भक्ति के प्रभाव से श्रमणोच्च आचार्य पद प्राप्त कर देश के कोने-कोने में जिनधर्म प्रभावना कर रहे हैं। ऐसे विशिष्ट ज्ञानधारी सुयोग्य प्रथम शिष्य के लिये आगमिक परम्परानुसार गुरूणां गुरू आचार्य विमल सागर जी एवं अपनी परम्परा को वृद्धिंगत करने हेतु गुरूदेव ने पट्टाचार्य पद सौंपा है। हम सभी इन्दौर की 'पावन धरा सुमति धाम में 30 अप्रैल, 2025 को विशाल श्रमण संघ, विद्वत संघ एवं विशाल जनसमुदाय के मध्य 'पट्टाचार्य महामहोत्सव' का कार्यक्रम मनाने जा रहे हैं। अतः विशिष्ट विरागानुरागी गणिनी आर्यिका विशिष्ट की माताजी एवं ससंघ की ओर से विशुद्ध भावनाओं के साथ गुरूदेव के लिये पट्टाचार्य महोत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनायें। जय विराग।

महावीर जयंती
की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रकाशचंद गंगवाल - अध्यक्ष
निर्मल पाटौदी - संयोजक, महावीर जयंती
विनोद कुमार पाटनी - अध्यक्ष

महावीरप्रसाद गंगवाल - उपाध्यक्ष
विनोद चौधरी - मंत्री
सम्पतकुमार दगड़ा - कोषाध्यक्ष
इन्दरचन्द पाटनी - उप मंत्री

कार्यकारिणी सदस्य :
अजय सोनी (प्रभारी, श्रीमती सूरजदेवी पाटनी सभागृह),
मुकेश दगड़ा, पवन लुहाड़िया
(प्रभारी-श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर, लुहाड़िया बास),
विकास छाबड़ा (मीडिया प्रभारी), पंकज पहाड़िया,
सुभाष चौधरी (प्रभारी-आचार्य विधासागर प्राकृत पाठ.),
ज्ञानचंद पाटनी, आनन्द बज
(प्रभारी-श्री महावीर दि. जैन मंदिर, हा. बोर्ड)
नरेश दगड़ा, महेन्द्र गंगवाल
(प्रभारी-भंवरलाल पाटनी मांगलिक भवन, सब्जी मंडी)
मनोनीत कार्यकारिणी सदस्य :
कैलाशचंद पहाड़िया (निर्वतमान मंत्री),
एम. के. जैन, राकेश मोहन पहाड़िया,
अतुल लुहाड़िया (जायदाद एवं विधि विभाग),
राजीव गंगवाल, अशोक पाटनी (ऊंटड़ा वाले)
(प्रभारी-श्री ऋषभ देव दि. जैन मंदिर, आदिनाथ कॉलोनी)
दीपक रारा, राजेन्द्र चौधरी (सांस्कृतिक विभाग),
कमल दोसी, संजय झांझरी

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पंचायत
मदनगंज-किशनगढ़

दिलीप कासलीवाल (कुचील) - उपाध्यक्ष
सुभाष बड़जात्या - मंत्री
चेतनप्रकाश पांड्या - कोषाध्यक्ष
राजेश पांड्या - उपमंत्री

कार्यकारिणी सदस्य :
अमित बाकलीवाल (इन्दिरा नगर)
भागचन्द गंगवाल (इन्दिरा नगर)
मांगीलाल झांझरी (मुनि संघ व्यवस्था)
अनिल पाटनी-फुलेरा
(ध्रुव फण्ड योजना व्यवस्था)
प्रदीप गंगवाल-रुपनगढ़ (मुनि संघ व्यवस्था)
मुकेश पाटनी-हाउसिंग बोर्ड
(पदमप्रभु जिनालय प्रभारी)
योगेश पाटनी (समाधि स्थल प्रभारी)
सुनिल गदिया (मुनि संघ व्यवस्था)
जितेन्द्र पाटनी (धर्मसागर भवन व्यवस्था)
पदमचंद गंगवाल (विधान पूजन व्यवस्था)
मुकेश बैद (सांस्कृतिक व्यवस्था)
मुकेश काला-बांदरसिंदरी
(सुरसुरा जैन मन्दिर प्रभारी)
गौरव पाटनी (प्रचार प्रसार मंत्री)

श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत
मदनगंज-किशनगढ़

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

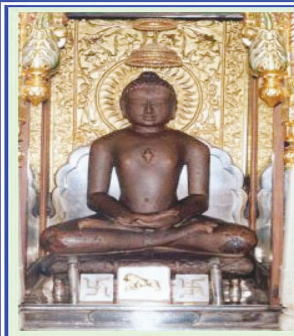

भ. महावीर स्वामी की 2624वीं जन्म जयंती पर हार्दिक बधाई एवं मंगलमयी शुभकामनाएं

ओमप्रकाश जैन
संरक्षक, सकल जैन समाज, बून्दी

रामविलास जैन
कोषाध्यक्ष, सकल जैन समाज, बून्दी

राजेन्द्र कुमार छाबड़ा
मंत्री, श्री दिगम्बर जैन खण्डेलवाल जिला (सरावगी) समाज, बून्दी

नरेश जैन (बाकलीवाल)
अध्यक्ष, टैक्स बार एसोसिएशन, बून्दी

एड. पदम कुमार जैन
पूर्व सलाहकार मंत्री
दिगम्बर जैन खण्डेलवाल सरावगी समाज संस्थान, बून्दी

# समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

**प्रश्न 1. मेरे लड़के की उम्र 18 साल है, मगर उसकी संगति बहुत खराब हो गयी है, उपाय बताये - निशा जैन, मु. नगर, यू.पी.**

**उत्तर** - बेटे की कुंडली में शुक्र के साथ राहु की दशा चल रही है। जवान होते बच्चों के लिये बहुत खराब मानी जाती है। शुक्रवार को मिश्री दान करायें।

**प्रश्न 2. बिटिया को बोलने में दिक्कत आती है, उपाय बतायें गुरूजी - कुसुमलता, महसाना**

**उत्तर** - गले में पन्ना रत्न का लॉकेट बुधवार को धारण कराये तथा 'ऊँ'' की एक माला फेरने के लिये कहे।

**प्रश्न 3. चन्द्रमा की महादशा कुंडली के कितने समय के लिये आती है - सहर्ष जैन, दिल्ली**

**उत्तर - चन्द्रमा की महादशा 10 वर्षों के लिये आती है।**

**प्रश्न 4. कुंडली में सूर्य ग्रहण दोष कब बनता है - अविनाश जैन, कोटा, राजस्थान**

**उत्तर** - कुंडली में जब सूर्य के साथ राहु या केतु ग्रह विराजमान होता है तो सूर्य ग्रहण दोष का निर्माण होता है।

**गुरु जी से संपर्क सूत्र-**
**9990402062, 26755078**


TATA PLAY Channel No. 1086
dishtv Channel No. 1109
DEN Channel No. 266
आदिनाथ टी वी
Channel No. 1217 d2h
Channel No. 700 airtel
Channel No. 842 hathway
एवं अन्य सभी टीवी केबल पर उपलब्ध

आज का राशिफल

जैन ज्योतिषाचार्य
रवि जैन गुरूजी
द्वारा आदिनाथ चैनल पर प्रतिदिन
प्रातः 06:20 बजे
दोपहर 02:15 बजे

संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद् (पंजी.)
विवाह, मकान, ब्यापार, संतान, प्रमोशन, परीक्षा, विदेश यात्रा आदि समस्याओं का समाधान जैन आगम के अनुसार प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें :
1/6991, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली – 32
M. 011 22325069, 9990402062, 8826755078


# स्वर्गीय श्रीमती पतासी देवी वात्सल्य, करूणा, ममता की मूर्ति थीं

**- महावीर अजमेरा कोटा**

**कोटा राज.।** छोड़कर गई श्रीमती पताशी देवी टोंग्या, हम सबके साथ को सहेजकर रखेंगे हम उनकी हर एक याद को। हमने जिनको खोया वो सेवाभावी इंसान थीं, चेहरे पर एक ओज था और मधुर मुस्कान थी। श्री भागचन्द जी की धर्मपत्नी, धर्म की महाज्ञानी थीं, समाज को दी एक मिसाल, एक नेत्रदानी थीं। पुत्र देवेन्द्र जी भाई साहब और पुत्रवधु उर्मिला भाभी जी अंत क्षण तक साथ रहे, काकीजी का सदैव उन पर मंगल आशीर्वाद रहे। पुत्रियां-विमला देवी, शिमला देवी, उर्मिला, मैना आपको न भूल पायेंगे। किरण अमन, शोभित, राशि को आप सदा याद आयेंगे। हर टोंग्या परिवार के सदस्यों और जानने वालों से आपका हृदय से जुड़ाव था। मुझ महावीर से भी काकीजी का गहरा लगाव था। आप ग्लोबल भक्तामर टीम और Ivs भक्तामर हीलिंग सेण्टर से 4 वर्ष से जुडे रहे थे, भक्तामर की हीलिंग आप समाज को भी दे रहे थे। आपके जाने से दुःखी हुआ हर किसी का चित्त हैं द्रवित है हर हृदय हर नेत्र अश्रुपूरित हैं। आपके चरणों में हम बारंबार नमन् करते हैं। उच्च गति मिले आपको, ये श्रद्धा सुमन अर्पण करते हैं।

**- पारस जैन ''पार्श्वमणि'' कोटा , संवाददाता**

# कन्याकुमारी के इतिहास में प्रथम बार श्रीजी के मंदिर का निर्माण

दक्षिण के अंतिम छोर के तट पर कन्याकुमारी में पहला जिन मंदिर बनने जा रहा है जो कि सम्पूर्ण विश्व के जैन समाज के लिए बड़े गौरव की बात है। परम पूज्य की 108 वसुनन्दी जी महाराज की भारतीय अनुकम्पा से उनकी ज्येष्ठ शिष्या आर्यिका श्री 105 गुरूनन्दनी माताजी के कर कमलो से यह कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। 16 मार्च को माताजी का दीक्षा दिवस महोत्सव व पीच्छी परिवर्तन, नवीन जिनबिम्बों का मस्तकाभिषेक एवं चातुर्मास मंगल कलश वितरण था जिसमें माताजी की 2 पीच्छी श्रीमती राखी सुशील कोठारी, गजराज जी की पुष्पा जी के घर आई। उस कार्यक्रम में पाण्डिचेरी में वीतराग मण्डल के अध्यक्ष नवीन जी ठोल्या, सचिव भरत जी कोठारी व प्रेम जी कासलीवाल बस लेकर कन्याकुमारी-पाण्डिचेरी से सभी बन्धुओं को लेकर गए थे। अध्यक्ष महावीर जी मदुरई वालों ने भी बाहर से पधारने वालों की सम्पूर्ण व्यवस्था कर रखी थी। समाज की अध्यक्ष श्रीमान रिखब जी पाटोदी भी शामिल हुये थे। आप भी अपनी चंचल लक्ष्मी को यदि दान में देना चाहें तो दे सकते हैं। दान की राशी आप संजय जी ठोलिया को मो. 9443616595 और सुरेश जी जैन मो. 9443420647 को भेजकर पुण्य कमा सकते हैं।

**-श्रीमती अर्चना भरत कोठारी, पाण्डिचेरी, मो. 9677554677**

## चन्दुलालजी पाटणी चिकलठाणा

**हार्दिक श्रद्धांजलि (निधन 23 अप्रैल 1967 रविवार )**
**29 चैत्र शुक्लपक्ष, चतुर्दशी, अमृत सिद्धि योग विक्रम संवत 2024**

**हमारे परिवार के, महापुरुष एवं मराठवाडा दिगम्बर जैन समाज के, गीतकार नाटककार सुन्दर हस्ताक्षर के धनी कलगी तुराकाव्य प्रकार में वे माहिर थे। (स्व) चन्दुलालजी पाटणी के पुण्य स्मरण हेतु हार्दिक श्रद्धांजली। 23 अप्रेल 2025 (58 वीं पुण्य तिथी) पर**

**श्रद्धावनत्**

**एम. सी. जैन, पत्रकार, सौ, हेमलताजी, प्रा. डा. राजेश एम. पाटणी, डा. सेहल पाटणी दिनेश एम. पाटणी, सौ मन्जुषा पाटणी सौ, डा. नीलम, डा. प्रीती तडैया मुम्बई, डा. प्रितेष, इंजी. प्रतिक पाटणी चिकलठाणा, दिलीप धिरेंद्रकुमार पाटणी, डा. नुतनकुमार पाटणी, चिकलठाणा, प्रकाश एम. ठोळे ( कोपरगांव) कन्हैयालाल जी कासलीवाल, पुणे (बुलडाना) राजकुमार काला, नांदगांव**

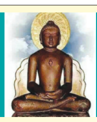

## भगवान महावीर की 10 अप्रैल, 2025 को 2624वीं जन्म जयंती पर सभी को बधाई एवं शुभकामनायें।

**-ः नमनकर्ता/शुभाकांक्षी ः-**

विनेश-प्रीति सोगानी
(संगठन एवं प्रचार मंत्री)
अनुष्ठा-आरव (पुत्र-पुत्री)
सुधीर कुमार जी-प्रविता, अनुज कुमार जी-शिप्रा (बहन-बहनोई)
परिधी, संजोली ठोलिया, तन्मय, आर्जव छाबड़ा (भांजा-भांजी)

**श्री दिगंबर जैन मंदिर वरूण पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान) मो. 9829150784**


DOLPHIN WATERPROOFING

आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।

छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction

RAJENDRA JAIN
Dr. Fixit Authorised Project Applicator
Mo. 80036-14691
116/194, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur



स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ–226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक –सुधेश कुमार जैन



**श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा**

**अध्यक्ष**
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

**कार्याध्यक्ष**
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

**महामंत्री**
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

**कोषाध्यक्ष**
पवन गोधा
मो. 9311198985

**प्रधान सम्पादक**
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

**परामर्शक सदस्य**
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड
मो. 08107581334

**सम्पादक**
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

**सह सम्पादक (मानद)**
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

**लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक**
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

**दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक**
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

**जैन गजट की सदस्यता**
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

**'जैन गजट' में विज्ञापन**
देने हेतु सम्पर्क- 7607921391, 9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

# जैन गजट को शुभाशीष

- विशुद्धरत्न श्रमण सुप्रभ सागर

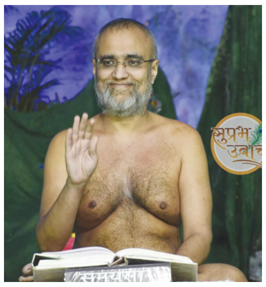

भारत देश में अनेकानेक पत्र-पत्रिकाऐं प्रकाशित होती रही हैं, उनमें से कुछ तो काल के गाल में विलीन हो गयीं पर इस श्रृंखला को शताधिक वर्षों से संवर्धित करते हुए वर्तमान तक वर्द्धमान करने वाली एक जैन पत्रिका जो साप्ताहिक रूप ले प्राप्त होता है, उसका नाम है जैन गजट। श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, लखनऊ के अध्यक्ष अध्यक्ष निर्मल कुमार सेठी जी के सद्प्रयासों से जैन गजट ने मात्र क्षेत्रीय समाज में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में एक अलग पहचान बनाई है। इस पहचान को जैन समाज के दर्पण के रूप में उल्लेखित किया जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश के मूर्धन्य मनीषियों का निर्देशन एवं सम्पादक मण्डल ही इसके सम्पादकीय को साधु, विद्वान एवं श्रेष्ठी वर्ग में बहुचर्चित बनाता है। अमृतोद्भव पावस योग-2024, लखनऊ के दौरान प्रदीप जी पाटनी के अथक प्रयास से जैन गजट कार्यालय की कार्य प्रणाली को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला और महासभा द्वारा जो पुरातत्व एवं साहित्य की सुश्रुषा देखने को मिली वह श्लांघनीय है पर कार्यालय की स्थिति, दशा देख खेद अवश्य हुआ, समाज श्रेष्ठियों को इस विषय में विचार करना होगा।

वर्षायोग स्थापना के पूर्व प. पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के सर्वश्रेष्ठ समाधि के उपलक्ष्य में लखनऊ वर्षायोग में ''जैन गजट''का एक विशेषांक पूर्व में प्रकाशित किया गया और उसी समय श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर जी के पट्टाचार्य महोत्सव का शंखनाद हुआ। सम्पादक मण्डल से विचार-विमर्श कर ''पट्टाचार्य विशेषांक'' प्रकाशित कराने का निर्णय हुआ। सम्प्रति प्रधान सम्पादक कपूर चंद पाटनी, गुवाहाटी, सम्पादक सुधेश जैन, सह-सम्पादक प्रभावना पुरूषोत्तम डा. सुनील जैन संचय, ललितपुर, राजेन्द्र जैन महावीर-सनावद, प्रदीप जी पाटनी एवं समस्त सहयोगी सदस्यों का अथक प्रयास विपुल आशीर्वाद का पात्र है, वह इसी प्रकार से जिन शासन के संवर्द्धन हेतु समय सूचकता के साथ विशेषांक निकालते हुए ऐतिहासिक घटनाक्रमों को स्वर्णिम अक्षरों में लिपिबद्ध करते रहें, उत्कर्ष समूह तथा समस्त पुण्यार्जकों को मंगल शुभाशीष।

# गुणमणि विरचित वपुषः

**- ग. आ. स्वस्तिमति माताजी (उम्र - 100) संघस्थ - तपस्वी सम्राट आ. सन्मति सागरजी महाराज् सुशिष्या**

**गुणमणिविरचित वपुषः षडद्रव्य विनिश्चितस्य धातृन् सततम्।
रहित प्रमादचर्यान दर्शन शुद्धान् गणस्य संतुष्टि-करान्।।**

प्रभु आदि तीर्थंकर से वीर पर्यन्त उनकी यशः कीर्ति को दिग्दिगांत तक ले जाने वाले विमल चारित्र के धारक आचार्य भगवंत हुए है, जिन्होंने अपने विरागमय चारित्र से आत्मा को विशुद्ध किया और अंतिम सांसों में अपने बेटे (शिष्य) को जो अत्यंत होनहार, अध्यात्म विद्यायुक्त, निति निपुण स्याद्वाद कुशल ऐसे सुयोग्य शिष्य 108 आचार्य श्री विशुद्ध- सागरजी महाराज को आचार्य पद के योग्य समझ कर बिन विरोध आचार्य बनाया। मानस पटल में वह प्रसंग अंकित हो गया है कि गणाचार्य 108 आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज ने कितनी सजगता से अपने शिष्य को चुना और मृत्यु (समाधी) के आलिंगन में भी अपने कर्तव्य को जैन धर्म की प्रभावना को नहीं भूले एवं अपने गुरु, तपस्वी सम्राट के समान ही समाधीमरण कर अपनी आत्मा का कल्याण किया उन्हीं रत्न ने आचार्य विशुद्धसागरजी महाराज को संघ की जिम्मेदारी को पट्टाचार्य के रूप में प्रदान करने की घोषणा की, उसी का साकार रूप इन्दौर मे 27 अप्रैल से 2 मई को देखने मिलेगा। मेरी तो 100 साल की उम्र है, मैं तो कार्यक्रम में नहीं आ पाउँगी लेकिन सभी भक्त परिवार यह कार्यक्रम देखेंगे, उनके आंखों से मैं यह कार्यक्रम देख लूंगी। आचार्य श्री मेरी यही भावना है कि मुझे चश्मा, कान की मशीन इन परद्रव्यों की अभी तक जरुरत नहीं पड़ी है, आगे भी ऐसा रहे, अपना-प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, पाठ, सामायिक स्वयं करती हूं, संघ को पाठ करवाती हूँ। मेरी समाधी तक मैं ऐसी ही रहूं, सावधान रहूं, आत्मा को न भूले ऐसी भावना भाते हुए - पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज आपके जीवन की सभी बाधायें मुझे आ जायें, आप रत्नत्रय के सितारे, स्याद्वाद के दुलारे बनें ऐसी सदिच्छा करते हुए त्रिकाल त्रयभक्ति पूर्वक आपके श्री चरणों में त्रिवार नमोस्तु! सभी सेवा-भावियों को अनुमोदना, पट्टाचार्य पदारोहण कार्यक्रम अच्छा हो। पुनश्च नमोस्तु।


**परम पूज्य साधना महोदधि, तपाचार्य, तपस्या के शिरोमणि, अंतर्मना 108 प्रसन्न सागर जी महाराज की पिच्छी प्राप्त करने का सौभाग्य मिला - श्रीमान् रोहित जी - दिव्या जी जैन चेन्नई प्रवासी, जयपुर/आगरा निवासी को**

रोहित जैन निवासी आगरा प्रवासी चेन्नई को इस सदी के महान् आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज की पिच्छिका प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, यह सौभाग्य तीव्र पुण्य के उदय से प्राप्त होता है। रोहित जैन व उनके परिवार का आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज के चरणों में जो भक्ति है वह निम्न पंक्ति से चरितार्थ होती है -

**हे गुरूवर, तन समर्पित, मन समर्पित, जो मिला व धन समर्पित,
श्वांस के भण्डार में से आखिरी है श्वांस समर्पित।**

तन समर्पित है, मन समर्पित है, जो मिला व धन समर्पित है। इतना ही नही मेरे शरीर में जो श्वांस का भण्डार है, उसमें आखिरी श्वांस भी आपके चरणों में समर्पित है। रत्नों से भी मंहगी मनुष्य पर्याय है। रोहित जी ने आचार्यश्री की पिच्छिका प्राप्त करके रत्नों से भी महंगी मनुष्य पर्याय को सार्थक कर दिया है।

- शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

-: पिच्छिका भेट की झलकियां :-

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com



पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.................................................................
.................................................................
.................................................................

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)


जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।